Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

5549

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# उदयन

[ ऐतिहासिक उपन्यास ]

लेखक
साहित्य-वाचस्पति ( मिश्रबंधु )
रायबहादुर डॉक्टर शुकदेवविहारी मिश्र डी० लिट्०
( ऑनरिसकाजा B. H. U. )

मिलने का पता—
गंगा-ग्रंथागार
३६, गौतमबुद्ध-मार्ग
लखनऊ

प्रथमावृत्ति

न् १९२१ ] [ मूल्य ४॥)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

क

श्रीदुलारेलाल
अध्यक्ष गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय
लखनऊ

**अन्य प्राप्ति-स्थान —**

१. राष्ट्रीय प्रकाशन-मंडल, मछुआ-टोली, पटना
२. दिल्ली-ग्रंथागार, चर्खेवालाँ, दिल्ली
३. प्रयाग-ग्रंथागार, ४०, क्रास्थवेट रोड, प्रयाग

नोट—इनके अलावा हमारी सब पुस्तकें हिंदुस्थान-भर के सब प्रधान बुकसेलरों के यहाँ मिलती हैं। जिन बुकसेलरों के यहाँ न मिलें, उनका नाम-पता हमें लिखें।

5549

मुद्रक
श्रीदुलारेलाल
अध्यक्ष गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# भूमिका

पुरु-वंशी नरेशसम्राट् उदयन कौशांबी-निवासी थे। उनका थोड़ा-बहुत कथन पुराणों में मिलता है, और विशेषतया इधर के ग्रंथों में। महामंत्री यौगंधरायण उनके प्रधान मंत्री थे, और अग्रमहिषी वासवदत्ता थीं। इन्हीं व्यक्तियों के विषय में प्रथम शताब्दी बी० सी०-वाले भास कवि के दो नाटक प्रस्तुत हैं, अर्थात् प्रतिज्ञा यौगंधरायण और स्वप्न वासवदत्ता। जैन-ग्रंथ प्रबंधकोष तथा विविध तीर्थकल्प में भी उदयन के विवरण हैं। मुख्य वर्णन इनका कथा-सरित्सागर में मिलता है। स्वयं सम्राट् हर्ष ने इन पर अपने दो नाटक-ग्रंथ प्रिय-दर्शिका तथा रत्नावली रचे। दिव्यावदान में भी इन पर कथन मिलते हैं, तथा Early History of Kaushambi (कौशांबी का प्राचीन इतिहास) में भी। कालिदास, ललित विस्तर, अभिज्ञान राजेंद्र आदि में भी उल्लेख हैं। द्वापर तथा आदिम कलिकाल तक भारत में पौरव-वंश बहुत समुज्ज्वल रहा। अतएव उसकी नामावली भी गिना देना अरुचिकर न होगा। कोष्टकों में पहले राजा से संबंध भी, जहाँ पुत्र से इतर होगा, लिख दिया जायगा। यह संबंध सब स्थानों पर निश्चित नहीं है, किंतु यथाज्ञात लिखा जाता है। पुराणों में प्रत्येक उत्तराधिकारी पहले का प्रायः पुत्र ही लिखा है, किंतु कई दशाओं में ऐतिहासिकों का मत इसके प्रतिकूल भी है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



भारत में आर्यों का आगमन दो धाराओं में हुआ। विष्णुपुराण में स्यात् इसी कारण लिखा गया हो कि ब्रह्मा ने दो वार करके सृष्टि-रचना की। पहली धारा स्वायंभुव मनु की आई, जिनके कुल मिलाकर २७ राजाओं के नाम पुराणों में लिखे हैं, और यह स्वायंभुव मन्वंतर कहलाता है। इसी वंश में उत्पन्न स्वारोचिष, उत्तम, तामस तथा रैवत मनु हुए, जिनके नामों पर मन्वंतर तो चलते हैं, किंतु इन मन्वतरों में एक-ही-एक नाम है। जब मन्वंतर चलते ही हैं, तब इन चारों मनुओं के अतिरिक्त इनमें कम-से-कम एक-एक अन्य राजा तो होगा ही। इस प्रकार २७ पहले राजाओं के अतिरिक्त ये आठ राजे और मिलकर ३५ होते हैं। अनंतर स्वायंभुव का ही वंशधर चाक्षुष मन्वंतर चला, जिसके दश राजाओं के नाम पुराणों में कथित हैं। उत्तानपाद लिखे तो स्वयं स्वायंभुव मनु के पुत्र हैं, किंतु समझ दूर के वंशधर पड़ते हैं। पुराणों में ऐसे वंशधरों को भी कहीं-कहीं पुत्र लिख दिया गया है। यही चाक्षुष मनु के पूर्व-पुरुष थे। इस प्रकार एक ही वंश के ये छ मन्वंतर भारत में पहली आर्य-धारा के हुए, जिनमें कुल मिलाकर हमें ४५ नरेश एक दूसरे के पीछे मिलते हैं। ऐतिहासिक लोग एक शताब्दी में छ ऐसे राजाओं के भोग-काल का पड़ता उचित समझते हैं। अतएव इस सत्ययुग का भोग-काल कम-से-कम ७५० वर्षों का पड़ता है। चाक्षुष मन्वंतर में ईरान में दैत्य-दानवों के युद्ध देवों से हुए, जिन्हें देवासुर-संग्राम कहते हैं। पहले तो हिरण्याक्ष, हिरण्यकशिपु तथा इसका प्रपौत्र बलि, तीनो प्रतापी होकर भी अंत में पराजित हुए, किंतु हिरण्यकशिपु के पुत्र तथा बलि के पितामह प्रह्लाद ने देवतों के सम्राट् इंद्र को हराकर स्वयं इंद्र-पद प्राप्त किया, तथा इंद्र देवतों के साथ कश्मीर के उत्तर-पश्चिम इंद्रालय में जाकर बस गए। वहाँ गुरु-पत्नी तारा का अपहरण चंद्र ने कर लिया, और परम रूपवान् बुध पुत्र प्राप्त हुआ,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



के अतिरिक्त अयोध्या, काशी, चंपा, कंपिला, मथुरा, मिथिला, राजगृह (मगध की राजधानी), रोरुक, सागल और साकेत की गणना थी। कौशांबी में एक विश्वविद्यालय भी था। कहा जाता है, महात्मा बुद्ध ने कौशांबी में कई सुत्तों की रचना की।

उधर ईरान में दारा का राजत्व-काल ५२१-४७५ बी० सी० था। इसका जल-सेनापति स्किलेक्स जल-दल लेकर सिंध पहुँचा, जिसे जीतकर उसने दारा का एक प्रांत बनाया। यहाँ से उसे एक करोड़ रजत-मुद्रा की वार्षिक आय थी। अनंतर कोई पारसिक नरेश साइरस सिंध आया, जहाँ उसे किसी भारतीय नरेश ने मारा, तथा सिंध फेर लिया। उदयन के पूर्व-पुरुष निचक्षु को हस्तिनापुर क्यों छोड़ना पड़ा, इसका कोई पुष्ट ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है। कहीं लिखा है कि वह नगर गंगा में बह गया। ऐसा होने से उससे कुछ हटकर राजधानी बनाई जाती, न कि सैकड़ों मील पर। कहीं लिखा है कि मटची के कारण वह देश छूटा। इसका अर्थ कोई टीड़ी लगाता है, कोई हिमोपल। किसी बात से पूरा पता नहीं बैठता। इतना कथित है कि पांडु-वंश निचक्षु के समय दक्षिण पांचालों तथा सृंजयों से मिलकर कौशांबी गया। इस काल उसके प्रभाव का बहुत कुछ पतन हुआ। उदयन के समय कोशल, वत्स, अवंती और मगध प्रधान राज्य थे। उपर्युक्त ऐतिहासिक तथ्यों को बढ़ाकर जो विवरण उपन्यास में आए हैं, उन्हें औपन्यासिक कल्पना समझनी चाहिए।

लखनऊ
सं० २००४

शुकदेवविहारी मिश्र

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai


## भारत-भाषा-प्रेमियों से निवेदन

यदि आप या आपके कोई इष्ट-मित्र हिंदी-सेवा करना चाहते हों, और रुपया लगाकर अपने ही ज़िले में प्रेस और पुस्तकालय स्थापित करना चाहते हों, तो हमारी 'प्रेस और पुस्तकालय-योजना' मँगाकर पूरा लाभ उठाइए। हम आपकी सब प्रकार से—तन, मन, धन से—सहायता करेंगे।

विनीत—
दुलारेलाल
संचालक गंगा-पुस्तकमाला
लखनऊ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# पार्ट-टाइम कन्वेसरों के नियम

## १०००) लगाकर २५०) महीना कमाइए !

## रिटायर्ड या बेकार व्यक्ति ध्यान दें !!

## ४०० पार्ट-टाइम कन्वेसर भारतवर्ष-भर में चाहिए !!!

भारत-भर में प्रत्येक शहर, स्टेट, नगर और क़स्बे में ऐसे बहुत-से कांग्रेस-कार्यकर्ता, साहित्य-प्रेमी, अध्यापक, आर्य-समाजी, सनातन-धर्मी तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक-दल के कार्यकर्ता और हिंदी-प्रेमी और (३० से ७० वर्ष के) सज्जन होंगे, जिनके पास अपना कार्य करते हुए भी दो-चार घंटे समय रहता है, और जिनके घर में नवयुवक बैठे कोई कार्य चाहते हैं। हमारी राय में वे अपने स्थान के लिये ख़ास-कर और आस-पास के ज़िलों के लिये साधारणतया हमारे पार्ट-टाइम-कन्वेसर (कुछ समय देनेवाले कन्वेसर) बन सकते हैं। प्रत्येक दिन दो-चार घंटे काम करके या अपने यहाँ के नवयुवक या नौकर से काम कराकर वे १७०) से २५०) कमा सकते हैं। हम हर महीने श्रेष्ठ पुस्तकों का ५०) का सेट निकाल रहे हैं। हमारी प्रत्येक बिकने-वाली पुस्तक की २०-२० प्रतियाँ, अपने हलक़े में, स्कूलों-कॉलेजों तथा छोटी-बड़ी लाइब्रेरियों में और धनी-मानी व्यक्तियों, व्यापारियों, वकीलों, डॉक्टरों तथा हिंदी-प्रेमी विद्यार्थियों के हाथ आसानी से बेच सकते हैं। इस तरह १०००) का नया निकला माल प्रतिमास उनके द्वारा खप सकता है। पुराना माल १०००) का अलग बिकेगा। पार्ट-टाइमकन्वेसर इस तरह महीने में २०००) का माल बेच लेंगे। इसके अलावा बाहरी हिंदुस्थान-भर की पुस्तकें भी वे हमसे मँगाकर १०००) की बेच सकते हैं। इस तरह कुल बिक्री ३०००) की हुई।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



यदि ३०००) की जगह १०००) का ही सेल कर लेंगे, तो २००) कमा लेंगे। १००) से लेकर १०००) आपको लगाना होगा।

[ नोट—जो पूरा टाइम लगा सकते हैं, वे १०००) से ४०००) का माल बेच सकते हैं। उनकी आमदनी ज़्यादा होगी। इस तरह के पूरा समय देनेवाले हमारे २० कन्वेसर हिंदुस्थान-भर में घूम रहे हैं। १० कन्वेसर और चाहिए। कुल ४० कन्वेसर चाहिए। इनके नियम भी आप हमसे मँगाकर कोई फ़ुल-टाइम-कन्वेसर दीजिए। ]

प्रत्येक हिंदी-प्रेमी को रिटायर्ड सज्जन को, ख़ाली नवयुवक को अपना ख़ाली वक़ साहित्य और भाषा के प्रचार में लगाकर पुण्य लूटना, साथ ही धन भी कमाना चाहिए। सेवा-भाव ( Missiorasv Spisit ) रखनेवाले ४०० सज्जन इस काम में भारत-भर में लगाए जा सकते हैं। ऐसा करने से हिंदी-साहित्य की श्री-वृद्धि सरलता और द्रुत गति से हो सकती है! आइए, हिंदी-सेवा में अपने ही स्थान पर रहकर हमारा हाथ बँटाइए। स्त्री-पुरुष दंपति इस कार्य में विशेष सफल हो सकते हैं।

पार्ट-टाइम-कन्वेर बनने के नियम पढ़कर इस योजना में योग दीजिए। नीचे-लिखे किसी स्थान पर आकर मिलिए।

( श्रीमती ) सावित्री दुलारेलाल ( एम्० ए० )

**गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय**

**३६, गौतमबुद्ध-मार्ग,**

**लखनऊ**

- प्रयाग-ग्रंथागार, ४०, कास्थवेट रोड, प्रयाग
- काशी-ग्रंथागार, मच्छोदरी-पार्क, काशी
- दिल्ली-ग्रंथागार, चर्खेवालाँ, दिल्ली
- राष्ट्रीय प्रकाशन-मंडल, मछुआ-टोली, पटना

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# प्रथम परिच्छेद

## मृगावती

प्रसिद्ध जैन तीर्थंकर महावीर तथा बौद्ध-उपदेशक गौतम बुद्ध के समय पौरव-कुल में कौशांबी-नरेश शतानीक गद्दी पर थे। उनका विवाह मैथिल लिच्छवि चेटकराज की सुंदरी कन्या मृगावती से हुआ था। पति-पत्नी में पूर्ण प्रेम था। इसी काल महावीर तीर्थंकर कौशांबी में पधारे, तथा राजा-रानी ने उनका उचित मान किया। रानी ने गर्भवती होने की दशा में दोहद-संबंधिनी आकांक्षाओं में पति से कभी कोई विशेष प्रार्थना न की। एक बार राजा ने उनसे इस विषय पर पृच्छा की, तो उन्होंने कहा कि स्त्री को पतिव्रता होना चाहिए, और अरुँधती की भाँति पति की इच्छाओं को न रोकनेवाली होना उसका परम धर्म है। पति ने यह सुनकर इसी विषय पर महर्षि वशिष्ठ का उदाहरण दिया कि पति को भी तो पत्नी के वश में होना उचित है। यदि स्त्री पतिव्रता हो, तो पुरुष को भी पत्नीव्रती होना योग्य है। बहुत कहने-सुनने पर मृगावती ने प्रकट किया कि इस विषय पर उसकी आकांक्षा बहुत ही अन-होनी तथा अयोग्य-सी थी। उसने उसे हटाने तथा दबाने का

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



बार-बार प्रयत्न किया था, किंतु वह फिर-फिरकर चित्त में आ जाया करती थी। विवश होकर रानी उस इच्छा को छोड़ न पाती थी। बहुत कुछ पूछने पर उसने कहा कि मैं रुधिर से भरे हुए कुंड में सचैल स्नान करना चाहती हूँ। यह सुनकर राजा बहुत आश्चर्यान्वित अथच दुखी भी हुआ, किंतु अपने ही बहुत कुछ हठ-पूर्वक पूछने के पीछे उस इच्छा का पूरा करना ठीक समझता रहा। अंत में सुयोग्य मंत्रियों से विचार-विनिमय करके उसने रक्त के समान गाढ़े लाल रंग से युक्त पानी एक कुंड में भरवाया, तथा एक मृग का आखेट करके उसका रुधिर भी उसी कुंड में डाल दिया। अब रानी ने उसमें सवस्त्र स्नान किया। अनंतर वह फिर यथापूर्व रहने लगी।

अपनी इस अनोखी इच्छा के पूर्ण हो जाने के अनंतर रानी को थोड़े ही दिनों में बड़ी शंका उत्पन्न हुई कि इसका ज्योतिषीय अर्थ क्या था? कौशांबी के मंत्रियों में एक वंश-परंपरागत मंत्री ब्राह्मण यौगंधरायण था, जो केवल प्रायः २५ वर्ष का होकर भी परम प्रवीण विद्वान् तथा नीति-निपुण था। रानी ने उसी से सम्मति ली, तो विदित हुआ कि मंत्री को भी बड़ा कुतूहल था ही, किंतु वह इसका पूर्ण अर्थ न लगा सका। वह राज्य के अग्रहारिक ( दानाध्यक्ष ) पद पर प्रतिष्ठित था। उसे समझ पड़ा कि रानी का भावी पुत्र बड़ा पराक्रमी तथा सुयोग्य होने को था, किंतु कोई-न-कोई अनौचित्य भी उसके

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



अद्यपर्यंत था, वैसा ही आगे भी रहेगा; आप चाहें या नहीं।

मृगावती—धन्य मंत्रिप्रवर ! राजभक्ति इसको कहते हैं। मैं शतमुख से आपके औदार्य की श्लाघा करती हूँ। अच्छा, यही हो। अब मेरी भविष्य की चिंता भी गई। आपकी माता आज से मेरी कभी पृथक् न होनेवाली प्रिय सखी होंगी, और भार्या मेरी पुत्री।

यौगंधरायण—तब यह आज्ञा हो कि श्रीमान् से प्रार्थना किस रूप में कीजाय ?

मृगावती—जान आप सब कुछ चुके ही हैं; युक्ति-पूर्वक विनती कीजिए, जिसमें उनको दुःख न हो, तथा मुझे रूक्ष वार्ता न करनी पड़े। मैं राज्य से कोई सहायता नहीं चाहती, न अपना भी धन चाहती हूँ। आप जानते हैं, दूर तक से भी प्रकाश फैलानेवाले नग की एक मुद्रिका उन्होंने मुझे दी थी। वह भी उन्हें फेर देने की प्रार्थना है। मैं भविष्य के लिये सुख-साधन की सामग्री छोड़कर धार्मिक जीवन चाहती हूँ।

यौगंधरायण—विनती तो उनसे मैं भली भाँति करूँगा, किंतु साफल्य की आशा कम है।

मृगावती—यथासाध्य मुझे रूक्ष वार्ता से बचाने में ही आप के चातुर्य की परीक्षा है।

यौगंधरायण—जो आज्ञा, किंतु स्त्री-पुरुष संबंध में ऐसी परीक्षा असंभवप्राय है।

इस प्रकार वार्तालाप करके ये दोनो पृथक् हुए, और

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



अवसर पाकर मंत्री ने राजा शतानीक से रानी की सारी वार्ता युक्ति-पूर्वक निवेदन की। राजा रानी का धन अथवा मुद्रिका फेर लेने में तो किसी प्रकार सहमत न हुआ, और उनके जाने के प्रश्न पर भी मतैक्य न हो सका। बात यों हुई—

शतानीक—आर्य ! क्या आपको निश्चय है कि रानी सारा प्राचीन प्रेम भुलाकर वन-गमन का निश्चय न छोड़ेंगी ?

यौगंधरायण—मैंने तो उन्हें अनेकानेक प्रकार से समझाया, किंतु सफलता न पाई। संभव है, देव का प्रभाव पड़ जाय; आशा तो नहीं है।

शतानीक—प्रयत्न अवश्य करूँगा। मानेंगी कैसे नहीं ?

यौगंधरायण—वह देव से सारे प्रेम-पूर्ण जीवन के पीछे ऐसी अनुचित वार्ता किसी भी प्रकार बचाना चाहती हैं।

शतानीक—तब फिर उन्हें अपना कुहठ छोड़ना चाहिए ?

यौगंधरायण—वह उसे धर्म का अंग मानती हैं, और समझ मुझे भी यही पड़ता है। मैंने पहले भी देव से इस विषय पर अनुचित प्रबंधों का कथन किया था, जिनमें से द्वितीय का निवारण केवल प्रेम के कारण समझा था। वह धर्म-भीरु ऐसी हैं कि प्रेम के कारण भी अधर्म का पालन अपने लिये आशंका मानती हैं।

शतानीक—है तो वास्तव में उनका विचार अतर्क्य, किंतु इससे प्रेम-भाव का विच्छेद होता है। मैं विशेष हठ द्वारा उन्हें विकल न करके प्रेम-पूर्ण प्रार्थना अवश्य करूँगा।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



यौगंधरायण—ऐसा तो योग्य ही है।

शतानीक—अच्छा, फिर आप निष्कारण राजसेवा क्यों छोड़ते हैं? मैंने तो कभी आपका अपमान क्या, अनादर भी नहीं किया।

यौगंधरायण—क्या मैं कहता हूँ कि कभी मुझे कोई असंतोष हुआ? राजसेवा मैं छोड़ भी कब रहा हूँ? उचित समय पर फिर सेवा में प्रस्तुत हो जाऊँगा। अभी केवल कुछ दिनों के लिये राजमहिषी तथा भावी युवराज का पालन-पोषण योग्य समझता हूँ। यदि पुत्र का उचित शिक्षण कर सकूँ, तो यह भी संभव है कि ऋषिवर की भविष्य वाणीवाली शंका का भी कार्यरूपेण निवारण हो जाय। क्या यह पूर्ण राजसेवा नहीं है?

शतानीक—है क्यों नहीं। इसका पद तो भारी-से-भारी राजभक्ति से भी ऊँचा है।

यौगंधरायण—फिर देव के यहाँ अष्टप्रधान की परिपाटी चलती है। अवस्था और अनुभव में मैं उन सातों से छोटा ही हूँ। देव को कोई कष्ट न होगा।

शतानीक—फिर राजसेवा आप छोड़ कब रहे हैं? इसे त्याग कहते ही क्यों हैं? मैं आशा करता हूँ कि आप अपना वेतन भी राज्य से बराबर लेते रहेंगे।

यौगंधरायण—ऐसी आज्ञा न हो, देव! बिना सीधी राजसेवा के वेतन मैं कैसे ले सकता हूँ? पिता-पितामहादि को

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



इस गद्दी से इतना धन मिल चुका है कि मुझे आर्थिक कष्ट स्वप्न में भी न होगा। देव इसकी चिंता छोड़ दें।

शतानीक—क्या वेतन देने में राजकोष रिक्त हो जायगा ?

यौगंधरायण—ऐसा क्यों होने लगा, किंतु बिना सेवा के वेतन लेना धर्म-विरुद्ध बात है। जब धर्म-पालनार्थ ही गृह-त्याग कर रहा हूँ, तब एक बात में उसी से प्रतिकूलता कैसे करूँ ?

शतानीक—ऐसा मंत्री मुझे कहाँ मिला जाता है ? जब आप राजमहिषी के प्रतिपालनार्थ जाना चाहते हैं, तब मैं रोक कैसे सकता हूँ, किंतु आपके जाने का मुझे शोक अवश्य होगा।

यौगंधरायण—बड़ी ही कृपा हुई, अन्नदाता !

अनंतर यौगंधरायण को बिदा करके श्रीमान् ने भाई सहस्रानीक का स्मरण किया, और वार्तालाप होने लगा। राजा ने रानी के निश्चय की सारी व्यवस्था कही, जिससे पहले तो वह आश्चर्यान्वित हुए, किंतु पीछे राजा के सुझाव पर राजमहिषी से प्रार्थना करने पर सन्नद्ध हुए। अनंतर जाकर उनसे वार्तालाप करने लगे—

सहस्रानीक—भाभीजी ! एक साधारण ऋषि की बातों में पड़कर आप क्या अनर्थ सोच रही हैं ? क्या सारे कुटुंब का प्रेम एक संदेह-मात्र की आड़ में भुलाए देती हैं ?

मृगावती—देवर राजा ! मैं प्रेम नहीं छोड़ती, वरन् प्रेम के कारण एक वंश-कुठार का साथ आप लोगों से छुड़ा रही हूँ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



सहस्रानीक—इसका क्या निश्चय है कि बालक वंश-कुठार होगा ? यही कौन जान सकता है कि पुत्र का लाभ होगा या कन्या का ?

मृगावती—निश्चय तो संसार में बहुत कम होता है। फिर भी अभी तक मैंने आर्ष वचनों का निरादर करना नहीं सीखा है। यदि कन्या हुई, तो बाहर से फिर पलट सकती हूँ।

सहस्रानीक—भाभीजी ! मैं करबद्ध प्रार्थना करता हूँ कि ऐसे अनुचित हठ से निवृत्त हो जाना न केवल बुद्धिमानी, वरन् पति-भक्ति की भी बात है। बिना पति की आज्ञा पाए स्त्री का गृह-त्याग किस धर्म में कथित है ?

मृगावती—मैं क्या कहूँ, राजा ! यदि पति कुएँ में गिरना चाहे, तो क्या पत्नी को हाथ न पकड़ना चाहिए ? पति अपने शत्रु को घर में मेरे कारण न रखने पाएगा। मैं जो करने जा रही हूँ, उसमें सारे कुटुंब का हित है। आप स्वयं विचार कर लीजिए, मैं कुटुंब-रक्षणार्थ ही अपना तथा संतान का हित-हनन करती हूँ। मेरा मंतव्य सौ में सौ अंश कुटुंब के हित का है। जो व्यक्ति अपने को भी मिटाकर इतरों के हित-साधन में प्रवृत्त हो, वह कुटुंब का द्रोही है या हितू ?

सहस्रानीक—क्या कहूँ भाभीजी ! मैं तर्क में आपको पराजित नहीं कर पाता। अब जाता हूँ। आशा है, दादाजी आपकी निर्मूल आशंकाओं का शमन कर सकेंगे।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



इस प्रकार विफल होकर वह तो चले गए, और स्वयं राजा जाकर रानी को समझाने में प्रवृत्त हुए।

शतानीक—प्राणप्रिये ! तुम्हें क्या मूर्खता सवार हो गई है कि किसी के भी समझाने-बुझाने का कोई प्रभाव नहीं पड़ता ? मान लिया कि सारे जीवन-भर अनुकरणीय आचरण रखने के पीछे तुमसे एक बार भूल हो गई, तो क्या इतने ही से मुझे और अपने को शेष जीवन-भर महाघोर दुःख-सागर में डुबोए रखना ही धर्म का मूल है ? पावक-साक्षी देकर जो कभी मेरा साथ न छोड़ने का प्रण किया था, वह क्या धर्म नहीं है ?

मृगावती—आर्यपुत्र ! मुझमें इतनी बुद्धि कहाँ कि आपके तर्कों का उचित उत्तर दे सकूँ ? भय तो भी नहीं छोड़ता कि मेरी कोख में आपका शत्रु प्रस्तुत नहीं है।

शतानीक—क्षात्र धर्म-पालन करके कौन पुरुष किसी भी स्थान पर शत्रुओं के अस्तित्व से निश्चिंत हो सकता है ? इसका कौन निश्चय है कि अपना ही पुत्र इतना घोर शत्रु हो उठेगा कि वध पर ही सन्नद्ध हो जाय ? किसी छोटी भी रिपुता से आर्ष वचन का पालन हो सकता है। फिर उन्होंने संभवनीयता-मात्र कही थी, कोई निश्चित बात नहीं। सारे जीवन-भर मेरी भलाई करती आई हो; प्रेम-दान में किसी प्रकार की न्यूनता न रही; तब फिर थोड़ी-सी आशंका-मात्र पर अपना और मेरा सारा जीवन विपद्ग्रस्त कर देना कौन-सी बुद्धि-

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



सत्ता है ? इन सारी मूर्खताओं को छोड़कर अपने पतिव्रत-धर्म का यथावत् पालन करती जाओ। वनादि में जाकर तपस्या करने की मूर्खता छोड़ो। मेरे अमोघ प्रेम का क्या यही उपकार है कि बीच नदी में डूबने के लिये छोड़ दिया जाऊँ ?

मृगावती—आर्यपुत्र ! यह क्या आज्ञा होती है ? मैं तो इस अमोघ प्रेम ही के कारण तपस्या में प्रवृत्त होना चाहती हूँ। कष्ट आपको क्या हो सकता है ? पुरुष की जाति तो सदैव स्वच्छंद है; द्वितीय विवाह कर लीजिएगा। भय के मारे मेरा हृदय प्रकंपित है। करूँ, सो क्या करूँ ? क्या यह प्रेम-पूर्ण उच्च जीवन छोड़ने में मुझे प्राणांतक-सा कष्ट न होगा ? फिर भी अपने सुख के लिये प्राणपति के भावी जीवन को संदेह में डालना क्या स्त्री के लिये योग्य है ? आप ही आज्ञा दे दीजिए।

शतानीक—आज्ञा तो दे ही रहा हूँ। मैं तुम्हें न जाने दूँगा। जो पत्नी मेरे भविष्य के लिये अपना सारा जीवन मिट्टी में मिला रही हो, उसे छोड़कर अन्य स्त्री पर अनुराग मेरे लिये तो अशक्य है। संदेह छोड़ो, मेरा हृदय चूर्ण न करो।

मृगावती—मैं न तो आर्यपुत्र से हठ कर सकती हूँ, न आज्ञा भंग करूँगी, किंतु हृदय मेरा प्रकंपित हो ही रहा है। यह काठिन्य दूर करना मेरी सामर्थ्य के बाहर है। तापस-

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



जीवन को आप कष्टकर क्यों मान रहे हैं ? स्त्री के लिये पति पर सब कुछ निछावर करना सबसे बड़ा धर्म है कि नहीं ?

शतानीक—कोई आवश्यकता हो, तो स्त्री-पुरुष दोनो को एक दूसरे पर सब कुछ न्यौछावर कर देना योग्य ही है, किंतु अनावश्यक दु:ख-सहन तथा दान सर्वतोभावेन निंद्य है। अपने चित्त को वश में लाओ। छोटी-सी बात पर उसे डावाँडोल करना कहाँ का न्याय है ? फिर यदि मान ही लिया जाय कि पुत्र मेरा घातक होगा, तो क्या तुम्हारे राजप्रासाद-त्याग से वह भावी निश्चित प्रकारेण मिट जायगी। तुम तपश्चर्या से उसे टालना चाहती हो। मैं कहता हूँ कि यहीं राजप्रासाद में विराजकर उच्च कोटि का धार्मिक जीवन अंगीकार करो। क्या वन में ही धर्म हो सकता है, घर में नहीं ? कहा ही गया है—

"मन हाथ सदा जिनके, तिनको बन ही घरु है, घर ही बनु है।"

मृगावती—अच्छा, विवश होकर आपकी आज्ञा माने लेती हूँ। यथासाध्य चंचल चित्त को स्ववश करने का भी प्रयत्न करूँगी। देखिए, कहाँ तक साफल्य होता है ?

शतानीक—( रानी को हृदय से लगाकर ) धन्य प्राणप्रिये, धन्य ! तुमसे मुझे ऐसे ही उत्तरों की आशा थी।

इस प्रकार वार्तालाप करके दंपति यथापूर्व सुख-पूर्वक रहते रहे, किंतु रानी अपनी मानसिक उद्विग्नता दूर करने में समर्थ न

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



हो सकी। उसका शरीर दिनोंदिन कृश हो चला, और चिंता की मात्रा घटने के स्थान पर बढ़ती ही गई। एक रात उसने ऐसा स्वप्न देखा कि वह रुधिर-कुंड में नहाकर जब सवस्त्रा निकली, तब बाहर एक पक्षी उसे मांस-पिंड समझकर उड़ा ले चला। बहुत विकल होकर वह चिल्ला पड़ी—"दौड़ो आर्य-पुत्र ! बचाओ।" राजा ने तुरंत जागकर उसे जगाया, और पूछा।

शतानीक—क्या है, शुभे ! तुम चिल्ला कैसे पड़ीं ?

मृगावती—मुझे स्वप्न में समझ पड़ा, आर्यपुत्र ! कि रक्त-कुंड में स्नान करने पर मुझे एक गरुड़ पक्षी चोंच में दाबकर उड़ाए लिए जाता था।

शतानीक—ईश्वर कुशल करे, कोई भय न करो ; मैं तो पास ही शयन करता हूँ। तुम्हारी प्रकृति स्वभावश: बड़ी सभय है।

[illegible]वती—न-जाने किस कुघड़ी में मेरी कामना रुधिर में [illegible] की हुई। उसी दिन से मुझे मानसिक कष्ट नहीं [illegible]

[illegible] [illegible]ाजकल तुम्हारा शरीर भी कुछ दिनों से दुर्बल होता [illegible] [illegible]चित्त की घबराहट स्ववश रक्खो। सुंदरी स्त्रियों की [illegible] : सभय होती है। फिर भी मनश्चांचल्य शांत रखना [illegible]

मृगावती—प्रयत्न [illegible] इसका मैं बहुत करती हूँ ; क्या करूँ ? धैर्य की मात्रा कमी पर है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



शतानीक—उन विषयों पर चित्त को ले जाया ही न करो।

मृगावती—प्रयत्न तो ऐसा ही करती हूँ।

अनंतर एक रात को स्वप्न की दशा में स्वयं राजा चिल्ला उठे—"दौड़ो रक्षको! हा सहस्रानीक!"

मृगावती—क्या है आर्यपुत्र! आप चिल्ला क्यों पड़े?

शतानीक—क्या कहूँ? प्रिये! स्वप्न में मैंने ऐसा देखा कि कोई देवकुमार प्यारे सहस्रानीक को अपने तीव्र नाराचों का लक्ष्य बना रहा है। वह अशक्त होकर कुछ कर नहीं पाते, और यहाँ तक शर-विद्ध हो गए हैं कि गिरा ही चाहते हैं।

मृगावती—यह तो बड़ा ही विचित्र स्वप्न है। आप तो कभी इस प्रकार व्याकुल न होते थे। यह विषय भी मेरे ही स्वप्न से संबद्ध-सा समझ पड़ता है।

शतानीक—ऐसा क्यों कहती हो? यों ही स्वप्न दिख गया। कोई बात नहीं है।

कुछ दिनों में राजा ने एक बार और स्वप्न देखा कि वही धनुर्धर देवकुमार स्वयं उन पर बाण ताने छोड़ने ही को सन्नद्ध है। राजा के मुख से इस स्वप्न का भी विवरण सुनकर रानी को बड़ी ही चिंता हुई। एक दिन मंत्री यौगंधरायण का स्मरण करके उन्होंने इस प्रकार वार्तालाप किया—

मृगावती—मंत्रिवर! जब से मैंने रक्त-स्नान की इच्छा की, तभी से मेरा चित्त शांत नहीं हो रहा है। आर्यपुत्र ने वन में तपश्चर्या के मेरे निश्चय का निराकरण करके घर ही पर विशुद्धा-

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



चरण की आज्ञा दे रक्खी है। मैं सब प्रकार से पूजनादि में दत्तचित्त भी रहती हूँ, किंतु फल नहीं निकलता। एक बार स्वयं मैंने दुःस्वप्न देखा, और दो बार आपके श्रीमान् ने। कहिए, अब क्या करणीय है? मुझे भय ऐसा लगता है कि इस राजकुटुंब का भविष्य संशयाकीर्ण हो गया है। मेरे कारण इस पर कुछ विपत्ति-सी आ रही है।

यौगंधरायण—श्रीमतीजी! अब मुझे भी ऐसा ही दिखता है कि आर्ष वचन का उल्लंघन आपके लिये कोई शुभ कार्य नहीं है।

मृगावती—तब फिर अब आपकी सम्मति क्या है? मेरे पुराने विचार पर आपका मतैक्य न हुआ। देवर राजा ने बहुत समझाया, तथा स्वयं आर्यपुत्र की दृढ़ आज्ञा उसके प्रतिकूल हुई। अब जाकर आप अपने प्राचीन विचार छोड़ते-से हैं।

यौगंधरायण—यही बात है, देवीजी! अब तो मैं समझता हूँ कि हम दोनो को स्वयं महर्षि जमदग्नि की शरण जाना चाहिए।

मृगावती—समझ तो मुझे भी ऐसा ही पड़ता है। जब देवर राजा तथा स्वयं देव पर स्वप्नों में प्रहार होने लगे, सो भी एक ही देवकुमार द्वारा, तब दशा शोचनीय हो रही है। इसकी कोई युक्ति सोचनी चाहिए।

यौगंधरायण—युक्ति तो सुगम है। श्रीमान् पूछने पर आज्ञा देंगे नहीं। इन दिनों दो सप्ताहों के लिये वह मृगयार्थ जानेवाले

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



हैं। उसी समय मैं अपने कुटुंब तथा आपको लेकर ऋषिवर के आश्रम को चला चलूँ, और फिर पलटकर विना स्थान बतलाए अपने बारे में उन्हें सूचना-भर दे दूँ।

मृगावती—क्या वह मेरा स्थान जानने के लिये आपसे हठ न करेंगे?

यौगंधरायण—ऐसा नहीं वह किया करते, विशेषतया जब उचित कारण निवेदित हो जायँ।

मृगावती—तब फिर यही हो।

यौगंधरायण—समझ लीजिए, देवीजी! बात बहुत बड़ी है। पीछे चित्त में उद्विग्नतादि का संचार तो न होगा?

मृगावती—ऐसी चिंता न कीजिए, मंत्रिवर!

इस प्रकार मंत्र दृढ़ करके, राजा के मृगयार्थ जाने पर, मंत्री यौगंधरायण रानी को मायके ले जाने के व्याज से एक ही परमप्रिय सखी के साथ उनको बाहर ले गए, और एक रम्य वन को देखकर उन्होंने कुछ दिन वहीं रहने का व्याज प्रकट किया। रानी की यह इच्छा प्रकट हुई कि उसी वन के देवालय में केवल मंत्री की माता, पत्नी और अपनी सखी के साथ अकेले रहकर वह पूजन-कार्य में एक मास-पर्यंत संलग्न रहना चाहती हैं। उनकी तथा मंत्री की आज्ञा से विवश होकर सारे लोग राजधानी लौट गए। एक भी कौशांबी का सेवक साथ न रक्खा गया। दस वहीं के रक्षक बुलाए जा चुके थे। अनंतर ये लोग दो-चार दिन वहीं रहकर कुछ दूर से वहीं के दस-पाँच

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



सेवक तथा दो रथ लेकर कुछ आगे गए। अनंतर वहाँ दूसरे रक्षक, सेवक और वाहन लिए गए। इस प्रकार दो-तीन स्थानों पर संगी बदलते हुए यह मंडली महर्षि जमदग्नि के आश्रम पर उपस्थित हुई। मंत्री ने ऋषिवर से सारा विवरण निवेदित करके रानीजी के तथा अपने सकुटुंब आश्रम में ही रहने की आज्ञा माँगी। उन्होंने रानी के गुप्त निवास तथा तपश्चर्या के विचारों को उचित समझकर वहीं इन लोगों को स्थान दिया। ऋषिवर की भी आज्ञा लेकर यह किसी पर भी प्रकट न किया गया कि ये लोग कौन थे? वहाँ इनके तपस्वी-मात्र होने की बात विदित हुई।

---

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# द्वितीय परिच्छेद

## शिक्षा

दो-चार दिन इस प्रकार आश्रम में रहकर और अपने कुटुंब तथा सखी को रानी के पास छोड़कर उनकी तथा ऋषिवर की आज्ञा लेकर यौगंधरायण कौशांबी लौट गए। वहाँ राजा शतानीक मृगया से वापस आ चुके थे, और रानी के एकाएकी पितृगृह चले जाने की बात सुनकर कुछ चिंतित भी थे कि बिना कुछ कहे-सुने वह चली कैसे गईं, तथा बीच ही में सेवकों को छोड़कर केवल मंत्री के कुटुंब के साथ अकेली कैसे रह गईं ? उनको रानी के वन-गमन का संदेह हो गया। शीघ्रगामी साँडिनी-सवार ससुराल भेजे गए, जिनके पलटने के पूर्व मंत्री यौगंधरायण स्वयं राजसेवा में उपस्थित हो गए। राजा ने एकांत में उनसे अति शीघ्र वार्तालाप किया—

शतानीक—कहिए आर्य ! रानीजी का क्या ब्योरा है ? क्या वह वन चली ही गईं ? एकाएकी उनका मायके जाना विचार में नहीं आता, न वहाँ से कोई समाचार ही आए।

यौगंधरायण—मायके जाने की बात तो, देव ! केवल वास्त-

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



विक विचारों के गोपनार्थ कही गई थी; वास्तव में वह अपनी घोर उद्विग्नता के शमन करने में नितांत असमर्थ रहीं, तथा देव ने भी दो वार दुःस्वप्न देखे। यदि ऐसी दशा में यहीं विराजतीं, तो उनके जीवन में भी संदेह था। एक गुर्विणी स्त्री को अपनी मंगल-कामना के अतिरिक्त संतान की कुशल पर भी ध्यान देना पड़ता है।

शतानीक—तब वह गईं कहाँ? कुछ तो मुझे बतलाना था।

यौगंधरायण—वह आपकी आज्ञाओं का उल्लंघन कर नहीं सकती थीं, और यहाँ रहने से राजपरिवार, संतान तथा स्वयं अपना भी कल्याण नहीं समझती थीं। ऐसी दशा में सिवा गुप्त रूप से जाने के और करतीं ही क्या? उनकी तपश्चर्या से संतान के भी उच्चाशय-पूर्ण होने की आशा है, जिससे राजकुटुंब का भी मंगल समझा जा सकता है।

शतानीक—माना कि यहाँ अब वह सुखी नहीं रह पाती थीं, फिर भी गईं कहाँ? इतना तो मुझसे पूछ ही लेना था, अथवा बतलाना तो था ही।

यौगंधरायण—बतलाने से देव उनसे संसर्ग कभी न छोड़ सकते, और न तो उनकी चिंताओं का शमन होता, न तपस्या में पूर्णता आती।

शतानीक—आपको तो आर्य! ज्ञात होगा ही कि वह कहाँ हैं?

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



यौगंधरायण—ऐसा तो है ही। मैं ही तो उन्हें ले गया हूँ। उनकी प्रिय सखी, मेरी वृद्धा माता तथा पत्नी उनकी सेवा में अब भी वर्तमान हैं।

शतानीक—स्वयं आप तो संभवतः यहीं रहें।

यौगंधरायण—ऐसा कैसे हो सकता है, देव! मैं तो इस विषय में पहले ही बिनती कर चुका हूँ।

शतानीक—तो क्या न केवल स्त्री, वरन् प्रिय मंत्री भी मैंने खो दिया है?

यौगंधरायण—खोया कुछ भी नहीं है, समय पर दोनो देव को फिर से प्राप्त हो जायँगे।

शतानीक—मैं वचन-बद्ध होता हूँ कि उनसे बिना उनकी इच्छा के कोई संबंध न रक्खूँगा। आप कम-से-कम उनका निवास-स्थान तो मुझे बतला दीजिए।

यौगंधरायण—इस विषय में, देव! उन्होंने मुझे शपथ दिला रक्खी है। मैं अब देव का सेवक न होकर उनका हूँ। स्वयं श्रीमान् शपथ भंग करने पर अपने ही मंत्री को बाध्य न करेंगे, ऐसी दृढ़ आशा है।

शतानीक—आर्य! आप मुझे परम कठोर दुःख दे रहे हैं।

यौगंधरायण—यह मैं भली भाँति जानता हूँ, किंतु परिस्थिति से विवश हो रहा हूँ। इस विषय में अब उन्हीं से मेरा मतैक्य भी हो चुका है, वरन् स्वयं मैंने सारी परिस्थिति पर विचार करके उन्हें ऐसा करने का मंत्र भी दिया है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



शतानीक—क्या राजभक्ति के अतिरिक्त आपको मुझ पर दया भी न लगी ?

यौगंधरायण—राजभक्ति के ही कारण मैंने स्वयं देव के हित-साधनार्थ ऐसा किया है।

शतानीक—यह तो मैं भली भाँति समझता हूँ। आपने विवश होकर हम दोनो को तथा स्वयं अपने को भी कठोर कष्ट दिया है। फिर भी यदि पता बतला सकते, तो मैं बहुत प्रसन्न होता।

यौगंधरायण—देव को अब द्वितीय विवाह करने का मैं मंत्र दूँगा।

शतानीक—प्राणप्रिया के जीवन-काल में मैं ऐसा कदापि न करूँगा, विशेषतया इस कारण से कि उस प्रेम-पुतली ने अपना सारा जीवन मेरे ही हितार्थ सत्यानास कर दिया है। द्वितीय विवाह की बात ही न चलाइए, मंत्रिवर ! यदि किसी प्रकार उनका कोई पता मुझे मिल जाता, तो मेरी चिंताओं का कुछ-न-कुछ शमन हो ही जाता। राम-सीतावाली बात है, कुछ उलटे रूप में।

यौगंधरायण—है तो अवश्य, किंतु ऐसी दशा में श्रीमान् का वह हित-साधन न होता, जिसके लिये उन्होंने तथा इस अनुचर ने भी अपना सब कुछ स्वाहा किया है।

शतानीक—तो कब तक आपकी इच्छा वहाँ पलटने की है ?

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



यौगंधरायण—उनके सुपास का मैं पूर्ण प्रबंध कर आया हूँ, तथापि मेरी उपस्थिति से कम-से-कम साल-दो साल उन्हें ढाढ़स बहुत रहेगा। मैं आज ही चला जाऊँगा, और दीर्घ काल-पर्यंत यहाँ से कोई संबंध न रक्खूँगा। उचित समय पर सेवा में पुनः उपस्थित हो जाऊँगा। जब तक न आऊँ, तब तक देव को समझना चाहिए कि पुत्र-जन्म हुआ, और वह तथा रानीजी कुशल-मंगल से हैं।

शतानीक—बातें तो तुम्हारी उचित हैं, आर्य! किंतु ऐसी दृढ़ प्रतिज्ञा हृदय-विदारिणी-सी लगती है।

यौगंधरायण—ऐसी आज्ञा न हो, देव! मैं वहाँ से भी यथासाध्य कौशांबी का भी हित-साधन करता रहूँगा।

इस प्रकार वार्तालाप के पश्चात् भक्ति-भाव से राजा की प्रदक्षिणा करके मंत्री यौगंधरायण आशीर्वाद देकर कौशांबी से वनार्थ प्रस्थित हो गए। आश्रम में इन्होंने रानी का नाम जाह्नवी रक्खा था, और अपना बृहस्पति। इनको शीघ्र पलटा हुआ देखकर रानी परम प्रसन्न हुईं, तथा राजा से वार्तालाप का विवरण सुनकर उन्हें और भी हर्ष प्राप्त हुआ। अनंतर ऋषिवर से भी परामर्श करके इन लोगों ने अपना सबका परिचय गोप्य रखने के विचार से रानी को श्रीमती, रानी, देवी आदि कहकर संबोधित करना छोड़कर उन्हीं के इच्छानुसार सपत्नीक यौगंधरायण उन्हें भाभीजी कहकर पुकारने लगे। यही संबोधन सखियों ने भी स्वीकारा, तथा माताजी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



इन्हें पुत्री, बेटी आदि कहने लगीं। रानी यौगंधरायण को देवर राजा कहने लगीं, तथा माता को माताजी। यही विधि यहाँ पहले से भी चल रही थी। आश्रम में रानी के लिये दो सखियाँ और वहीं की मँगा ली गईं, जो इस मंडली के विषय में कुछ भी न जानती थीं कि ये कौन हैं? समुचित संख्या में और भी स्थानीय सेवक, रक्षक आदि नियत कर लिए गए, तथा कार-बार ठीक प्रकार से सानंद चलने लगा। रानी अपनी अवस्था के अनुसार तपश्चर्या में भी लीन हुईं। यौगंधरायण भी न्यूनाधिक योग-साधन में प्रवृत्त हुए। एक बार जमदग्नि ऋषि ने इनसे यों वार्तालाप किया—

जमदग्नि—बृहस्पति महोदय! आशा है, आप यहाँ सकुटुंब प्रसन्न रहते होंगे, और किसी प्रकार का कष्ट आप लोगों तथा आपकी भाभीजी को न होता होगा।

बृहस्पति—ऋषिवर! आपकी कृपा से हम सब लोग बहुत प्रसन्न हैं। किसी प्रकार की कोई कुछ भी असुविधा नहीं है। इतना तो भी पूछना है कि भाभीजी के विषय में जो घोर भविष्य-भाषण आपका हुआ था, उसका कुत्सित रूप उनकी इस तपश्चर्या से टल जायगा या नहीं?

जमदग्नि—पुत्रवर! भविष्य का विषय मनुष्य के हाथ में नहीं है। वह मेरा कोई शाप तो था नहीं, जिसका मोचन मैं कर दूँ। वह तो सारी दशाओं को देखकर मेरा विचार-मात्र

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



था। फिर भी समझ ऐसा पड़ता है कि सुकर्मों से संकट-मोचन संभव है। एक बात आ.से भी पूछनी है।

बृहस्पति—आज्ञा हो जाय, गुरुवर ! किसी संकोच की आवश्यकता नहीं है।

जमदग्नि—तुमको, बेटाजी ! यहाँ समय है। कोई काम तो है नहीं। यदि इसी संस्था में थोड़ा अध्यापन का कार्य कर दिया करो, ता कैसा ? यदि ग्लानि हो, तो अवैतनिक हो सकता है।

बृहस्पति—मुझे स्वयं समय काटना दूभर हो रहा है; बहुत ठीक आज्ञा होती है। यदि उचित समझा जाय, तो कल ही से यह कार्य प्रारंभ कर दूँ। एक प्रार्थना भी है कि यदि आज्ञा हो, तो मैं भी यहाँ उच्च श्रेणी की राजनीति तथा वाको वाक्य का कुछ पाठ भी पढ़ा करूँ। शिक्षण मेरे द्वारा अवैतनिक होगा ही।

जमदग्नि—तुम्हारी दोनो इच्छाएँ बहुत ही योग्य तथा करणीय हैं। कल ही से प्रारंभ कर दो।

"जो आज्ञा" कहकर और प्रणाम करके बृहस्पति महोदय अपने आश्रम चले गए, और अध्ययन तथा अध्यापन के भी कार्य होने लगे। उस संस्था में प्रायः दस सहस्र विद्यार्थी पढ़ते थे। इसी से महर्षि जमदग्नि कुलपति कहलाते थे। वहाँ उस काल कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद, ज्योतिष, षडंग और चारों वेद पढ़ाए जाते थे। इनके अतिरिक्त वैशेषिक, न्याय, सांख्य, पूर्वमीमांसा, धर्म-शास्त्र, अर्थ-शास्त्र, युद्ध-शास्त्र,इतिहास, प्राकृत

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



पुराण, बार्हस्पत्य, निगम, वाकोवाक्य आदि की भी शिक्षा होती थी। ब्रह्म विद्या का भी प्रचार था। पठन समाप्त करने पर विद्यार्थियों का समावर्तन-संस्कार होता था। इनके अतिरिक्त विविध शस्त्रास्त्रों के प्रहार, प्रयोगादि के साथ समर-पांडित्य अथच ललित कलाओं एवं वैद्यक-शास्त्र का भी प्रचार था।

यौगंधरायण ने पढ़ने-पढ़ाने में भी इतना मन लगाया कि रानी को एक बार कहना ही पड़ा कि इनका परिश्रम कुछ आधिक्य की ओर चला गया था। उत्तर यही मिला कि आलस्य की गणना तो पापों में है। इनका ऐसा श्रम देखकर रानी ने भी धार्मिक क्रियाओं में विशेषता की। कुछ दिनों में ऐसा साधारण जीवन व्यतीत करते हुए अपने प्राथमिक विभव से उसकी तुलना करके रानी को यह बहुत फीका लगने लगा। अपने ही निश्चयानुसार इसमें प्रवृत्त होने के कारण उन्होंने ऐसे विचारों को बहुत पोच समझकर मन-ही-मन अपना बहुत तिरस्कार किया, किंतु तो भी चित्त उद्विग्नता-हीन हो न सका। बहुत कष्ट उठाकर और प्रयत्न करके भी रानी जब अपना चित्त चंचल-हीन कर न सकीं, तब एक बार यौगंधरायण से इस प्रकार वार्तालाप होने लगा—

भाभी—देवर राजा! क्या अब सारे जीवन-भर ऐसा ही शुष्क तथा नीरस काल व्यतीत करना पड़ेगा? यह जीवन तो मूर्तिमान् फीकेपन का रूप हो रहा है। अब किया क्या जाय?

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



बृहस्पति—भाभीजी ! कहना तो आपका बावन तोले पाव रत्ती उचित है. किंतु कोई उपाय ध्यान में नहीं आता। ऐसे ही विचारों के कारण तो मैं आगा-पीछा करता था। यदि इच्छा हो, तो कौशांबी जाकर राजाज्ञा द्वारा कुछ विभव-वर्द्धन का प्रयत्न करूँ, अथवा आपके मायके से कुछ संबंध स्थापित किया जाय। जैसी इच्छा हो, वही काम हो।

भाभी—इन बातों से तो यहाँ के गुप्त निवास का भेद खुल जायगा। इन्हीं विचारों से तो यहाँ साधारण जीवन का प्रबंध किया गया है, नहीं तो अपने ही पास जो संपदा है, वही विभवार्थ क्या कम है ?

बृहस्पति—तब फिर यौगिक अभ्यासों से मनश्चांचल्य दूर कीजिए।

भाभी—ऐसा करने का तो पूरा प्रयत्न कर रही हूँ, किंतु साफल्य नहीं प्राप्त हो रहा है।

बृहस्पति—काठिन्य तो इस विषय में है ही, तथापि अभ्यास और वैराग्य से साफल्य संभव है।

भाभी—क्या कहूँ, देवर राजा ! 'गुड़-भरा हँसिया न लीलते बने, न उगलते।' उधर कुटुंब-संरक्षण का भाव छोड़ते नहीं बनता, जो बात गुप्त आवास ही से संभव है, और इधर जीवन का फीकापन असह्य हो रहा है।

बृहस्पति—आजन्म राज-सुख भोगने के पीछे एकाएकी ऐसी दशा क्योंकर सह्य हो ! बात तो उचित ही है, किंतु दशा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



का परिवर्तन स्वाधीन है नहीं। तपश्चर्या में मन अधिक लगाने का प्रयत्न कीजिए, भाभीजी!

भाभी—सो तो कर ही रही हूँ, बेटा! क्या कहूँ, कुछ कहा नहीं जाता।

बृहस्पति—भाभीजी! स्त्रियों का चित्त जितना संतानों में लगता है, उतना किसी अन्य विषय में नहीं। दो-तीन महीनों में जब पुत्र-लाभ होगा, तब प्रयत्न करने से न्यूनाधिक प्रसन्न रहने लगिएगा, ऐसी आशा है।

भाभी—हो सकता है, देवर राजा! अभी तो प्रसन्नता दूर दिख रही है।

बृहस्पति—देखिए, भाभीजी! मैं अब भी प्रसन्न हूँ। ऐसा ही प्रयत्न आप भी करें।

भाभी—यथासाध्य करूँगी। तुम पूर्ण पंडित और चित्त को स्ववश रखनेवाले हो। तुम्हारी नहीं कहती।

बृहस्पति—ऐसा कुछ भी नहीं है, भाभीजी!

अनंतर रानी ने भी अपना डावाँडोल चित्त स्ववश करने का भरसक प्रयत्न किया। कुछ ही महीनों के पीछे उनको परम सुंदर पुत्र-रत्न का लाभ हुआ। देखने में वह गौर वर्ण-युक्त, सबल संतान समझ पड़ा। महर्षि जमदग्नि ने उसके शरीर का भली भाँति निरीक्षण करके महापुरुषों के उसमें कितने ही लक्षण तथा अनुव्यंजन पाए। हस्त, पाद, उँगलियों आदि की रेखाओं पर भी पूर्ण विचार करके गुरुवर ने रानी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



को आश्वासित किया कि उनका सुपुत्र बड़ा ही कीर्तिमान् महापुरुष तथा सबल योद्धा होगा, तथा उसमें कोई कथनीय दोष नहीं है। उन्होंने यह भी कहा कि रानी की तपश्चर्या पूर्णतया सफल समझी जाने के योग्य है। इन बातों से रानी तथा यौगंधरायण सकुटुंब बहुत प्रसन्न हुए। रानी का प्राचीन खेद भी इस हर्ष से लुप्तप्राय हो गया।

बालक का पालन-पोषण वैद्यकीय नियमों के अनुसार पूर्ण निरालस-भाव से होने लगा। नामकरण के दिन महर्षि द्वारा उसका नाम प्रभातोदय के कारण उदयन रक्खा गया। उसकी बुद्धि समय के साथ बहुत अच्छी बढ़ती रही। पुत्र-जन्म के एक वर्ष में ही रानी की कौशांबीवाली सखी स्वर्गवासिनी हो गई। समय के साथ बृहस्पति महोदय की विद्वत्ता तथा नीति-निपुणता की ख्याति मगध में भी फैली, और वहाँ के महाराजा अजातशत्रु ने महामंत्री को भेजकर अपने यहाँ का पर-राष्ट्र-सचिव बनाने को इन्हें निमंत्रित किया। इन्होंने जाना पसंद न किया, क्योंकि यह बालक उदयन के पालन-पोषण-वाला अपना भार सबसे विशेष समझते थे, तथा अध्यापन-कार्य में भी पूर्णतया दत्तचित्त थे। तो भी जब मागध महा-मंत्री ने मृगावती से भी इस विषय पर वार्तालाप किया, तब उनका चित्त कुछ-कुछ इस ओर झुका। बातें इस प्रकार हुईं—

भाभी—देवर राजा! प्रायः तीन वर्षों से तुम यहाँ घोर परिश्रम कर रहे हो, तथा मेरे अथच शेष कुटुंब के पालन-

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



पोषण में भी कोई असुविधा अथवा त्रुटि नहीं हुई है। अब यदि एक बृहत् राज्य का भी अनुभव प्राप्त कर लो, तो क्या हानि है ?

बृहस्पति—भाभीजी ! राज्यों का अनुभव तो न्यूनाधिक प्राप्त हो ही सकता है, किंतु अपना धर्म-पालन सबसे बढ़ा हुआ काम है।

महामंत्री—सारे गृहस्थ राज-काज करते हुए भी उचित प्रकारेण कौटुंबिक धर्मों का पालन करते ही रहते हैं। मगधपति द्वारा अर्पित महापद की स्वीकृति में कौन-सा धर्म-ध्वंसन हो रहा है ? ऐसे-ऐसे मंत्रिपद बाहरवालों को मिलते ही कब हैं ? वह तो कहिए कि आपकी बढ़ी हुई ख्याति पर हमारे मगधेश मोहित हो गए हैं, तथा दैव-वश इसी समय प्राचीन मंत्री के स्वर्गासीन हो जाने से यह भारी पद रिक्त भी हो गया है। आपको बृहस्पति महोदय ! कोई चिंता न करनी चाहिए। स्वयं मैं वहाँ महामंत्री हूँ। मेरा-आपका व्यवहार बहुत श्रेष्ठ चलेगा, ऐसी आशा मुझे चार-पाँच दिन आपके उच्चाचरण देखकर हो रही है। बालक उदयन का पालन-पोषण वहाँ के उत्कृष्ट तथा परम प्रवीण वैद्यों के निरीक्षण में और भी अच्छा होगा। आपके कुटुंब में और कौन ऐसा बैठा है, जिसके लिये विशेष चिंता हो।

बृहस्पति—आपको आर्य ! मेरी परिस्थिति का पूरा ज्ञान दो-चार दिनों में कैसे हो सकता था ? इसीलिये आप

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



ऐसा सोचते हैं। मैं भाभीजी के सुपुत्र को अपने पुत्र से भी बढ़कर चाहता हूँ तथा इनका मान माता के समान करता हूँ। इन दोनो को मैं यहाँ से हटा नहीं सकता, क्योंकि महर्षि जमदग्नि की देख-रेख में इनके लिये अनिवार्य समझता हूँ। उन्हीं के निरीक्षण में बालक उदयन का पालन-पोषण तथा शिक्षण आवश्यक है। अतएव इन दोनो का मगध जाना असंभव है। इधर मैं इन्हें छोड़कर कहीं हट नहीं सकता। मेरे बंधुवर का मुझ पर इतना विश्वास है कि वह अपना कुटुंब मेरे निरीक्षण में छोड़कर पूर्णतया निश्चिंत हैं। ऐसी दशा में मेरा बाहर जाना कैसे संभव है?

महामंत्री—मैं तो समझता हूँ कि महर्षि के निरीक्षण में आपकी माता तथा भाभी सुख-पूर्वक रह सकती हैं। आप केवल गृहिणी के साथ मगध में विराजें, तथा यदि आवश्यक समझें, तो यहाँ के लिये रक्षकों की संख्या बढ़ा भी दें। इसका भार मागध-राज्य ले सकता है।

भाभी—देवर राजा! मेरा बालक अब ढाई वर्ष से कुछ ऊपर का हो चुका है, और सुख-पूर्वक खेलता है। हम लोगों को कोई कष्ट न होगा। तुम निश्चिंतता-पूर्वक जा सकते हो। हमारी सुधि वहाँ से भी लेते रहना।

महामंत्री—धन्यवाद, पूज्य भाभीजी! (बृहस्पति से) अब इनकी ऐसी उदार सम्मति पाकर मैं समझता हूँ कि आप भी निश्चिंत हो जायँगे।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



बृहस्पति—आपकी कृपाओं का आर्य! मैं शतमुख से धन्यवाद देता हूँ, किंतु विना भाभीजी और बालक उदयन को आँखों देखे मैं निश्चिंत नहीं हो सकता। इस कठिनता का कोई प्रतिकार मुझे नहीं दिखता।

महामंत्री—क्या ऐसा संभव है कि आप हमारे यहाँ चलें अवश्य, किंतु प्रतिवर्ष दो मास के लिये यहाँ चले आया करें?

बृहस्पति—दो से मेरा संतोष न होगा। जब भाभीजी भी आज्ञा दे रही हैं, तो मैं विनती करूँगा कि किसी वर्ष तीन और कभी चार मास के लिये आप मुझे यहाँ आने का अवकाश क्या दे सकेंगे?

महामंत्री—स्वयं मुझे मगधेश ने इसीलिये भेजा है कि आपको समझा-बुझाकर ले अवश्य चलूँ। उन्होंने आपकी जैसी कीर्ति सुनी है, उससे वह आपको चाहते निश्चय-पूर्वक हैं। मैं सहर्ष स्वीकार करता हूँ कि इतना भी अवकाश आपको मिल जाया करेगा। आपकी अनुपस्थिति में आपका उपमंत्री मेरी भी मंत्रणा से काम चलाया करेगा।

बृहस्पति—धन्यवाद! (भाभीजी से) तो भाभीजी! आप पूर्ण विचार कर लीजिए। यदि थोड़ा भी भय या चिंता हो, तो मैं यहीं रहूँ। यदि पूर्ण निश्चय के साथ विना दबाव के सहर्ष आज्ञा देती हों, तो कुछ काल को चला जाऊँ।

भाभी—हाँ, मैं प्रसन्नता-पूर्वक सम्मति देती हूँ। मुझे कोई

डा. डिल्ली रमण रेग्मी
कल्याणी रेग्मी स्मारक
पुस्तकालय.
5549

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



चिंता न होगी। इतना तो भी कहे देती हूँ कि जब मेरी इच्छा हो, तब वहाँ की सेवा छोड़कर आ जाइएगा।

बृहस्पति—मुझे तो स्वीकार है ही, किंतु इस प्रश्न का निश्चित उत्तर महामंत्री महोदय दे सकते हैं।

महामंत्री—मुझे यह भी स्वीकार है। वहाँ से कोई आपत्ति न होगी, किंतु भाभीजी स्वयं न बुलाएँगी।

भाभी—अब चले जाइए, देवर राजा! इसमें मुझे तथा माताजी को भी हर्ष होगा।

बृहस्पति—तब फिर आर्य! चलिए; कुछ दिन आपकी भी सेवा कर लूँ। आपकी सहनशीलता तथा उदारता शतमुख से श्लाघ्य हैं।

इस प्रकार वार्तालाप के पीछे महामंत्री-सहित महर्षि की सेवा में भी उपस्थित होकर बृहस्पति ने उनसे भी मंत्र एवं आज्ञा माँगी, और उन्होंने भी सहर्ष "हाँ" कह दिया। अनंतर कुटुंब के रक्षण का उचित प्रबंध करके बृहस्पति अपनी भार्या के साथ मगध चले गए। प्रतिवर्ष तीन-चार मासों के लिये यहाँ भी आ-आकर रहते तथा प्रबंधों एवं उन्नतियों की पूर्णता का निरीक्षण कर लिया करते थे। इधर बालक उदयन द्वितीया के चंद्र-समान दिनोंदिन बढ़ रहा था, और उसके पराक्रम, सौंदर्य तथा विद्या-प्रेम का विकास होता जाता था। बृहस्पति महोदय जब-जब आते थे, तब उदयन को गोद में ले-लेकर घड़ियों तक सस्नेह खेलाया करते थे। इनके लेटने पर बालक

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



छाती पर बैठकर दोनों हाथों से मूछें पकड़ा करता, और यह हँसते रहते थे। भाभीजी के डाटने पर वह कठिनता से ऐसे कार्यों से निवृत्त होता था। इनकी सघन एवं बड़ी मुच्छ उसे बहुत अच्छी लगती थी। मिटाई, फल आदि उसे खिलाया करते थे, तथा उसके खेलने को भाँति-भाँति के खिलौने मगध से भी लाते थे, जिससे वह इनसे बहुत प्रसन्न रहता था। तपोवन में पाले हुए मृग-शावक तपस्वियों के हाथों तक से नीवार छीन लेते थे। पर्ण-कुटियों के द्वारों को रोककर खड़े हो जाते तथा फलादि लेकर ही मानते थे। विद्यार्थिगण नित्य भिक्षा लाते तथा समिधों आदि का भी प्रबंध करते थे। तपोवन होम-हुताशन-धूम से भी परिपूर्ण रहता था। होनेवाले प्रातःकाल का पहले ही से ज्ञान विद्यार्थियों के उच्च स्वर से वेद-पाठ से लोगों को हो जाया करता था। बृहस्पति महोदय उदयन को यत्र-तत्र जाने से रोका करते थे, किंतु बाल-सुलभ चांचल्य से वह जहाँ-तहाँ भाग भी जाया करता था, जिससे इनको तथा माता को कभी-कभी भारी चिंता भी होने लगती थी। यौगंधरायण उसे रामायण, महाभारतादि की कथाएँ भी सुनाया करते थे। प्रथम भारत में कोलों, द्राविड़ों तथा आर्यों की सभ्यताओं, धर्मों एवं अन्य सामाजिक उन्नतियों के हाल बतलाया करते थे। चंद्र-वंश, विशेषतया पुरुवंश की कथाएँ प्रायः सुनाते थे। सूर्य-वंश का भी कथन यदा-कदा करते थे। वेदर्षियों तथा अन्य ऋषि-मुनियों

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



के द्वारा भारतीय सभ्यता की उन्नति के हाल बतलाते थे। समय पर, सात वर्ष की अवस्था से, उसे विद्याध्ययन कराया जाने लगा, और उसने शीघ्रता-पूर्वक योग्यता संपादन कर ली। जब बालक प्रायः दस वर्ष का हुआ, तब एक बार मंत्री यौगंधरायण से यों वार्तालाप होने लगा—

उदयन—काकाजी! आप कहीं चले क्यों जाते हैं? यहीं क्यों नहीं रहते?

बृहस्पति—बेटाजी! मैं तो तुम्हारे लिये यहीं रहना चाहता था ही, तथा रहूँगा भी साथ ही। कुछ दिनों के लिये भाभीजी ने बाहर भेज दिया है। तो भी तुम्हारे रक्षण, शिक्षण आदि का प्रबंध करता ही हूँ।

उदयन—मैं आपको यहीं देखना चाहता हूँ। जब आप आ जाते हैं, तब जी और भी लगता है। क्या बाहर जाना आवश्यक है?

बृहस्पति—आवश्यक तो, बेटाजी! कुछ होता नहीं, किंतु वहाँ भी तुम्हारा ही काम करता हूँ। जैसे तुम यहाँ विद्या पढ़ते हो, वैसे मैं भी वहाँ काम-काजू बुद्धि बढ़ा रहा हूँ। जब इधर तुम पढ़ चुकोगे, तब उधर मेरी भी योग्यता बढ़ जायगी, जिससे तुम्हारा ही काम अच्छा होगा।

उदयन—यह कोई बात नहीं है, काकाजी! आप तो पूरे पंडित हैं। मेरे समान विद्यार्थी थोड़े ही हैं। आपको अब क्या पढ़ना है?

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



बृहस्पति—नहीं बेटाजी! विद्या का कोई अंत नहीं है। जितना ही पढ़ता जाय, मनुष्य उतनी ही उन्नति करता जाता है। अपने गुरुजी से पूछ लेना।

उदयन—वह भी यही कहा करते हैं कि विद्या का अंत नहीं है।

बृहस्पति—फिर समझ लो कि मैं भी वहाँ विद्यार्थी के रूप में हूँ।

उदयन—अच्छा, एक बात पूछूँ, बतलाइएगा क्या?

बृहस्पति—क्यों नहीं?

उदयन—मैंने माताजी से एक बार पूछा था कि मेरे पिताजी कौन हैं, और कहाँ रहते हैं? इन्होंने कुछ बतलाया नहीं।

बृहस्पति—इस विषय में तुम क्यों पड़ते हो? अपना पाठ पढ़ो।

उदयन—पाठ तो पढ़ता ही हूँ, बाप को जानने से क्या वह भूल जाऊँगा?

बृहस्पति—भूलने क्यों लगे?

उदयन—तब फिर बतलाइए न।

बृहस्पति—वह मेरे भाई हैं। भाभीजी को मेरी रक्षा में छोड़कर वह संसार-हित-साधन में प्रवृत्त हो गए हैं। अब उनका पता मुझे या भाभीजी को भी नहीं है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



उदयन—बड़े निठुर हैं। मेरी माता को अकेली छोड़कर चले गए।

बृहस्पति—वह छोड़कर कब जाते थे, केवल भाभीजी का मन तपस्या में लग गया, जिससे यह स्वयं यहाँ रहने लगीं, और इन्हीं के हठ से वह लोक-हित में प्रवृत्त हुए।

उदयन—( भाभीजी से ) क्यों माताजी ! आपने ऐसा कठिन व्रत क्यों लिया ?

भाभी—बेटा ! मैं धर्म-पालन की ओर विशेषता से झुक पड़ी। कुलपतिजी ने कहा कि मेरी तपस्या से ही तुम्हारी उन्नति एवं कल्याण होगा। तुम्हारे ही भले के लिये महर्षि जमदग्नि और तुम्हारे काकाजी की सम्मति से मैं तप करने लगी।

उदयन—बड़े अचंभे की बात है, माताजी ! तब मेरे ही कारण माता-पिता को कष्ट हुआ।

भाभी—कष्ट इसमें क्या है, बेटाजी ! मैं तपश्चर्या में लीन हूँ, और तुम्हारे पूज्य पिता लोक हित-साधन में प्रवृत्त हैं। यदि यहाँ रहें, तो हम दोनो की धार्मिक उन्नति में अंतर पड़ जाय। जब तुम बड़े हो जाओगे, तब तुमको लेकर उनकी सेवा में उपस्थित हो जाऊँगी।

उदयन—बड़ा तो क्या मैं अब नहीं हूँ ?

बृहस्पति—अभी कहाँ बड़े हो; अभी तो तुम्हारी पढ़ने की अवस्था है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



भाभी—तुम्हारे ही लिये तो तुम्हारे काकाजी अब तक पढ़ रहे हैं।

उदयन—मुझे क्या जन्म-भर पढ़ना-ही-पढ़ना है ? जब काकाजी इतने बड़े होकर पढ़ते ही जाते हैं, तब मैं कब तक पढ़ूँगा ?

भाभी—जब तुम्हारा समावर्तन हो जायगा, तब पढ़ना छोड़कर काम-काज करने लगना, और तुम्हारे काकाजी भी तुम्हारे ही साथ रहने लगेंगे।

उदयन—अच्छा, पिताजी का नाम क्या है ?

बृहस्पति—उनका शुभ नाम सेनानायक है।

उदयन—वह रहते कहाँ हैं, और हैं कौन जाति के ?

बृहस्पति—वह क्षत्रिय हैं। रहने का स्थान उनका मैं नहीं जानता। जब तुम्हारा समावर्तन हो जायगा, तब वह मुझसे मिलेंगे, ऐसा कह गए हैं।

उदयन—अच्छी बात है। माताजी! आप काकाजी को यहीं रोक न लीजिए।

भाभी—जब तुम सयाने हो जाओगे, तब ऐसा अवश्य करूँगी।

इस प्रकार वार्तालाप के पीछे उदयन फिर यथापूर्व पढ़ने-लिखने में प्रवृत्त हुए। जब षोड़श वर्ष की अवस्था हुई, तब इनकी मित्रता मागध युवराज दर्शक से बढ़ी। वह भी कुछ ही दिनों से इसी संस्था में पठनार्थ आ गए थे। पांचाल-

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



राजकुमार अनंतवीर्य भी यहीं पढ़ते थे। उदयन की बढ़ती हुई महती योग्यता से दर्शक तो बहुत प्रसन्न रहते थे, किंतु पांचाल-राजकुमार में कुछ-कुछ ईर्ष्या का भाव जाग्रत् होने लगा। उदयन के साधारण सहपाठियों में एक ब्राह्मण-कुमार रुमण्वान भी था, जिसकी योग्यता से यौगंधरायण बहुत प्रसन्न रहा करते थे, और जिसका साथ उदयन से भी पूर्ण मित्र-भाव के साथ रहता था। जमदग्नि महर्षि कौटुंबिक संबंध के कारण इन पर विशेष अनुग्रह रखते और पढ़ाने में भी बहुत ध्यान देते थे। समय के साथ इन्होंने साधारण विद्या के अतिरिक्त शास्त्रों का भी अच्छा ज्ञान उपार्जित किया। समर-शास्त्र अथवा शास्त्रास्त्र-संबंधी योग्यता पर क्षत्रिय-कुमार होने से यह विशेष ध्यान देते ही थे, तथा गुरुवर भी सिखलाने में कसर न रखते थे। पाठशाला-संबंधी अपने उत्तरदायित्व पर इनका पूर्ण परिश्रम रहता था, और शारीरिक बल एवं बौद्धिक प्रखरता से इनके शास्त्रीय तथा क्षत्रियत्व-संबंधी शिक्षण बड़ी योग्यता-पूर्वक उन्नति कर रहे थे। इन्हीं कारणों से शिक्षकवर्ग भी इनसे बहुत प्रसन्न रहता अथच उन्नतियों में पूर्ण सहयोग देता था। इन्होंने विशेष परिश्रम से शरीर पर अनुचित भार बिना डाले अपनी उन्नति को भली भाँति बढ़ाया। इन विषयों के अतिरिक्त ललित कलाओं पर भी इन्होंने साधारण से बहुत अधिक ध्यान दिया। नृत्य, गान, वाद्य, अभिनय आदि सभी बातों में इनकी अभूतपूर्व उन्नति हुई।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



महर्षि ने भी ऐसी बढ़ी हुई योग्यता के कारण इन्हें कई विशेष विद्याएँ भी दीं, अर्थात् आप सर्प-विष-हरण तथा गज-वशीकरण-विद्याओं में परम दक्ष हो गए, और कुलपति से वादन-संबंधी योग्यता प्राप्त करने के अतिरिक्त आपने एक बहुत ही अच्छी सुघोषवती वीणा भी पाई। इनकी भारी योग्यता से रानी मृगावती तथा मंत्री यौगंधरायण तो परम प्रसन्न रहते ही थे, मागध युवराज दर्शक से भी इनकी मित्रता दिनोंदिन प्रगाढ़-तर होती गई। उनके साथ आप मृगयार्थ भी प्रायः जाया करते थे। मंत्री बृहस्पति की सम्मति से ही मगधेश ने अपने प्रिय पुत्र को पठनार्थ इस सुदूरस्थ संस्था में भेजा था। उदयन से मंत्रिवर के विशेष संबंध के कारण भी इन दोनो छात्रों में घनिष्ठता का प्रारंभ हुआ था, जो चित्त-वृत्तियों के साम्य तथा उदयन की महती प्रवीणता एवं सच्चरित्र से और भी बढ़ी थी।

एक बार कौशांबी-नरेश के भाई सहस्रानीक महोदय नर्मदा की ओर किसी कार्य-विशेष से कुछ गज-दल के साथ पधारे थे। एक दिन वह मृगयार्थ वन में गए, और वहाँ हाँके का प्रबंध कराया गया। दैव-वश दोनो मित्र उदयन और दर्शक भी उसी वन में मृगयार्थ जा पड़े। हाँके का पूर्ण विवरण विना जाने उदयन ने एक सिंह पर बाण चला दिया, जिससे वह वहीं ढेर हो गया। अपने हाँके में यह गड़बड़ देखकर राजकुमार सहस्रानीक बहुत क्रुद्ध हुए, और उनकी आज्ञा से सेना के दो-तीन हाथियों ने इन्हें घेर लिया। राजकुमार को

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



धर्म-युद्ध करते न देखकर एक बालक पर मैंगल प्रयोग से द्रष्टाओं को बुरा लगा, किंतु उदयन ने अपनी गज-वशीकरण-विद्या से उन दंतियों को स्ववश कर लिया, और वे शुंड उठा-उठाकर उनके पास प्रेम-भाव से खड़े हो गए। यह दशा देखकर सहस्रानीक ने बिना पूर्ण विचार किए इन्हें अपने कठोर नाराचों का लक्ष्य बनाया। विवश होकर उनके प्रहारों से अपने को बचाते हुए इन्होंने दो प्रचंड बाण छोड़े, जिनसे विपक्षी का शीश कटकर गिर पड़ा। उन्हीं के अनौचित्य से रुष्ट होकर भी उनके सैनिकों ने इन बालकों को बंदी बना ही लिया, क्योंकि वे अपने स्वामी के प्रिय भ्राता का वध सह्य न मान सके, तथा उनके कुछ न करने से राजकोप का भी भय था।

जब कुमारों के बंदी होने का हाल महर्षि जमदग्नि को ज्ञात हुआ, तब उन्होंने कौशांबी के छोटे-से दल के नेता को बुलवाकर समझाया कि दोष उन्हीं के राजकुमार का था, तथा मागध युवराज एवं उसके मित्र के बंदी करने का अधिकार उस छोटे-से दल को न समझना चाहिए था, क्योंकि ऐसा होने से मगध और कौशांबी में युद्ध अवश्यंभावी था। महर्षि के तर्कों तथा महायुद्ध की संभावना से प्रभावित होकर कौशांबी के सेनापति ने दोनो कुमारों को छोड़ दिया, तथा अपने राजकुमार का शव लेकर वह राजधानी को चला गया। भ्राता के वध से महाराजा शतानीक विकल तो बहुत हुए, किंतु पूरी परिस्थिति

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



पर विचार करके उन्होंने मगध या महर्षि के प्रतिकूल कोई कहा-सुनी भी करना योग्य न समझा, क्योंकि मूलत: दोष उन्हीं के भ्राता का था। इधर इस कथा का विवरण सुनकर तथा राजकुमार सहस्रानीक का ब्योरा जानकर मंत्री यौगंधरायण ने समझ लिया कि कुमार उदयन के पितृद्रोही होने का जो विचार था, वह तपश्चर्या से भी न दबकर बिना इनके दोष के पितृव्य-वध से शांत हो गया। अतएव उनको समझ पड़ा कि इनके प्रकट किए जाने का समय आ गया है।

थोड़े दिनों में महाविद्यालय में अवभृथ-स्नान द्वारा उदयन का विद्याध्ययन समाप्त हो गया, तथा गुरुवर को मुँह-माँगी गुरु-दक्षिणा देकर आप स्वतंत्र हो गए। उधर मंत्री यौगधरायण ने रानीजी की आज्ञा लेकर तथा राजदत्त मुद्रिका माता द्वारा उदयन को दिलाकर इनके साथ कौशांबी को प्रस्थान किया। मार्ग में इन्होंने राजपुत्र से उनके माता-पिता का वास्तविक विवरण भी कह दिया। अनंतर राजा शतानीक की सेवा में एकाकी उपस्थित होकर आपने रानी तथा राजकुमार का पूरा विवरण निवेदित किया। राजा ने अत्यंत हर्ष मनाया, तथा मुद्रिका द्वारा भी अपने पुत्र को निश्चित प्रकारेण जानकर गाजे-बाजे के साथ पूर्ण आनंद मनाते हुए उसका ग्रहण किया। अनंतर कुछ साथियों के साथ महर्षि जमदग्नि के तपोवन में पधारकर उनकी भी आज्ञा से प्रेमाश्रु-वर्षा के साथ अपनी रानी को भी ग्रहण किया। कौशांबी-पति के अनुरोध से मागध-

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



नरेश की सेवा प्रेम-पूर्वक छोड़कर यौगंधरायण कौशांबी में महामंत्री के पद पर नियुक्त किए गए, तथा उदयन के मित्र रुमण्वान सेना-विभाग के एक उच्च पद पर प्रतिष्ठित हुए। कुछ दिनों में विशेष प्रवीणता दिखलाकर तत्काल रिक्त हुए राज्य के महासेनापति-पद पर आप आसीन हो गए। राजकुमार उदयन युवराज बनाए गए, क्योंकि राजा के कोई और पुत्र था नहीं। कौशांबी में फिर से प्रतिष्ठित होने पर रानी महोदया अपने मायके जाकर वहाँ के लोगों से भी प्रेम-पूर्वक मिल आईं। उन लोगों ने इनके मायका छोड़कर तपोवन में चिरकाल पर्यंत रहने पर पहले तो उलाहना दिया, किंतु पीछे पूर्ण विवरण जानकर मतैक्य प्रकट करते हुए रानी को शतशः धन्यवाद दिए। कौशांबी पलटने पर प्रायः एक साल में रानी परलोकवासिनी हो गईं, और थोड़े दिनों में राजा शतानीक भी स्वर्गासीन हुए। तब स्वयं उदयन तिलक-धारी कौशांबी-नरेश नियत हुए। यह राजपद उचित समय पर पूरे उत्साह तथा समारोह के साथ इन्हें मिला।

यौगंधरायण महामंत्री बने ही रहे। आपने राजा को समझाया कि यद्यपि प्राचीन काल से वह इन्हें पितृवत् मानते चले आते थे, तथापि मंत्रित्व के काम में सभी बातें बिना विचारे न मानकर अपनी बुद्धि का भी प्रयोग किया करें। यौगंधरायण का यह विचार था कि मंत्रिपद पर सहपाठियों का भी नियुक्त होना बहुत उचित होता है। अतएव रुमण्वान

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



का महासेनापति एवं सामरिक मंत्री होना आप बहुत योग्य समझते थे। सहपाठीपन तथा उदयन से प्रगाढ़ मित्रता के अतिरिक्त आप रुमण्वान की योग्यता पर भी पूर्णतया मुग्ध थे। यही विचार सम्राट् उदयन का भी था।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# तृतीय परिच्छेद

## विवाह-चर्चा

अब उदयन के विवाह का समय आ गया था। महामंत्री यौगंधरायण का व्यवहार मागध राज्य से बहुत प्रेम-पूर्ण था। इधर पांचाल-नरेश अनंतवीर्य का पिता था तो मूलतः वत्स-राज शतानीक का राष्ट्रीय, किंतु समय पर स्वतंत्र नरेश हो गया था। उस राज्य की सामरिक शक्ति भी बहुत श्रेष्ठ हो गई थी, जिससे केवल अपने राज्य के बल से यौगंधरायण पांचाल-विजय की आशा नहीं रखते थे। अतएव आपकी इच्छा थी कि वत्सराज का पूरा मेल किसी प्रकार यदि मागध राज्य से हो जाय, तो इन दोनो शक्तियों के मिल जाने से पांचाल-पराजय सुगमता-पूर्वक संभव थी। मागध नरेश अजातशत्रु का स्वर्ग-वास हो गया था, और उदयन का मित्र युवराज दर्शक वहाँ का शासक ( बी० सी० ४७५ के लगभग ) हो चुका था। दर्शक से भी यौगंधरायण का प्रेम-पूर्ण व्यवहार था, जिससे इन दोनो शक्तियों के मेल की पूरी आशा की जा सकती थी, विशेषतया इस कारण से कि अजातशत्रु की राजकुमारी पद्मावती अत्यंत रूपवती १७ वर्ष की, विवाह-योग्य कन्या थी। इधर उदयन की भी अवस्था इस समय २४वें साल में थी। उधर उज्जयिनी-

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



नरेश चंडप्रद्योत की राजकुमारी वासवदत्ता भी अत्यंत रूपवती तथा प्रायः अष्टादशवर्षीया राजपुत्री थी; किंतु एक तो उज्जयिनी दूर थी; दूसरे, उस राज्य की शक्ति भी ऐसी न थी, जिसकी सहायता से पांचाल-विजय सुगमता-पूर्वक संभव होती। उज्जयिनी का प्रेम भी पांचाल से था, तथा महामंत्री का निजू व्यवहार उस राज्य से नहीं के बराबर था। अतएव इन दोनो संभव संबंधों में से आप मागधवाले को ही चाहते थे। तो भी घटना इस प्रकार से इनके न चाहते हुए भी घट गई कि उज्जयिनी के पर-राष्ट्र-सचिव महोदय एकाएकी विवाह की प्रार्थना लेकर कौशांबी में उपस्थित हो गए। सम्राट् उदयन ने जमदग्नि महर्षि के महाविद्यालय में ही वासवदत्ता के प्रकृष्ट सौंदर्य तथा श्रेष्ठ गुणों की बात सुन रक्खी थी। अतएव उज्जयिनी के सांधिविग्रहिक पर बिना यह भाव प्रकट किए ही आपने महामंत्री तथा सामरिक मंत्री रुमण्वान पर अपनी मानसिक अनुरक्ति का भाव इस भावी संबंध के विषय में साधारण रूप से प्रकट किया। महामंत्री महोदय ने पांचाल-विजय-संबंधी अपने विचारों को इस विषय पर स्वामी पर प्रकट करना उचित न समझा, क्योंकि विवाह को राजनीतिक चालों से मिलाना प्रेम-राज्य के प्रतिकूल था। अतएव आपने रुमण्वान के साथ राजसेवा में उपस्थित होकर इस विषय पर वार्तालाप किया—

यौगंधरायण—देव! इस विवाह के संबंध में मेरा विचार

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



दृढ़ता नहीं पकड़ता। मैं अनुमान करता हूँ कि देव का मानसे-भाव इसके स्वीकार की ओर प्राबल्य के साथ जा रहा है, तो भी मेरा चित्त इस ओर आकर्षित नहीं होता।

उदयन—मंत्रिप्रवर! आपने मेरा दृढ़ मानसिक भाव इस विषय में किस प्रकार से समझा? अभी मैंने कोई निश्चित अथवा अनिश्चित पुष्ट विचार तक आप दोनो महानुभावों पर तो प्रकट किया नहीं है।

यौगंधरायण—वचनों से तो ऐसा नहीं हुआ है, किंतु तेवरों के ताड़ने से मुझे ऐसा भय अवश्य है। यदि मेरा विचार अशुद्ध निकले, तो मैं बहुत प्रसन्न हूँगा।

रुमण्वान—है मुझे भी यही भय! मैं नहीं जानता कि महामंत्री महोदय इस विचार के प्रतिकूल क्यों हैं, किंतु इतना सोचता हूँ कि इसके उचित कारण होंगे अवश्य।

उदयन—मैं आपके महान् अनुभव को अपरिपक्व समझने का साहस कैसे कर सकता हूँ? इतना मानना ही पड़ेगा कि तेवरों के ताड़ने में आपने भूल नहीं की है। अब अपने वैप-रीत्य के कारण प्रकट कीजिए, तो बड़ी कृपा हो।

यौगंधरायण—कारण केवल चरित्र-संबंधी है। आप जानते ही हैं कि राजपुत्री वासवदत्ता के पिता चंडप्रद्योत महोदय एक उग्र स्वभाव के नरेश हैं। अपने कार्य-साधन के उपाय में वह कुछ भी कर सकते हैं, ऐसा मुझे भय है। यद्यपि अब तक

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



इसका कोई प्रमाण मेरे सामने नहीं है, तो भी अनुभव यही बतलाता है।

रुमण्वान—है तो आपके विचारों में तथ्य की संभावना अवश्य, आर्य ! किंतु यह निश्चय न होकर सभावना-मात्र है।

उदयन—क्या ऐसी अपरिपक्व स्थिति में एक भव्य राजकुल की परम सुंदरी कन्या का संबंध तिरस्करणीय है, विशेषतया इसलिये कि उसमें बहुत-से सद्गुणों का होना भी मैं चिरकाल से सुनता आता हूँ ?

यौगंधरायण—लोगों के स्वभावादि परखने में अनुभव ही काम आता है। उसे नितांत तिरस्करणीय समझने में कभी-कभी भारी धोखा भी संभव है। इसके अतिरिक्त एक बड़ी बात यह भी है कि चंडप्रद्योत के पिता पहले उज्जयिनी-पति के मंत्री-मात्र थे, और उन्होंने अपने स्वामी का वध करके राज्योपार्जन किया। हाँ, इतनी महत्ता भी अवश्य दिखलाई कि स्वयं राज्य न लेकर बेटे को राजा बनाया। फिर भी जिस कुटुंब ने अनीति-पूर्वक अपने विश्वासी स्वामी का अमंगल संपादित करके अन्याय-पूर्वक राज्य कमाया हो, उसकी गणना श्रेष्ठ भूभुजों में नहीं हो सकती। केवल राजा होजाने से वह कुटुंब प्रेम-पूर्वक संसर्ग्य नहीं माना जा सकता। फिर अवंति-राज्य का वर्तमान आकार भी दीर्घकाय नहीं है, केवल सामरिक शक्ति से वह चार प्रधान राज्यों में गिना जा सकता है। इन सब कारणों से मैं इस संबंध को अंगीकार्य नहीं समझता।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



रुमण्वान—है तो आर्य के कथनों में बहुत कुछ बल। मैं समझता हूँ कि श्रीमान् को इस विषय पर हठ करने की आवश्यकता संभवतः न समझ पड़े।

उदयन—हठ की आवश्यकता तो किसी विषय पर नहीं है। मैं स्वयं आर्य महामंत्रीजी को पितृतुल्य पूज्य समझता आया हूँ, किंतु आपने स्वयं समझा रक्खा है कि राजकाज में ऐसा निजू भाव अग्राह्य माना जाकर हम लोगों को प्रत्येक विषय पर निष्पक्ष भाव से विचार करना होगा। ऐसे पूज्य महामंत्री से हठ कब किया जा सकता है? आपने केवल मेरे चरित्र-शोधन के विचार से माताजी का पक्ष लेकर प्रायः २५ वर्ष तपस्या-सी की। ऐसा उच्च स्वभाव-युक्त व्यक्ति क्या महामंत्री-मात्र है? फिर जिसका अपना ही चरित्र इतना ऊँचा हो, वह दूसरे में चरित्र-संबंधी नीचता का सहन कैसे कर सकता है? मैं राजकुमारी वासवदत्ता को जब तक अति निकट से कुछ दीर्घ काल-पर्यंत न देख लूँ, तब तक पिता-पितामहादि के कर्कश स्वभावों से उसे अछूती कैसे मान सकता हूँ? मुझको उसके शील-गुण, रूपादि का श्रवण-दर्शन-मात्र प्राप्त है, जिसके बल पर ऐसे भारी प्रश्न का मैं निर्णय ही कैसे कर सकता हूँ, विशेषतया ऐसी दशा में, जब पितृतुल्य पूज्य महामंत्री महोदय योग्य कारणों से इस संबंध को करणीय नहीं समझते?

यौगंधरायण—देव! मैं पहले ही बिनती कर चुका हूँ,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



और अब भी दोहराता हूँ कि मेरे संबंध में सिवा मंत्रित्व के और कोई भाव राजकीय कार्यों आदि में न समझे जायँ। मैंने प्राचीन काल में देव के संबंध में अपने राजभक्तिवाले कर्तव्य मात्र का पालन किया था, जिसका पुरस्कार भी उचित से अधिक मिल चुका है। ऐसी दशा में सिवा महामंत्रित्व के मैं और किसी मान-प्राप्ति का न केवल उत्सुक नहीं हूँ, वरन् उसका वर्जन भी करता हूँ। उच्च विचारों पर देव को बधाई भी देता हूँ!

उदयन—धन्य काकाजी, धन्य! आगे से आपकी इस आज्ञा का भी पालन होगा। अच्छा, अब यह तो सम्मतिहो कि उज्जयिनी के मंत्री से कहा क्या जाय? एक मान्य राजघराने की सुयोग्य राजकुमारी का संबंध किस आधार पर अस्वीकृत किया जाय? मुझे भवदीय सम्मति पूर्णरूपेण स्वीकार है, किंतु उज्जयिनी-पति को क्या उत्तर दिया जाय, यह विचारणीय है।

रुमण्वान—इस विषय पर तो सुगम व्याज पूज्य पिता के स्वर्गवास का हो सकता है। हम लोग कह सकते हैं कि अभी उनको परलोकवासी हुए केवल षट् मास हुए हैं। एक वर्ष के भीतर विवाह तो दूर रहा, उसकी बात भी नहीं हो सकती। यह नितांत नियम-विरुद्ध होगा कि विवाह ठीक भी किया जाय।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



यौगंधरायण—बात तो तुमने बहुत जँची हुई कही। इस पर कोई अनौचित्य नहीं लगा सकता।

उदयन—है तो उचित ही; अच्छा, फिर सांधिविग्रहिक महोदय का दरबार कराया जाय।

अब प्रतीहारी द्वारा पर-राष्ट्र-सचिव महोदय आदर-पूर्वक आहूत होकर उपस्थित होते हैं, और योग्य आसन पर आसीन होकर नज़र-निछावर के साथ उज्जयिनी-राज्य का प्राभृतक देते हैं, जो महामंत्री महोदय मान-पूर्वक लेकर पढ़ते हैं।

महामंत्री—पर-राष्ट्र-सचिव महोदय! यह साम्राज्य आपके शुभागमन से अपने को बहुत समादृत समझता है। आशा है, उज्जयिनी में सब प्रकार से कुशल-मंगल होगा, और मार्ग में आपको कोई कष्ट न हुआ होगा, तथा यहाँ भी प्रसन्न होंगे।

उज्जयिनी के सचिव—आर्य! हमारे यहाँ सब प्रकार से कुशल-मंगल है, तथा हमारे महाराज ने पृच्छा की है कि बड़े सम्राट् के पीछे यहाँ भी सब कुशल-मंगल होगा। मैं मार्ग में बहुत सुख-पूर्वक आया, तथा यहाँ के आदर-सत्कार की तो कोई सीमा नहीं।

उदयन—बड़ी कृपा, आर्य! यहाँ तो बड़े महाराज के पीछे सब कुछ शून्याकार दिखता है। अभी तो उन्हें स्वर्गवासी हुए केवल छ मास बीते हैं; सब कहीं उन्हीं के अभाव का दृश्य नेत्रों के सामने आता है।

उज्जयिनी के सचिव—देव! योग्य संतानों को पिता से ऐसा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



ही प्रेम रखना चाहिए। फिर भी संसार की गति ही इस प्रकार चलती है कि आना-जाना यहाँ का अनिवार्य धर्म ही हो रहा है। संसार की बातें चलानी ही पड़ती हैं, चाहिए या न चाहिए।

रुमण्वान—ऐसा तो है ही, मंत्रिप्रवर! फिर भी हमारे सम्राट् को बड़ा खेद इस बात का है कि अनेकानेक अनिवाय कारणों से बाल-वय में आपको उनके दर्शन प्राप्त न हो सके। समय पर कौशांबी में जब आपका पधारना हुआ, तब प्राचीन वियोग के कारण से भी बड़े सम्राट् का पुत्र-प्रेम बहुत ही प्रगाढ़ मात्रा में सदैव प्रकट हुआ, किंतु उस अगाध पितृप्रेम का उपभोग हमारे सम्राट् बहुत ही स्वल्प काल के लिये कर पाए। यही आपको तथा हम सबको असह्य ग्लानि है। है तो संसार-चक्र अनिवार्य अवश्य, किंतु अभी इस तथ्य का समुचित प्रभाव हम लोगों पर नहीं पड़ सका है।

उज्जयिनी के सचिव—इस आत्मीय विषय पर, आर्य! भला मैं क्या कह सकता हूँ? कथन आप महाशयों के पूर्णतया योग्य हैं। मेरी तो समझ में आता है कि इस प्रचंड मानसिक अशांति के निवारण का एक उपाय प्रसंग-विध्वंस भी है, अर्थात् जो खेद वर्तमान दशा में यहाँ छाया हुआ दिखता है, उसकी शांति दशा-परिवर्तन से भी संभव है।

यौगंधरायण—ऐसी बातों और विचारों का शमन समय ही करता है। यही बड़े-से-बड़े घावों का भरनेवाला है। अन्य उपायों से शांति दुष्प्राप्य दिखती है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



उदयन—हम लोगों ने आत्मीय खेदों का इतना बृहदाकार बखान किया है कि मंत्री महोदय को अपने विषय पर बात करने का भी अवसर मिलना कठिन हो गया है।

उज्जयिनी के सचिव—यही बात है, अन्नदाता!

यौगंधरायण—मैं प्रार्थना करूँगा कि मंत्रिप्रवर अपने विषय का विवरण ऐसी स्वच्छंदता से दें, मानो हम सबों के सम्मुख कोई दुःखद प्रश्न आया ही न हो।

उदयन—यही बात है, आर्य! इनके दरबार का दुःखद घटनाओं से उदासीन न होना ही ठीक है।

उज्जयिनी के सचिव—अनेकानेक धन्यवाद! तो मैं विनती करूँगा कि अपने प्रयोजन का पूरा इंगित हमारे महाराज ने प्राभृतक में कर ही दिया है। मैं अवस्था के अनुसार इतना और निवेदन करने को बाध्य हूँ कि हमारी राजकुमारी रूप, गुण, विद्या, बुद्धि आदि में अद्वितीया हैं। मैं समझता हूँ, इन बातों की ख्याति इस दरबार में भी पहुँच चुकी होगी।

यौगंधरायण—इसमें क्या संदेह है? मंत्रिप्रवर! हम सबों का चिरकाल-पर्यंत निवास नर्मदा के निकट ऋषिवर जमदग्नि के आश्रम में रहा। अतएव आपकी राजपुत्री की ख्याति का हाल हम सबों को वहीं से विदित हो चुका है। इस विषय पर कुछ भी संदेह किसी को नहीं हो सकता।

उज्जयिनी के सचिव—तब क्या मैं समझ सकता हूँ कि यहाँ से हम लोगों की प्रार्थना स्वीकृत होने की आशा है?

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



यौगंधरायण—अस्वीकृति का तो कोई कारण नहीं है, किंतु इतना विचारणीय है कि इस वंश के वृद्धों का कथन है कि बड़े सम्राट् के स्वर्गवास के एक वर्ष के भीतर ऐसा कोई मांगलिक कार्य नहीं हो सकता।

उज्जयिनी के सचिव—ऐसा भाव तो अपनी ओर भी प्राचीन प्रथा के सज्जनों में चलता है, किंतु बात पक्की की जा सकती है, तथा विवाह का शुभ मुहूर्त ऐसे समय में स्थिर किया जा सकता है, जो उस अमांगलिक घटना से एक वर्ष से आगे हो।

रुमण्वान—इतना ही तो विच्छेद इस उचित वार्ता में पड़ता है। अपने कुल-वृद्धों का विचार है कि एक वर्ष-पर्यंत विवाहादि-संबंधी वार्तालाप भी नहीं हो सकता। उनका कहना है, स्वीकार तो वास्तविक विवाह ही है, अथच कन्यादान, सप्तपदी आदि उसके केवल शास्त्रीय उपचार हैं। मुख्यता प्रत्येक अवस्था में स्वीकार ही की है।

उज्जयिनी के सचिव—तब क्या मैं ऐसा समझूँ कि मुझे इस विषय पर कोई भी आश्वासन दिया नहीं जा सकता, अर्थात् मानो मैं अपना मांगलिक प्रस्ताव यहाँ लाया ही नहीं?

उदयन—मंत्रिप्रवर! बड़े खेद के साथ कहना पड़ता है कि यहाँ तो इस काल अमांगलिक समय उपस्थित है। हम लोग किसी मांगलिक विषय पर विचार न कर सकने पर बाध्य हैं।

उज्जयिनी के सचिव—क्या मैं ऐसा सोच सकता हूँ कि

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



हमारे प्रस्ताव से यहाँ कोई प्रतिकूलता नहीं है, केवल धार्मिक विचारों से कोई निर्णय नहीं हो रहा है ?

यौगंधरायण—हमारा ऐसा कथन भी एक प्रकार से प्रच्छन्न स्वीकार होगा, जो समय के देखते हुए असंभव है। हम लोग प्रत्यक्ष अथवा प्रच्छन्न रूप से न स्वीकृति देते हैं, न अस्वीकृति।

उदयन—यही बात है, मंत्रिप्रवर !

उज्जयिनी के सचिव—क्या यहाँ तक संभव है कि कौशांबी से किसी अन्य राजकन्या का प्रस्ताव भी उचित समय पर स्वीकृत हो सकता है ?

रुमण्वान—जब यहाँ से कुछ भी निर्णय नहीं होता, तब माना यही जायगा, मानो यह प्रस्ताव अभी यहाँ आया ही नहीं।

उज्जयिनी के सचिव—ऐसे नीरस उत्तर से हमारे राज्य को निराशा का होना स्वाभाविक ही है।

यौगंधरायण—मैं तो निराशा का कोई कारण नहीं देखता, न हमारा उत्तर ही नीरस है। आप स्वयं समझ सकते हैं कि संबंध के लिये परमोत्सुक होकर भी हम लोग यही उत्तर देने पर विवश थे। आपकी राजकुमारी महोदया सभी विचारों से पूज्या हैं, तथा राज्य भी किसी प्रकार दूषित नहीं है। तब निराशा की क्या बात है ? हमारे यहाँ की प्रचंड दुर्घटना के कारण इस काल ऐसे विषय पर विचार-मात्र असंभव है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



उज्जयिनी के सचिव—तब मैं आज्ञा माँगूँगा। उचित समय पर संभवत: हमारे महाराज मुझे फिर से भेजें, किंतु इस बात का निश्चय अभी से असंभव है।

उदयन—जैसी आपकी इच्छा।

अनंतर दरबार भंग हुआ, और साधारण मान के साथ सांधिविग्रहिक महोदय को विदाई दी गई।

उज्जयिनी-पति के लिये जो प्राभृतक गया, उसका तात्पर्य भी यही था कि प्रकट कारणों से एक वर्ष के भीतर ऐसे विषय पर विचार नहीं हो सकता। जब पर-राष्ट्र-सचिव महोदय अपने राज्य में उपस्थित हुए, तब दरबार में इस विषय पर वार्तालाप होने लगा। उसमें महामंत्री भी उपस्थित थे।

महाराजा चंडप्रद्योत—कहिए सांधिविग्रहिक महोदय! प्राभृतक तो आप नीरस लाए हैं। वहाँ समझ कैसा पड़ा?

सांधिविग्रहिक—देव! वार्तालाप तो प्रेम-पूर्ण हुआ, तथा राजकन्या के रूप, शील, गुणों आदि की प्रशंसा भी मुक्त कंठ से हुई, किंतु बड़े महाराज के छ मास के भीतरवाले स्वर्गवास के बहाने पर इस विषय पर बात भी न की गई। दूर से भी कोई विचार प्रकट न किया गया।

महामंत्री—क्या बातचीत के ढंग से बहाना-मात्र समझ पड़ा, अथवा कोई वास्तविकता विचारों में थी?

सांधिविग्रहिक—मुझे तो केवल व्याज दिखा। सबके माता-पिता मरते हैं, किंतु छ-छ मास-पर्यंत बीत जाने पर भी ऐसा नहीं

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



होता कि किसी मांगलिक कार्य पर वार्तालाप भी न हो। जहाँ पिता देवलोक-वासी हुए, वहीं राज्य भी तो मिला। माना कि एकमात्र संतान होने से राज्य पाते ही, तथापि मान-वृद्धि तो हुई ही। मेरी समझ में नहीं आता कि ऐसी रूपवती एवं गुणवती राजकन्या के संबंध का ऐसा प्रचंड तिरस्कार क्यों किया गया ?

महामंत्री—यही तो आश्चर्य है ! ऋषिवर जमदग्नि के आश्रम में जब राजकुमार महोदय थे, तभी उन्होंने राजकन्या के गुणों का विवरण प्रेम और उत्साह के साथ सुना था। नहीं समझ पड़ता कि अब क्या हो गया है ?

महाराजा चंडप्रद्योत—तब तो वह अपने को एक साधारण क्षत्रिय-कुमार समझते थे, अब महाराज हैं, तथा सम्राट् तक कहलाते हैं।

महामंत्री—तब भी बात समझ में नहीं आती।

महाराजा चंडप्रद्योत—दशा दर्प-पूर्ण समझ पड़ती है। संभवतः यौगंधरायण ने कहीं और संबंध सोचा हो। वह मंत्री महाशय बड़े न्याय-प्रिय और राजभक्त होकर भी हैं बड़े ही कूट-नीति-कुशल। उनकी विचार-धारा कितनी दूर जा सकती है, सो ध्यान में नहीं आता। महासेनापति रुमण्वान भी बड़े ही राजभक्त एवं नीतिज्ञ हैं। उनका महामंत्रीजी से प्रेम-भाव भी अगाध है। मैं तो समझता हूँ कि इस दर्प का कोई प्रतिफल भी देना चाहिए।

महामंत्री—उन्होंने कोई अनुचित कथन तो किया नहीं;

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



बातें अत्यंत प्रेम-पूर्ण हुईं; केवल एक उचित ब्याज के आधार पर संबंध मानो अस्वीकृत कर दिया। ऐसी दशा में मेरी सम्मति में कोप-भाजन होने के पात्र नहीं हैं।

सांधिविग्रहिक—ऐसा तो मैं भी समझता हूँ। यदि राजकन्या को इसका लेश-मात्र पता पड़ा, तो उनका अत्यंत खिन्न होना निश्चित है। किसी पर दबाव डाला जाना वह कभी सह्य नहीं समझतीं, विशेषतया अपने ही संबंध में।

महाराजा चंडप्रद्योत—उनको तो अणु-मात्र ज्ञात नहीं है कि उनके विवाह का प्रयत्न हो रहा है। सिवा आप दोनो मंत्रियों के यह भेद मैंने अभी तक राजमहिषी तक पर प्रकट नहीं किया है, और कोई क्या जानेगा? आशा है, आप दोनो ने भी इसे अत्यंत गुप्त रक्खा होगा।

सांधिविग्रहिक—ऐसा तो है ही, देव! कोई भी नहीं जानता कि मैं कहाँ, क्यों गया था? कौशांबी में भी इस विषय को अत्यंत गुप्त रखने की प्रार्थना कर दी गई थी।

महामंत्री—तब फिर यह तो शंका न रही कि राजकुमारी को कुछ बुरा लगेगा, किंतु इतना विचार करना है ही कि किया क्या जाय?

महाराजा चंडप्रद्योत—मैं उस राज्य को न तो कोई हानि पहुँचाना चाहता हूँ, न गुप्त अथवा प्रकट वैर बाँधने की इच्छा है। फिर भी इस राज्य का प्रच्छन्न अपमान हो ही गया है, अतएव मेरी कामना यह है कि कोई ऐसी युक्ति खेली जाय, जिसमें

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



स्वयं उदयन प्रार्थना करके कन्या का पाणिग्रहण करें । उनका कोई निरादर अथवा अपमान मैं नहीं करना चाहता, न कन्या को इसका थोड़ा भी आशय मिल सकेगा । अपमानवाले भाव के अतिरिक्त मैं अपनी कन्या के लिये इस वर को पसंद भी बहुत करता हूँ ।

महामंत्री—तब तो अनौचित्य का रूप दूर से भी नहीं दिखता । फिर भी सोचना पड़ेगा कि कौन-सी युक्ति देव को सुलभ दिखलाई पड़ती है, जिससे सुगमता-पूर्वक कार्य-साधन हो जाय, तथा भावी संबंध का रूप भी न बिगड़े ?

सांधिविग्रहिक—हमीं दोनो को इसका ब्योंत बाँधना होगा । देव से इस विषय पर पृच्छा अनावश्यक है ।

महाराजा चंडप्रद्योत—यही बात है, आर्य ! अभी से कुछ ध्यान में थोड़े ही आया है । आप ही दोनो से गुप्त मंत्रणा करके कोई-न-कोई युक्ति निकालनी होगी ।

महामंत्री—जो आज्ञा, देव !

इस प्रकार वार्तालाप के अनंतर यह दरबार समाप्त हुआ, और आगे की कार्यवाही भविष्य के लिये छोड़ी गई ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# चतुर्थ परिच्छेद

## गज-मृगया और बंधन

सम्राट् उदयन की गज-वशीकरण-विद्या केवल पालतू हाथी-हथिनियों पर चलती थी, जंगलियों पर नहीं। तो भी आपको जंगली जंतुओं के पकड़ने की भारी रुचि थी। जंगलों में इनके पकड़ने के आखेट प्रायः हुआ करते थे, जिनमें आप स्वयं भी ऐसा उमंग-पूर्ण भाग लेते थे कि कभी-कभी साथियों से छूटकर एकाकी भी इस कार्य में प्रवृत्त हो जाया करते थे। अपनी विद्या के बल पर आपको इस विषय में आवश्यकता से कुछ विशेष आत्मविश्वास था।

वनों में पचास-पचास, साठ-साठ हथिनियों के झुंड घूमा करते हैं, जिनमें यूथप एक ही भारी हाथी होता है, तथा हथिनियाँ बहुतेरी होती हैं, जिनके नर-मादा बच्चे भी कितने ही प्रत्येक झुंड में रहते हैं। जब तक नर बच्चे यूथप होने के योग्य नहीं हो जाते, तब तक अपने ही झुंड के साथ रहते हैं, किंतु बड़े हो जाने पर वे किसी यूथप-शून्य झुंड के नेता हो जाते हैं। ज्यों ही कोई भारी हाथी किसी यूथप के सामने आता है, त्यों ही उन दोनो में प्राणांतक युद्ध होने लगता है, जिसमें यूथ की हथिनियाँ आदि भाग नहीं लेतीं। दोनो गजपति दूर से

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



दौड़-दौड़कर मत्थों पर टक्कर लेते हैं, जिनका भारी शब्द होता है। फिर तुंड और पुच्छ उठाए हुए मत्थे से मत्था मिलाए एक दूसरे को ठेलने में यथाशक्ति बल किया करते हैं। कभी-कभी बल-हीन मैगल चित्त में हारी मान, शीश निबुकाकर भाग भी जाता है, और विजयी दंती यूथप हो जाता है। प्राय: दोनो का युद्ध अंत पर्यंत हुआ करता है। देखने में दोनो हाथी सहज ही खड़े हुए-से दिखते हैं; वे बल करते हुए तभी ज्ञात होते हैं, जब उनके शरीरों में बल पड़ जाते हैं। समय पर सबल कुंजर विपक्षी को गिराकर, पेट में दाँत घुसेड़कर उसे मार डालता है, और स्वयं यूथप बना रहता या हो जाता है। विना कारण भी केवल यूथप होने के लिये वितुंडों में घोर युद्ध होते हैं। नदी इत्यादि पार करने में पहले यूथप आगे चलकर उसकी गंभीरता का पता लगा लेता है, और तब उसके पीछे शेष झुंड चलता है। सारा झुंड नदी में स्नान करता है। उनके ऐसे दृश्य दर्शकों को भी बड़े कौतूहल-जनक होते हैं। झुंड की प्रत्येक हस्तिनी प्रति बच्चे का पालन-पोषण, प्यार आदि अपने ही बच्चे के समान करती है। हथिनियों के इस कर्तव्य-पालन से मानुष-स्त्रियाँ उदाहरण ले सकती हैं। हथिनियाँ चाँदनी में लकड़ी के डंडे तोड़-तोड़कर उनसे बच्चों को एक दूसरे को मारना तथा लड़ना सिखलाती हैं। बड़े हाथी लड़ने में वृक्ष तोड़-तोड़कर उनसे एक दूसरे को मारते हैं। चाँदनी रातों में हाथियों की जंगलों, नदियों, झीलों आदि में कुलेलें और भी अच्छी लगती हैं।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



हाथी पकड़ने का यह भी एक नियम है कि जंगल में पेड़ के सहारे बहुत मोटी-मोटी पुष्ट लकड़ियाँ गाड़-गाड़कर एक भारी घेरा बनाया जाता है, जिसका एक बड़ा फाटक भी वैसा ही पुष्ट बनता है। मृगयार्थी लोग युक्ति-पूर्वक छिपे रहते हैं, तथा पालतू शिक्षिता करिनियों को जंगली झुंड में मिला देते हैं। उनके पीछे-पीछे कामातुर गजपति चला आकर बाड़े में बंद हो जाता है। उसी के साथ सारा झुंड भी बंद होता है, तथा फाटक बंद रक्खा जाता है। शिक्षित, पालतू हाथी-हथिनियाँ युक्ति-पूर्वक बाड़े के बाहर कर ली जाती हैं, और जंगली हाथी दो-तीन दिनों तक भूखे रक्खे जाते हैं। अनंतर मृगयार्थी लोग पालतू हाथियों पर जा-जाकर बच्चों को चारा दे-देकर हिलाने लगते हैं, और शिक्षित हाथियों द्वारा रस्सियों से बँधवा-बँधवाकर उन्हें बाहर निकालते तथा धीरे-धीरे युक्ति-पूर्वक समय के साथ पालतू बना लेते हैं। धीरे-धीरे झुंड की करिनियाँ भी इसी प्रकार पकड़ी जा-जाकर पालतू बनती जाती हैं। बलवान् हाथियों को कई दिनों तक भूखा रक्खा जाता है, तब कहीं कठिनता से वे वश में आते हैं।

कभी-कभी जंगल में बड़े-बड़े गढ़े खोदकर, ऊपर से निर्बल लकड़ियों के सहारे मिट्टी बिछाकर उन्हें पाट देते हैं। जब हाथी उधर होकर निकलते हैं, तब पुष्ट भूमि समझ उस निर्बल छत पर पैर धरकर गढ़े में जा पड़ते हैं, और पीछे

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



से दो-चार दिन भूखे रक्खे जाकर उपर्युक्त प्रकार से स्ववश कर लिए जाते हैं।

एक बार रुमएवान एकाकी जंगल में घूम रहे थे कि एकाएकी दो बड़े-बड़े हाथी पीछे से आ पड़े। अब इन्हें प्राण बचाना असंभवप्राय दिखाने लगा, और उनमें से एक हाथी इन पर झपट भी पड़ा, परंतु दूसरे ने न-जाने क्यों इनसे मित्र-भाव मानकर अपने साथी को दबका दिया। अब इन्हें सूँड़ से उठाकर वह इनके साथ खेलने लगा। गेंद की भाँति सूँड़ द्वारा ऊँचे-से-ऊँचे उठाकर अपने साथी की सूँड़, में दे देता था, और वह इसी प्रकार पहले को देता था। पीछे युक्ति-पूर्वक आप एक हाथी की पीठ पर बैठ गए, और फिर एक ऊँचे पेड़ पर चढ़कर समय पर बच निकले।

एक बार अपने कुछ बड़े बच्चे के साथ एक हस्तिनी जा रही थी कि वह एकाएक उपर्युक्तानुसार बनाए हुए एक गढ़े में जा पड़ी। बच्चे को बड़ा ही खेद हुआ। उसकी माता ने सदा उसे प्रत्येक कष्ट से बचाया था, किंतु इस काल स्वयं ऐसी विपत्ति में जा पड़ी थी, जिससे बच्चा उसकी रक्षा नहीं कर सकता था। बहुत देर तक वहीं खड़ा-खड़ा वह माता को देख-देखकर रोता-सा रहा। अनंतर गढ़े के भीतर से माता ने सूँड़ उठाई, जिसे अपनी सूँड़ में धारण करके बच्चे ने मानो प्रेम-पूर्वक चुंबन लिया। अनंतर रोकर वह वहाँ से आगे बढ़ा, तो देखता क्या है कि एक सेनानी वहीं एकाकी खड़ा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



है। बच्चे को समझ पड़ा कि इसी के उपद्रव से माता की दुर्दशा हुई थी। अतएव छोटा होने पर भी दौड़कर उसने एकाएकी उसे गिराकर अपने छोटे पैरों से रौंद डाला। तब तक उसके दो साथियों ने आकर बच्चे को पकड़ लिया। कुछ दिनों में जब हस्तिनी भी पकड़कर लाई गई, और अपने बच्चे से मिली, तब दोनो बहुत प्रसन्न दिखे।

एक बार एक पालतू कुंजर कारण-वश क्रुद्ध होकर चाकरों की मड़ैयों को दौड़-दौड़कर तोड़ने लगा। जब कई तृण-सदनों को इस प्रकार तोड़ चुका, तब सम्राट् उदयन को संवाद मिला, और उन्होंने अपनी गज-वशीकरण-विद्या के बल पर उसे स्ववश किया।

इस प्रकार कई बार की मृगयाओं से आपने सैकड़ों हाथी पकड़-पकड़कर अपना गज-दल बढ़ाया, तथा करिनियों को बेचवा-बेचवाकर भी राजकोष संपन्न किया।

एक बार जंगल में इन्हें बड़ा भारी एक हाथी दिखा, और एकाकी होकर भी उसके पकड़ने के लोभ में आप कुछ निकट चले गए, किंतु वह वास्तविक द्विरद न था, वरन् काष्ठ का कृत्रिम द्विप उज्जयिनी-पति द्वारा बनवाया गया था, जिसके शून्य उदर-प्रदेश में कई सशस्त्र योद्धा छिपे हुए थे, जिन्होंने निकलकर सम्राट् को पकड़ लिया। इस युद्ध में आपने खड्ग द्वारा एक-दो को मारा भी, किंतु बहुसंख्या से इनका वश न चला, और यह अति शीघ्र उज्जयिनी में उपस्थित किए गए। वहाँ महामंत्री ने नम्रता-पूर्वक इनसे संभाषण किया।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



महामंत्री—देव ! मुझे बड़ा खेद है कि आपको कष्ट दिया गया, किंतु आशा है कि यहाँ भी आप सुख-पूर्वक प्रसन्न रहेंगे। मैं यहाँ का महामंत्री हूँ।

उदयन—आर्य ! आपसे मिलकर मैं प्रसन्न अवश्य हुआ, किंतु अपने ऊपर इस अनुचित अथच आकस्मिक आक्रमण का कारण नहीं समझ पा रहा हूँ।

महामंत्री—हमारे महाराजा ने आपसे जब सद्व्यवहार तो किया नहीं है, तब कारण बतलाने की कोई आवश्यकता नहीं समझ पड़ती, फिर भी कहता हूँ कि हम लोगों का विचार भारत में एक राष्ट्र संस्थापित करने का है।

उदयन—एक मनुष्य को छल से विवश कर लेने से एक राष्ट्र को बात ही क्या है, आप वत्सराज को भी स्ववश न कर पाएँगे। यदि मुझ पर अनुचित प्रहार का भय न होता, तो वत्स-दल ही उज्जयिनी-राज्य अशेष कर देता।

महामंत्री—इस विषय पर मुझे श्रीमान् से कथनोपकथन करने की आवश्यकता नहीं है। हमारी शक्ति किस प्रकार से अपना विचार पूरा करेगी, यह हमारे मंत्रिमंडल के विचाराधीन है, न कि शत्रुओं के।

उदयन—तब फिर शत्रुओं से इस विषय पर बात चलाने ही की क्या आवश्यकता थी ?

महामंत्री—बात मैंने कब चलाई थी ? वह तो देव के पूछने पर भद्रत्व के नाते एक बात कह दी गई।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



उदयन—भद्रत्व का उदाहरण तो आप बहुत अच्छा दिखला चुके हैं।

महामंत्री—इतना मैं भी स्वीकार करूँगा कि हम लोगों से एक अभद्र काम अवश्य हो गया है। फिर भी स्वच्छंद तो आप को करेंगे नहीं, किंतु अन्य किसी प्रकार का कष्ट नहीं देना चाहते।

उदयन—क्या आपके स्वामी से भी मेरी भेंट होगी?

महामंत्री—यदि आप चाहें, तो अवश्य। किंतु यदि बंदी होने से उनसे मिलने में लज्जा का बोध करें, तो भेंट की कोई आवश्यकता नहीं है। बंदी-जीवन तो आपका एक प्रकार से नीति-चक्षु-मात्र से होगा, किंतु कोई कष्ट नहीं देना चाहते।

उदयन—धन्यवाद! किंतु इस दया-प्रदर्शन का क्या कारण है? आपके महाराज से मैं बंदी-जीवन में मिलना नहीं चाहता।

महामंत्री—बिनती तो कर चुका कि जितना अभद्र व्यवहार आपके साथ हो चुका है, उसे हम लोग बढ़ाना नहीं चाहते। एक निष्पाप अथच निष्कलंक राजन्य व्यक्ति को किसी प्रकार का अनावश्यक कष्ट देना हम लोगों को अभीष्ट नहीं।

उदयन—जब इतना भद्रत्व चित्त में है, तब एक ही बात उलटी क्यों कर बैठे?

महामंत्री—उसके कई अनिवार्य कारण हैं, जिनका प्रकटीकरण समय पर होगा, अभी नहीं हो सकता। संभव है कि

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



समय पर आप भी हम लोगों से सहमत हो जायँ। अभी देव से क्षमा-मात्र की प्रार्थना है।

उदयन—मतैक्य तो, आर्य! दुराशा-मात्र है, तो भी शायद कारण-माला का प्रकटीकरण अभी असंभव हो।

महामंत्री—यही बात है, देव! अब चलिए, अपना निवास-स्थान नियत कर लीजिए।

इस प्रकार वार्तालाप करके महामंत्री महोदय उदयन के साथ एक दिव्य रथ पर बैठकर इन्हें कई राजप्रासाद दिखला लाए, और जहाँ का निवास इन्हें रुचिकर हुआ, वहीं का सुख-पूर्ण प्रबंध कर दिया गया। इन्हें किसी प्रकार का कोई कष्ट नहीं होने पाया। नगर-निरीक्षण, वायु-सेवन आदि का भी समुचित संख्या में, रक्षकों की देख-रेख में. प्रबंध कर दिया गया। चार सै प्रहरी प्रासाद के चारों ओर नियत हो गए, और विना महामंत्री की आज्ञा के इनसे कोई मिल नहीं सकता था। अन्य प्रकार का इन्हें कोई कष्ट न था। सत्संग, व्यायाम, पुस्तकालय आदि के भी योग्य प्रबंध थे, तथा उपवनादि में परिभ्रमण के भी।

एक दिन महामंत्री महोदय फिर इनकी सेवा में उपस्थित होकर वार्तालाप करने लगे—

महामंत्री—आशा है कि देव को यहाँ किसी प्रकार का कोई अनावश्यक कष्ट न होगा। केवल स्वतंत्रता का कुछ अभाव है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



उदयन—कष्ट तो मुझे आपके सुप्रबंध में कुछ भी नहीं है, किंतु समझ नहीं पड़ता कि यह बंधन की दशा कब तक चलेगी ?

महामंत्री—इसका उत्तर तो केवल महाराज दे सकते हैं। यदि आपका चित्त ऊबता हो, तो मैं एक युक्ति और बतला सकता हूँ।

उदयन—कार्याभाव से चित्त तो ऊबता ही है। कहिए, आप क्या सोचते हैं ?

महामंत्री—मेरा तथा श्रीजू देव का विचार ऐसा है कि आप राजकुमारी वासवदत्ता को कुछ गाना-बजाना ही सिखला दीजिए। सुना, इन विषयों के देव विशेषज्ञ हैं।

उदयन—गान-वाद्य का शिक्षण तो मैं कर सकता हूँ, किंतु शिष्या होकर राजकुमारी को नित्यप्रति नम्र-भाव से प्रणाम करना होगा। बिना इसके मैं शिक्षा न दूँगा।

महामंत्री—यह बात मैंने श्रीजू देव से पहले ही निवेदित कर दी थी, किंतु उनका कहना है कि राजकुमारी एक बंदी को प्रणाम नहीं कर सकती।

उदयन—तब फिर बंदी ऐसी शिष्या को स्वीकार भी नहीं कर सकता।

महामंत्री—मैंने इसका एक उपाय भी सोच रक्खा है। जब राजकुमारी देव से मिल सकतीं नहीं, तब आप उनकी एक कुब्जा सखी को गान-वाद्य का शिक्षण देने की कृपा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



कीजिए, और वह उन्हें बतला दिया करेगी। वह पर्दे की आड़ में बैठेगी, जिसमें आपको एक सेविका-मात्र के साथ बैठने का कष्ट न उठाना पड़े।

उदयन—मैं इस प्रस्ताव को स्वीकार तो न करता, किंतु कार्याभाव से मेरा चित्त लगता नहीं, इस कारण से माने लेता हूँ। आप इसका प्रबंध करा दीजिए।

महामंत्री—जो आज्ञा, देव !

अनंतर शिक्षण का प्रबंध हो गया, और कुब्जा सखी के स्थान पर स्वयं राजकन्या पर्दे की ओट में बैठकर उदयन से गान-विद्या की शिक्षा लेने लगी। यह समझते थे कि कुब्जा सखी को सिखला रहे हैं। उधर राजकन्या से कहा गया था कि उसे एक परम वृद्ध पुरुष शिक्षा दे रहा है। 'स रे ग म प ध नि स' आदि से लेकर छओं रागों, छत्तीसो रागिनियों के रूप सिखलाए जाने लगे। राजकुमारी ने एक बार पूछा कि राग तथा रागिनियों में स्वरों का प्रयोग तो एक प्रकार से होता है, फिर क्या कारण है कि कुछ राग कहलाते हैं तथा अन्य रागिनियाँ ?

उदयन—वास्तव में केवल छ रागों को राग कहने और छत्तीस को उनकी आश्रिता रागिनियाँ-मात्र समझने का कोई समुचित शास्त्रीय कारण नहीं समझ पड़ता। एक-एक राग तथा छ-छ रागिनियों के रूप थोड़े-बहुत मिलते अवश्य हैं, किंतु प्रति सात-सात का जत्था राग भी माना जा सकता है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



उनमें से एक-एक को राग तथा छ-छ को रागिनी मानने का कोई पर्याप्त शास्त्रीय कारण उच्चारण में कोमलता तथा तीव्रता के अतिरिक्त नहीं है, केवल प्राचीन गायन-शास्त्रियों ने ऐसा माना अवश्य है।

राजपुत्री—तब यह राग-रागिनी-विभाजन अनावश्यक समझा जा सकता है क्या ?

उदयन—बहुत करके अवश्य।

राजपुत्री—अच्छा, उपराग तथा उपरागिनियों में भी कोई क्या मुख्य राग माने जा सकते हैं ?

उदयन—ऐसा भी संभव है; रागों की संख्या बहुत कुछ बढ़ सकती है।

इस प्रकार शिक्षा देते हुए राजपुत्री को एक दिन कई बार समझाने पर भी आपने अशुद्ध कथन करते हुए पाया, तथा खीझकर कहा—

उदयन—अरी कुबड़ी, मूर्खा ! तुझे कोई कहाँ तक सिखलाए ? कुछ समझ ही नहीं पाती।

इस पर परम क्रुद्ध होकर राजपुत्री ने कहा—बुड्ढे, खूसट कहीं के ! कौन कुबड़ी है ? बातें सँभालकर नहीं करता।

उदयन—कुबड़ी कहीं की ! कौन बूढ़ा जप्पल है ?

इस प्रकार गरमागरमी होने से दोनो ने बीच का पर्दा क्रोधावेश में हटा डाला, तथा एक दूसरे के परमालौकिक सौंदर्य से दोनो अत्यंत प्रभावित हुए।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



उदयन—क्या मैं श्रीमती राजपुत्रीजी को सम्मुख देखरहा हूँ ?

राजपुत्री—यही बात है, शिक्षक महोदय ! क्या मैं जान सकती हूँ कि आप कौन हैं ? क्या वर्तमान बंदी वत्सराज उदयन आप ही तो नहीं हैं ?

उदयन—यही बात है राजपुत्रीजी ! मैं तो आपके दर्शन पाकर आज कृतार्थ हो गया। न-जाने किस बुद्धि से केवल प्रणाम के प्रश्न पर मैंने आपसे मिलने में नाहीं कर दी थी। चाहे मुझे ही एक नहीं, सौ प्रणाम करने पड़ें। इस मिलन के वे सब निछावर हैं।

राजपुत्री—सम्राट्-शिरोमणे ! आपके दर्शन पाने को यदि एक नहीं, सहस्र प्रणाम करने पड़ें, तो भी मुझे सुख से स्वीकार है।

उदयन—अनेकानेक धन्यवाद ! अच्छा, अब यह तो बतलाइए कि यह कुबड़ी सखी का उपाख्यान, क्यों उठाया गया था, कुछ समझ में नहीं आता ?

राजपुत्री—जब आपने अपने ही कथनानुसार मेरे प्रणाम करने पर हठ किया होगा, और पूज्य पिता ने अपनी ही राजधानी में एक बंदी को मेरा प्रणाम करना योग्य न समझा होगा, तथा ओट से विद्योपार्जन का प्रश्न सोचा गया होगा, तब भी शंका हुई होगी कि एक बार राजकुमारी का अध्यापन अस्वीकृत कर चुकने पर संभवतः ओट से पढ़ने में भी आप प्रणाम का प्रश्न उठा बैठें। इसी से ऐसा हुआ होगा।

उदयन—विचार-धारा तो आपकी बहुत योग्य समझ पड़ती

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



है। आप केवल राजपुत्री होने से पूज्या नहीं हैं, वरन् बुद्धि-वृद्ध भी दिखलाई पड़ती हैं।

राजपुत्री—यह आपकी कृपा है कि एक साधारण प्रश्न पर इतना मान दे रहे हैं।

उदयन—अच्छा, यह तो बतलाइए कि हम दोनो के बीच का पर्दा तो हट चुका है। अब भविष्य में भी यह अध्यापन-कार्य चलेगा या कोई परिवर्तन संभव है?

राजपुत्री—इस प्रश्न का उत्तर पूज्य पिताजी की सम्मति के अनुसार होगा। मैं गुरुजनों की आज्ञा क्या, इच्छाओं के भी प्रतिकूल चलने की अभ्यस्त नहीं हूँ।

उदयन—आज्ञा-पालन तो पुत्र-पुत्रियों के लिये अत्यंत योग्य है। अच्छा, आपने मुझसे जो गान-वाद्य की शिक्षा पाई है, उसके अतिरिक्त अब तक क्या-क्या ज्ञानोपार्जन किया है?

राजपुत्री—साधारण पाठों की शिक्षा वृद्ध गुरुओं द्वारा मिल ही चुकी है। वैदिक शिक्षा भी थोड़ी-सी पाई है, तथा उपनिषदों अथच ब्राह्मण-ग्रंथों का न्यूनाधिक पठन हुआ है। गान और नृत्य के भी थोड़े-से अभ्यास बतलाए जा चुके हैं। जैसी योग्यता इन विषयों पर आपकी है, वैसा ज्ञान मुझे नहीं प्राप्त हुआ है। यदि भूलें न करती, तो आपके दर्शनों का लाभ भी न होता।

उदयन—विशेष भूल आपने नहीं की। जो विषय मैं बतला

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



रहा था, वह आपके वर्तमान ज्ञान को देखते हुए कुछ कठिन भी था।

राजपुत्री—धन्यवाद, सम्राट् महोदय!

उदयन—तब फिर आज के शेष पठन के विषय में क्या इच्छा है?

राजपुत्री—मैं तो समझती हूँ कि यद्यपि पाठ का समय अभी आधे से अधिक शेष है, तथापि पर्दे के उठ जाने से इसका क्रम बदल गया है। यदि आज्ञा हो, तो पाठ इसी समय से समाप्त किया जाय, तथा भविष्य के लिये इसका क्रम पूज्य पिता की आज्ञा तथा भवदीय रुचि पर निर्भर रहे।

उदयन—अभी क्या थोड़ी देर और वार्ता नहीं हो सकती? शीघ्रता क्या है?

राजपुत्री—समय तो अभी बहुतेरा शेष है, किंतु जैसा कि अभी बिनती कर चुकी हूँ, पठन-विधि के परिवर्तन से अब यह विषय पैतृक आज्ञा पर निर्भर हो गया है।

उदयन—है तो इस हठ में कुछ अनुदारता का भी अंश, किंतु नैतिक दृष्टि से ठीक है।

राजपुत्री—उदारता अथवा कृपा का प्रश्न तो अभी हम दोनो के संबंध में उपस्थित नहीं हुआ है, क्योंकि हम दोनो में से कोई भी शायद प्रार्थी का रूप ग्रहण न करे। शिक्षक और शिक्षिका-भर की बात है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



उदयन—कहना आपका काठिन्य-युक्त होकर भी है योग्य अवश्य। अच्छा, अब मैं जाता हूँ।

राजपुत्री—किसी प्रकार की खिन्नता तो चित्त में नहीं आ गई है? अपराध यदि कोई हो गया हो, तो क्षमा कीजिएगा। मैं अभी बुद्धि अथवा विद्या-वृद्ध नहीं हूँ।

उदयन—नहीं राजकुमारीजी! आपके कथनों में कोई अनौचित्य अथवा उदासीनता का भाव नहीं है। आपने जितने विचार प्रकट किए हैं, वे सब उत्कृष्टतम आचरण के उदाहरण माने जा सकते हैं। उनमें मैत्री का विशेष अंश-भर नहीं है, किंतु यह संबंध हम दोनो में अभी है नहीं, क्योंकि अपना भाव तो गुरु-शिष्या का-सा होना चाहिए।

राजपुत्री—नहीं सम्राट् महोदय! मैं आपकी शिष्या नहीं हूँ, केवल गान-वाद्य का थोड़ा-सा विषय आपसे जानने की उत्सुक हूँ। मैत्री का कोई रूप हम दोनो में आप ही के कथनानुसार अप्रासंगिक है। आशा है, आप फिर भी प्रसन्न होंगे। राज्य के अतिथि हैं ही। यदि मेरे आचरण में कोई कुभाव दिखाई दे, तो वय और ज्ञान-वृद्ध होने के नाते से आप सदैव शिक्षण दे सकते हैं।

उदयन—बड़ी कृपा, देवीजी! मैं आपके विचारों अथवा आचरण में उच्चतम भावों के अतिरिक्त कोई भी त्रुटि नहीं देखता। मेरा पहले का प्रश्न कुछ असंगत-सा हो गया था, जिसे भूल जाने की कृपा कीजिए।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



राजपुत्री—मैं अपना अनुदार भाव भी गर्हित अवश्य समझती हूँ। आप उसके लिये क्षमा कर दीजिएगा। गुरुजनों का आज्ञा-पालन कभी-कभी आत्मीय इच्छाओं या वासनाओं के प्रतिकूल भी पड़ जाता है, किंतु मान्य वही है।

उदयन—बहुत ही योग्य कथन हो रहे हैं, देवीजी! अब मैं पूर्णतया संतुष्ट हूँ।

इस प्रकार कथनोपकथन के पीछे सम्राट् महोदय अपने भव्य वाहन पर विराजकर प्रासाद को पधारे। इनकी इच्छा के अनुसार महामंत्री महोदय ने आकर इनसे साक्षात्-कार किया। यों बातें होने लगीं—

उदयन—दैव-वश आज मुझे ज्ञात हो गया कि मैं आपकी कुब्जा सखी को नहीं, वरन् स्वयं राजकुमारी वासवदत्ता को गान-वाद्य का शिक्षण दे रहा था। ओट से शिक्षण न तो यथोचित हो सकता है, और न अब संभव है। अतएव भविष्य के लिये आपके महाराजा की क्या इच्छा है, मैं यह जानना चाहता हूँ।

महामंत्री—(मुस्किराकर) कुब्जा सखी आपसे सीखकर उन्हें क्या सिखलाती? देव को पहले ही इतना समझ लेना चाहिए था। हमारे महाराज आदि से ही आपके द्वारा प्रकट रूप से उनकी शिक्षा चाहते थे। विघ्न तो आप ही के प्रणाम-संबंधी विचार से पड़ा। अब उस विषय में आपकी क्या इच्छा है?

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



उदयन—प्रणाम-संबंधी कोई आग्रह अब मैं नहीं करता।

महामंत्री—तब फिर विद्या-दान यदि चाहिए, तो करते जाइए। आप दोनों के सदाचरणों पर हमारे स्वामी का पूर्ण विश्वास है।

उदयन—तब मुझे भी स्वीकार है; केवल इतनी बात पूछनी है कि मेरे इस अनुचित बंधन की अवधि क्या कुछ भी नहीं है?

महामंत्री—देव को यहाँ किसी प्रकार का कष्ट तो है नहीं; फिर शीघ्रता क्यों की जाती है?

उदयन—क्या आप समझते हैं कि सम्राट्-पद के स्थान पर मुझे बंदी-जीवन रुचिकर होगा? कैसा आश्चर्य है?

महामंत्री—यह तो मैं जानता नहीं, किंतु देखता हूँ देव को सदैव प्रसन्न ही।

उदयन—भद्र पुरुषों को प्रत्येक दशा में अपने को प्रसन्न बनाए रखना चाहिए।

महामंत्री—तब फिर इस विषय पर मुझसे प्रश्न करना अनावश्यक है, क्योंकि यह उज्जयिनी-पति के विचारों पर निर्भर है। राजपुत्री का शिक्षण समाप्त होने पर शायद आप स्वतंत्र कर दिए जायँ।

उदयन—जैसी आप लोगों की इच्छा। इतना मुझे तो

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



भी कहना पड़ता है कि हूँ मैं आपके आचरणों से प्रसन्न, और धन्यवाद भी देता हूँ।

महामंत्री—एतदर्थ अनेकानेक धन्यवाद !

महामंत्रीजी सम्राट् से इस प्रकार वार्तालाप करके नत-मस्तक होकर प्रस्थित हो गए, और सम्राट् उदयन यथापूर्व राजपुत्री को शिक्षा देते रहे। एक दिन इन दोनो में यों वार्तालाप हुआ—

उदयन—राजपुत्री महोदया ! मुझे कुछ आश्चर्य-सा है कि आपके पूज्य पिता ने हम दोनो के उस दिनवाले व्यवहार के पीछे यह अध्यापन-कार्य पूर्वानुसार ही चलने दिया, वरन् उससे भी विशेष स्वच्छंदता के साथ।

राजपुत्री—उन्होंने तो पहले से ऐसा ही विधान योग्य समझा था, और पर्दे का व्यवहार आपके प्रणामवाले हठ के कारण ही युक्ति-पूर्वक चलाया गया था।

उदयन—क्या नवयुवकों के स्वच्छंदतापूर्वक मिलने में कोई शंका का प्रश्न नहीं उठता ?

राजपुत्री—यह तो दोनो के आचरणों से संबंध रखता है। उन्हें अपनी कन्या पर पूर्ण विश्वास है, तथा आपके ऊपर भी। तब फिर शंका का भाव कहाँ से उठे ?

उदयन—क्या एक प्रश्न गुप्त प्रकार से भी पूछ सकता हूँ ?

राजपुत्री—किसी अनुचित विषय पर तो नहीं है ?

उदयन—एक ओर तो पूर्ण विश्वास का भाव है, और उसी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



के साथ ऐसा विचार भी उठ रहा है। क्या आपका पिता के विश्वास से मतैक्य नहीं है?

राजपुत्री—क्षमा कीजिएगा, सम्राट् महोदय! अच्छा, पूछिए, क्या जानना चाहते हैं?

उदयन—धन्यवाद! पूछना केवल इतना है कि आपके संबंध में अब तक किसी के साथ क्या कोई वैवाहिक विचार भी उठा है या नहीं?

राजपुत्री—यह कौन बड़ा गुप्त विषय है? कन्या जात-मात्र होकर किसी योग्य वर को देय होती है। फिर भी अब तक मेरे संबंध में ऐसा प्रश्न नहीं उठा है; कम-से-कम मेरी जान में ऐसा नहीं हुआ है। अभी मेरी अवस्था भी छोटी समझी जा सकती है।

उदयन—इस उत्तर से मुझे कुछ आश्चर्य अवश्य होता है।

राजपुत्री—क्यों?

उदयन—यदि मेरी कोई कन्या इतनी बड़ी होती, तो मैं उसके विवाहार्थ चिंता करने लगता।

राजपुत्री—सुनती हूँ कि अभी तो आपकी अवस्था २४ वर्षों की ही है, फिर इतनी बड़ी कन्या आपके कहाँ से होती? मेरे बराबर अवस्था की पुत्री पाकर आप प्राय: ४३वें वर्ष में होते, और ऐसी दशा में वर्तमान अवस्थावाली से बुद्धि भी प्रगाढ़तर होती, अथवा कुछ अंतर तो होता ही।

उदयन—है तो आपका विचार पुष्ट; अच्छा, क्या जान

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



सकता हूँ कि कन्याओं की वैवाहिक स्वतंत्रता के विषय में आपके कैसे विचार हैं ?

राजपुत्री—आज मेरी एक सखी कुछ अस्वस्थ है, और मैं स्वभावशः उसके लिये बहुत चिंतित हूँ। यदि आज्ञा हो, तो आज का अध्ययन अब समाप्त कर दूँ।

उदयन—क्या उस सखी पर आपकी विशेष कृपा रहती है ?

राजपुत्री—ऐसी तो कोई मुख्यता नहीं है। मैं अपनी सभी सखियों के लिये सदैव चिंतित रहा करती हूँ।

उदयन—यह जानकर मैं बहुत प्रसन्न हुआ कि सभी सखियों से आपका व्यवहार बहुत श्रेष्ठ रहता है। क्या अध्यापकों पर भी ऐसी ही कृपा हो सकती है ?

राजपुत्री—कहाँ सखी और कहाँ अध्यापक ! वे तो पितृ-तुल्य पूज्य होते हैं।

उदयन—अहोभाग्य ! अच्छा, फिर आप जा सकती हैं।

एक दिन फिर अध्यापन के पीछे इन दोनो में वार्तालाप होने लगा—

राजपुत्री—आज हम लोगों के पास कुछ समय है, अतएव यदि इच्छा हो, तो उस दिन के प्रश्न पर उत्तर दिया जाय। उस दिन शीघ्रता-पूर्वक बातचीत समाप्त करने की मैं क्षमा माँगती हूँ।

उदयन—क्षमा की कोई बात नहीं है, राजपुत्री ! उस दिन आप चिंतित विशेष हो गई थीं, जिससे ऐसे उत्कट प्रश्न पर

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



ठीक विचार-विनिमय होना था भी कुछ कठिन। अच्छा, अब आज बतलाने की कृपा कीजिए कि विवाहों के संबंध में आपके मतानुसार कन्याओं को कहाँ तक स्वतंत्र होना चाहिए ?

राजपुत्री—यह तो एक दुस्तर प्रश्न है, जिसका उत्तर प्रत्येक पिता और दुहिता के संबध पर निर्भर है। प्रायः सदैव माता-पिता कन्याओं के निमित्त श्रेष्ठतम वर खोजने में व्यग्र रहा करते हैं। ऐसी दशा में कन्याओं को स्वतंत्राचरण की आवश्यकता न पड़नी चाहिए। स्वयं शकुंतला ने पिता की आज्ञा के लिये न रुककर विशेष शीघ्रता से काम ले लिया, जिसके लिये चिर-काल-पर्यंत उन्हें कष्ट भोगना पड़ा।

उदयन—महर्षि कण्व ने तो उनकी कार्यवाही की निंदा की न थी ; जो कष्ट हुआ, वह आकस्मिक कारणों से हो पड़ा।

राजपुत्री—फिर भी उन कारणों का मूल गांधर्व विवाह ही था।

उदयन—मैं तो भी उन्हें विशेषतया आकस्मिक मानता हूँ। अच्छा, यह बतलाने की कृपा कीजिए कि यदि माता-पिता अच्छा वर न पा सकें, अथवा स्वार्थादि के कारण अनुचित वर को कन्या देते हों, तो कन्या के अधिकार कैसे हों ?

राजपुत्री—स्वार्थ-वश तो माता-पिता प्रायः ऐसा करते नहीं ; हाँ, अन्य कारणों से कभी-कभी ऐसा हो जाता है, जैसा कि देवी रुक्मिणी के संबंध में युवराज रुक्म के अनुचित दबाव से होता था। ऐसी दशा में देवीजी की कार्यवाही को निंद्य कौन कह सकता है ?

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



उदयन—देवीजी के इन विचारों से मैं भी बहुत कुछ सहमत हूँ।

राजपुत्री—क्या कुछ मतभेद भी शेष है?

उदयन—देवीजी की सम्मति ऐसी समझ पड़ती है कि प्रत्येक दशा में जैसी घटनाएँ हों, वैसे ही अधिकार भी माने जा सकते हैं।

राजपुत्री—यही बात है, सम्राट्!

उदयन—तब फिर कोई मतभेद नहीं रह जाता है।

राजपुत्री—इन प्रश्नों से सम्राट् का प्रयोजन क्या है, सो समझ में न आया। केवल साधारण विचार की बात है, अथवा कोई इच्छा भी निहित है?

उदयन—है तो एक इच्छा भी निहित, किंतु विना देवीजी का आशय जाने उसके प्रकटीकरण में संकोच बाधक होगा ही।

राजपुत्री—अब तो वह प्रकट हो ही गई, चाहे निश्चय-पूर्वक वर्णन कीजिए या नहीं।

उदयन—तब उत्तर से भी क्या कृतार्थ किया जा सकता हूँ?

राजपुत्री—अवस्था, साम्राज्य-गौरव, वीरता, नृत्य, गान, अभिनयादि की पटुता आपकी भली भाँति जान ही चुकी हूँ, ऐसी दशा में कोई इच्छा प्रकट करना मेरा काम नहीं है।

उदयन—यदि मैं कृपा-दान की प्रार्थना करूँ, तो क्या निर्णय होगा?

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



राजपुत्री—मैं तो अपनी ओर से सहमत हूँ ही, जो बात मेरे उत्तर से भी प्रकट है, किंतु बिना माता-पिता की आज्ञा के कह क्या सकती हूँ ? उनका कोई अनुचित व्यवहार तो सामने आया नहीं ?

उदयन—व्यवहार का अनौचित्य तो प्रकट ही है। आपसे पूरी कथा निवेदित करता हूँ।

राजपुत्री—अवश्य कीजिए; बड़ी कृपा होगी।

उदयन—आपको पूरा हाल ज्ञात नहीं है। बात यह हुई कि अपने संधिविग्रहिक द्वारा आपके पिता ने मेरे साथ आपके विवाह की प्रार्थना कराई।

राजपुत्री—ऐसा ! बड़े आश्चर्य की बात है। यह कब हुआ ?

उदयन—इसको थोड़े ही मास हुए हैं। मैं यह संबंध चाहता था, क्योंकि महर्षि जमदग्नि के आश्रम में ही मैंने आपके रूप, शील, गुणों आदि की बड़ी प्रशंसा सुन रक्खी थी। फिर भी मेरे मंत्रियों ने आपके पिता के मानस को निंद्य मानकर ऐसे की कन्या से संबंध उचित न समझा, और राज्य की ओर से मेरे आज्ञानुसार बहाना कर दिया गया, जिसका आशय अपमान बचाते हुए नकारात्मक था।

राजपुत्री—जब यह बात है, तब आज की प्रार्थना का अर्थ समझ में नहीं आ रहा है।

उदयन—बात तो प्रकट ही है। तब तक मैं स्वयं आपको नहीं जानता था, और ऐसे पिता की कन्या से संबंध

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



अनुचित समझता था। अब स्वयं निकट से जानकर सर्व-गुण-संपन्ना मानता हूँ, तथा यह समझने लगा हूँ कि ऐसी गुणवती, रूप-राशि को पत्नी-रूप में पाकर कृतार्थ हो जाऊँगा।

राजपुत्री—बात तो आपकी समझ में आ गई, और मेरा ऐसा मान करने पर शतशः धन्यवाद भी देती हूँ; फिर भी आप मेरे पिता का अपमान कर चुके हैं, तथा आज भी कर रहे हैं। ऐसी दशा में आपसे वैवाहिक विचार को पुष्ट कैसे कर सकती हूँ? आप उन्हीं से प्रार्थना कीजिए। उनकी स्वीकृति में संशय मुझे नहीं है।

उदयन—यही तो कठिनाई है। जब मैं उन्हें निंद्य समझता हूँ, तब प्रार्थी-रूप से उनके सम्मुख कैसे उपस्थित हो सकता हूँ?

राजपुत्री—निंदा के कुछ कारण बतलाइएगा क्या?

उदयन—उनके पिता ने अपने ऊपर विश्वास करनेवाले स्वामी को मारकर मंत्रिपद से बहुत ही गर्हित लाभ उठाया।

राजपुत्री—यह मैं भी मानती हूँ, किंतु उन्होंने राज्य तो न किया, वरन् अपने निर्दोष पुत्र-रत्न को राजा बनाया। उनकी कार्यवाही में दोष था ही, किंतु पुत्र तो निर्दोष था। पिता के प्रतिकूल अनुचित विचार रखते हुए भी जैसे नैकट्य-वाले अनुभव से आप स्वयं मुझे निर्दोष समझते हैं, वैसे ही उन्हें अपने पिता के पाप से निर्लिप्त मान सकते हैं।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



उदयन—यह तर्क आपका मैं मान्य समझता हूँ, किंतु मेरे मंत्रियों के विचार जो उनके प्रतिकूल हैं, उनका क्या उत्तर है ?

राजपुत्री—आपके मंत्री मूर्खता-वश कुछ भी सोच सकते थे। जब तक पूज्य पिता का कोई आचरण निंद्य न समझा जाय, तब तक उनके प्रतिकूल कोई भी आरोप अमान्य होगा।

उदयन—इस तर्क में भी बहुत कुछ सार है, किंतु मंत्रियों का मत मेरे प्रतिकूल उज्जयिनी-पति के अभद्रत्व-पूर्ण आचरण से समर्थित भी तो हो गया है।

राजपुत्री—आपने उनका निरादर किया, जिससे यदि उन्होंने आपका भी किया, तो क्या बेजा था ?

उदयन—यदि शुद्ध युद्ध में मुझे पराजित करके ऐसा करते, तो कोई बात न थी ; किंतु उन्होंने धोखा देकर मुझे क्यों स्ववश किया ?

राजपुत्री—युद्धों में ऐसा हुआ ही करता है।

उदयन—मेरा-उनका कोई युद्ध चल कब रहा था ?

राजपुत्री—जब आप मुझे चाहते हैं, और यह भी जानते हैं कि वह कन्यादान करने को प्रस्तुत हैं, तब उनसे याचना न करनी हठवाद-मात्र दिखेगा।

उदयन—यह मत अनुभव-शून्यता का है। जब एक बार मैंने उनका प्रस्ताव अस्वीकृत कर दिया, तब मुझे धोखे से स्ववश करके वही बात स्वीकार करानी क्या उनकी या मेरी महत्ता के योग्य है ? क्या यही क्षत्रियत्व है ?

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



राजपुत्री—है तो नहीं, तब आप चाहते क्या हैं ? क्या मैं माता या पिता से याचना करके उनके द्वारा आपसे नत-भाव-पूर्ण प्रार्थना कराऊँ ?

उदयन—जब तक मैं पराधीन हूँ, तब तक बंधन की दशा में उनकी कितनी भी विनीत या विनम्र प्रार्थना हो, वह आज्ञा का रूप रक्खेगी। मेरे द्वारा उसके स्वीकार में कोई शोभा नहीं होगी।

राजपुत्री—क्या मैं उनसे बिनती करके आपको बंधन-मुक्त करा दूँ, और कौशांबी में उनकी विनम्र प्रार्थना भेजी जाय ?

उदयन—मैं उनकी कृपा से बंधन-मुक्त होना न चाहूँगा।

राजपुत्री—समझ पड़ता है, साम्राज्य का पूर्ण गर्व अब तक आपके चित्त से नहीं गया है। तब कितने दिन बंदी रहिएगा ?

उदयन—मेरे मंत्री लोग छुड़ाने का कोई-न-कोई प्रयत्न करेंगे ही। जब अपने पौरुष से छूटूँगा, और बल-पूर्वक आपको ले जाऊँगा, तब प्रसन्न हूँगा।

राजपुत्री—यदि मैं बल-पूर्वक जाना न चाहूँ ?

उदयन—प्रेम-पाश से बद्ध होकर आपसे सभी प्रकार से प्रार्थनाएँ करूँगा, किंतु शत्रु-मंडली से नहीं।

राजपुत्री—तब आप चाहते क्या हैं ?

उदयन—अभी अध्यापन-कार्य इसी प्रकार चलता रहे। जब मेरे बंधन-मुक्त होने का समय आएगा, तब युक्ति-पूर्वक

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



आपको भी साथ ले चलने का प्रयत्न करूँगा। आशा है, मेरा ऐसा प्रेम-पूर्ण अनुरोध आप अमान्य न समझेंगी।

राजपुत्री—मानती तो मैं नहीं, किंतु जब देखती हूँ कि आपके प्रतिकूल मेरे पिता की ही कार्यवाही अनीति-गर्भित है, तब मान लेती हूँ। इतना अवश्य है कि ऐसे हठ से आप अपने कष्टों की अवधि बढ़ा रहे हैं, तथा अपनी भावी रक्षा की भी संशय-पूर्ण परिस्थिति पर समुचित विचार नहीं करते।

उदयन—मैं समझता हूँ कि यहाँ की स्थिति की अवधि बढ़ाने में मेरे ऊपर कोई जोखिम नहीं है। उनके आचरण से सिद्ध-सा है कि उन्होंने अपनी वैवाहिक इच्छा पूर्ण करने ही को ऐसा किया है, नहीं तो भेद खुल जाने के पीछे भी यह अध्यापन-कार्य क्यों चलाते जाते? मुझे न तो कोई खटका दृष्टिगोचर होता है, न बंधन की अवधि में विशेष वृद्धि। तो भी अपने हठ के कारण आपसे क्षमा का प्रार्थी हूँ। जो बातें मैंने आपके पिता के प्रतिकूल कही हैं, उनके लिये भी आपसे क्षमा माँगता हूँ, किंतु उनसे नहीं।

राजपुत्री—ऐसी ही कृपा बनाए रहिए।

उदयन—इतनी और प्रार्थना किए लेता हूँ कि हम दोनो के ऐसे विचारों का लेश-मात्र ज्ञान न तो आपके किसी कुटुंबी को होने पाए, न सखी अथवा किसी राजसेवक आदि को। अपना अध्यापन-कार्य भी ऐसा चलता रहे, मानो कोई बात नहीं है। इसके द्वारा आपके दर्शन भी नित्य मिलते रहेंगे।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



राजपुत्री—जैसी आज्ञा, सम्राट महोदय ! दर्शनों की इच्छा तो मेरी भी परम बलवती है ।

इस प्रकार मतैक्य के पीछे राजपुत्री का अध्ययन भी आगे यथापूर्व चलता रहा । किसी को कोई संदेह न होने पाया ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# पंचम परिच्छेद

## बंधन-मुक्ति और विवाह

जब गज-मृगया से पलटने के संबंध में सम्राट का पता बहुत कुछ ढूँढ़-खोज के पीछे भी न लगा, तब मंत्रिप्रवर यौगंधरायण और रूमएवान ने कौशांबी में बैठकर पता लगाने के और भी विशेष प्रयत्न किए। सबसे पहले इनका संदेह उज्जयिनी-पति पर ही गया, क्योंकि उन्हीं की प्रार्थना अस्वीकृत होने से क्रोध का भाव जग सकता था। अतएव चाटों, भटों आदि के द्वारा अति शीघ्र जाँच कराने से प्रकट हो गया कि सम्राट् वहाँ बंधन में हैं, किंतु बहुत कुछ सन्मान-पूर्वक। अब साम्राज्य का प्रबंध इतर योग्य मंत्रियों पर डाला गया, तथा यह भी डौल हुआ कि किसी पर यह प्रकट न होने पाए कि ये दोनो मंत्री कोशांबी में प्रस्तुत नहीं हैं। ऐसा संदर्भ स्थापित हुआ, मानो ये दोनो अपने हर्म्यां ही में बैठ-कर काम चला रहे थे। इतना हो चुकने पर ये दोनों चाटों, भटों आदि की सहायता से रूप बदलकर उज्जयिनी पहुँचे। वहाँ इन दोनो ने राज्य व्यवस्था के ढंगों का छिपे-छिपे अध्य-यन किया। यौगंधरायण संन्यासी बनकर भिक्षा माँगते हुए

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



इधर-उधर फिरते रहे, तथा रुमएवान ज्योतिषी बने। इनकी मूछें और श्मश्रु बड़ी-बड़ी थीं, जिन्हें इन दोनो ने मुड़ा डाला। मंत्रियों के ओज-पूर्ण रूपों से संन्यासी तथा ज्योतिषी के रूपों में यों भी बड़ा अंतर था। अतएव इनके पहचाने जाने का भय न था। राज्य के हाथियों पर पूर्ण विचार करके इन्होंने जान लिया कि भद्रावती नाम की हस्तिनी चलने में बड़ी तीव्र थी, तथा साँकर के प्रयोग से शत्रुओं के मारने में भी पटु थी। उसके गजपालक से मेल उत्पन्न करने की चिंता यौगंधरायण को धन-व्यय, प्रेम, शिक्षा आदि किसी प्रकार से हुई। इन्होंने भी गजपालकों में गुरुपन का रूप ग्रहण करके विशेषतया भद्रावतीवाले से प्रेम-पूर्ण व्यवहार बढ़ाया। अपने हस्ती-संबंधी प्रचुर ज्ञान से भी उसे प्रसन्न करने के प्रयत्न किए। उसकी स्त्री दैव-वश कठिन ज्वर से आक्रांत थी। उसकी विनम्र प्रार्थना पर आपने धार्मिक महत्ता की आड़ में अपने वैद्यक-संबंधी ज्ञान से उसे चंगी कर दिया। तब अत्यंत प्रसन्न होकर वह इनसे श्रद्धा-पूर्ण वार्तालाप करने लगा।

गजपालक—संन्यासी महात्मन् ! आप बड़े ही सज्जन और सिद्ध योगी हैं। कहिए, यहाँ किस ओर से घूम पड़े ?

संन्यासी—बच्चा ! हम लोग तो ईश्वर का भजन किया करते हैं, और गुरुजी की कृपा से जो दो-चार बूटी, गोली, झाड़-फूँक आदि जान गए हैं, उन्हा से आप-सरीखे सज्जनों

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



को लाभ पहुँचाते हैं। हमारे पास कोई भारी विद्या इत्यादि नहीं है; जो कुछ है; वह गुरुजी की कृपा एवं आशीर्वाद है।

गजपालक—बाबाजी! आप बड़े ही पहुँचे सिद्ध हैं। यदि इच्छा हो, तो कभी-कभी भिक्षार्थ मेरे ऊपर भी कृपा कर दिया कीजिए।

संन्यासी—बच्चा! हम लोग किसी पर बोझ नहीं डाला करते हैं। गुरुजी की आज्ञा स्वावलंबन की है। उन्हीं के आशीर्वाद से खाने-भर को पृथ्वी माता ही से मिल जाता है। धनादि के छूने की मुझे तो शास्त्रीय आज्ञा संन्यासी जीवन के कारण है नहीं, किंतु एक-दो अनुयायी भी मिल गए हैं, जो संन्यासी न होने के कारण धनादि का स्वतंत्र रीति से व्यवहार कर सकते हैं। उन्हीं की सहायता से भोजन, वस्त्रादि की सुविधा बनी रहती है, और गुरुवर की आज्ञा किसी पर बोझ न डालने की सधती जाती है।

गजपालक—आप बाबाजी! बड़े उच्च मानस-पूर्ण महात्मा हैं। तो भी मेरे ऊपर जैसी अनुकंपा कर चुके हैं, उसके कारण यदि दो-चार बार मेरे यहाँ प्रसाद पाने की कृपा कर सकें, तो बड़ा ही अनुग्रह हो, और मुझ पर कोई बोझ भी न पड़े।

संन्यासी—इसमें मुझे क्या आपत्ति हो सकती है, बच्चा?

इस प्रकार स्वीकृति देने से गजपालक ने इन्हें दो-चार

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



बार स्वसदन में भोजनार्थ बुलाया, और यह प्रेम-पूर्वक गए भी। उसकी स्त्री ने जब जाना कि बाबाजी पृथ्वी से धन प्राप्त करने की विद्या में भी दक्ष हैं, तब अपने पति से इसकी भी प्रार्थना करने की इच्छा की। उन दोनो की इस अभिलाषा पर आपने कहा—

संन्यासी—बच्चा! मुझे जो कुछ धन मिलता है, वह केवल गुरु के प्रसाद से। मुझमें इसकी कोई विद्या नहीं है।

गजपालक—तब मेरे ऊपर यह कृपा कैसे हो सकती है? आजकल मुझे भी अपनी कन्या के विवाहार्थ संभार करना है, जिस पुण्य कार्य के लिये धन की आवश्यकता है।

संन्यासी—बच्चा! ऐसे कार्य के लिये पृथ्वी-माता भी धन द्वारा सहायता कर देती हैं, किंतु उनकी इच्छा ऐसी रहती है कि जो लोग कोई भारी परोपकार करें, उन्हीं के साथ वह उपकार करेंगी। मेरा इसमें कोई मुख्य वश नहीं है।

गजपालक—किस प्रकार का परोपकार पृथ्वी-माता चाहेंगी?

संन्यासी—बेटा! एक मेरा शिष्य सपत्नीक बाहर जाना चाहता है। उसे राज्य निकलने नहीं देता। यदि उसके साथ सहायता कर सको, तो पृथ्वी-माता से असंख्य धन प्राप्त हो सकता है।

गजपालक—है तो यह कार्य राज्य के प्रतिकूल, किंतु आप-जैसे महात्मा की आज्ञा पर मैं कर सब कुछ सकता हूँ। अपना कुटुंब युक्ति-पूर्वक राज्य के बाहर भेज रक्खूँगा।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



संन्यासी—मेरी कोई आज्ञा नहीं है, बच्चा ! मैं तो एक धार्मिक व्यक्ति हूँ, और ऐसे कामों में पड़ता भी नहीं। किंतु ध्यान-धारणा से ज्ञात हुआ है कि विचित्र परिस्थितियों के कारण यह भी एक धर्म-कार्य हो गया है। यदि आप इसमें सहायता कर सकें, तो धन-प्राप्ति के अतिरिक्त पुण्य-लाभ भी न्यून न हो, किंतु यदि कोई धोखा दें, तो कौटुंबिक हानि भी कम न होगी। अपना मन दृढ़ कर लीजिए।

गजपालक—मेरा मन पूर्णतया दृढ़ है। ऐसे महात्मा की आज्ञा न मानने का पातक मैं नहीं कमाना चाहता, न किसी प्रकार योगियों से छल का व्यवहार करके अपना ही कुटुंब ध्वस्त कराऊँगा।

संन्यासी—यदि पक्के प्रकार से स्वीकृति दीजिए, तो एक सहस्र निष्क दो ही दिनों में मिल सकते हैं, तथा और दो सहस्र काम हो जाने पर।

गजपालक— बाबाजी के पैरों पड़कर) बड़ी ही कृपा हुई, महात्माजी !

इस प्रकार गजपालक को धन-मान द्वारा साधकर आप एक बार सम्राट् उदयन के मार्ग में खड़े हुए, और उन्होंने इन्हें संन्यासी के रूप में भी तुरंत पहचान लिया। दोनो के मुखों पर एक मंद हास्य नाच गया। अनंतर धार्मिक ज्ञान और यौगिक बल दिखलाकर आपने महामंत्री को

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



भी प्रसन्न किया। मंत्री से मान-प्राप्ति का हाल जानकर सम्राट् उदयन ने भी उनसे इन्हें देखने की प्रार्थना कराई, जो बात उन्होंने तुरंत मान ली। अनंतर महामंत्री ने इनसे इच्छा प्रकट की कि यदि कोई हानि न हो, तो सम्राट् से भी आप एक बार मिल लें। इस पर यों बात हुई—

संन्यासी—आर्य! मैं तो एक सन्यासी हूँ, और उच्च समाज में सम्मिलित होने की न तो इच्छा रखता हूँ, न योग्यता। आपसे भी न मिलता, किंतु ब्राह्मण समझकर आपकी इच्छा टाल न सका। सम्राट् उदयन का साक्षात्कार किसी प्रकार योग्य नहीं है। एक तो वह सम्राट् हैं, दूसरे, ब्राह्मण भी नहीं। ऐसी दशा में उनसे मिलना गुरु की आज्ञा के भी प्रतिकूल हो सकता है। आशा करता हूँ, आप मुझे क्षमा कर सकेंगे—

महामंत्री—संन्यासीजी महोदय! द्विजों से मिलने में महात्मा लोग प्राचीन काल से आगा-पीछा नहीं करते आए हैं। इनके पूर्व-पुरुष अर्जुन, युधिष्ठिर आदि से स्वय वेदव्यास से वार्तालाप होते थे।

संन्यासी—वेदव्यास वेदों के सपादक तथा प्रसिद्ध महात्मा होकर भी थे तो गृहस्थ; कुछ संन्यासी तो थे नहीं। फिर प्रत्येक संन्यासी भी ऐसे मिलनों से नाहीं नहीं करता, केवल मेरे गुरु ने राजाओं तथा महत्त्व-पूर्ण अब्राह्मणों क साक्षात्कार रोक रक्खे हैं।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



महामंत्री—अच्छा, आजकल तो वह सम्राट् न होकर बंदी-मात्र हैं; उनसे मिलने की बात आपकी गुरुवरवाली आज्ञा के भी प्रतिकूल नहीं पड़ती।

संन्यासी—आर्य ! हैं आप तर्क में बड़े प्रबल। इस वाक्य का उत्तर मेरे पास नहीं है। यदि आप हठ करें, तो अब मुझे आपत्ति क्या है ?

महामंत्री—तब मेरी बिनती मानकर उन्हें भी दर्शन दे दीजिए।

संन्यासी—यदि वह एकाधिक बार मिलना चाहें, तो ?

महामंत्री—दो-चार बार तक मिलने में दोप नहीं है। यदि अधिक के लिये कहें, तो मेरी आज्ञा का बहाना कर दीजिएगा। आजकल उनके पास समय बहुत है। इससे वह बातें विशेष करते हैं।

संन्यासी—अच्छा, एक निबंध और किए लेता हूँ कि यदि मुझसे मिलना चाहें, तो मैं एकांत में वार्तालाप करूँगा, जैसे कि आपसे हो रहा है। किसी अन्य के सामने बात न होगी। चाहता तो यह हूँ कि उनके साथ वार्तालाप के समय स्वयं आर्य भी प्रस्तुत रहें, क्योंकि आपके सौजन्य से मैं बहुत प्रभावित हो चुका हूँ, और बिना भवदीय प्रार्थना के उनसे मिलता भी नहीं।

महामंत्री—धन्यवाद, संन्यासीजी महोदय ! दुःख है कि कार्याधिक्य से मेरे पास समयाभाव रहता है, नहीं तो उनसे

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



आपके वार्तालाप का आनंद मैं भी उठाता। एकांतवाले आपके हठ का रक्षण मेरे कहने से वह करेंगे ही, ऐसा मुझे निश्चय है।

संन्यासी—तब फिर उनसे साक्षात्कार का प्रबंध करा दीजिए, यद्यपि ऐसे कठिन अवसरों से मैं दूर ही रहना चाहता हूँ। धर्म-पालन तथा राजसभाओं में सम्मिश्रण, ये दो प्रतिकूल बातें हैं, आर्य!

महामंत्री—है तो ऐसा ही। मैं आपको कष्ट अधिक न दूँगा।

इस प्रकार महामंत्री को मूर्ख बनाकर संन्यासीजी महोदय उचित अवसरों पर दो-तीन बार सम्राट् उदयन से एकांत में मिलने में समर्थ हुए। इस प्रकार बातें हुईं—

उदयन—संन्यासीजी महोदय! आपके दर्शन पाकर अत्यंत प्रसन्न हुआ। कहिए, किन युक्तियों से मुझसे एकांत में मिलने में समर्थ हुए?

संन्यासी—काम आपका पूरा बना चुका हूँ। कौशांबी में राज्य-प्रबंध पूर्ण औचित्य के साथ चल रहा है। यहाँ महामंत्री की मुझ पर विशेष श्रद्धा हुई, जिससे उन पर कृपा करके आपसे मिलने को सम्मत हुआ, सो भी केवल एकांत में मिलन के निबंध पर।

उदयन—ऐसे-ऐसे महात्मा कहीं किसी के सम्मुख वार्तालाप करते हैं। राजाओं आदि से मिलने में उनका धार्मिक व्रत भंग हो जाय।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



संन्यासी—यही तो बात है। मैं क्या करता, गुरुओं की आज्ञा से विवश था।

उदयन—सो तो है ही।

संन्यासी—सुना, यहाँ आपने राजकन्या से संबंध बहुत बढ़ा रक्खा है। यह क्या बात हुई? इसी निमित्त तो चंड-प्रद्योत ने आपको धोखा देकर पकड़वाया था। आपके आचरणों से उसकी कपट-पूर्ण आकांक्षा सफल-सी हुई जाती है।

उदयन—इसमें संदेह नहीं है, काकाजी! किंतु राजपुत्री को कई दिन निकट से देखकर मैं उसे न केवल पूर्णतया निर्दोष, वरन् बड़ी ही उच्च मानस-युक्ता पाता हूँ। रूप-गुण उसमें अथाह हैं ही। आशा है, अब आपकी भी सम्मति मिल जायगी।

संन्यासी—जब आपने उसे चिरकाल-पर्यंत अति निकट से देखकर पूर्णतया ग्रहण योग्य पाया, तब मैं अब विरोध करना भी उचित नहीं समझता। यह सोचता हूँ, उससे आप वचन-बद्ध भी हो चुके होंगे।

उदयन—सो तो हो ही चुका है, आर्य!

संन्यासी—क्या उज्जयिनी-पति से बात होकर यह विषय निर्णीत किया जाय?

उदयन—उसने मुझे धोखा देकर बंदी बनाया है। अब मैं वासवदत्ता को युक्ति-पूर्वक ले जाना चाहता हूँ; उसके पिता से माँगकर विवाह नहीं चाहता।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



संन्यासी—तब तो प्रेम की पूर्णता में भी आपने साम्राज्य का गौरव स्थापित रक्खा। फिर युक्ति क्या की जाय?

उदयन—इसका निर्णय आप और रुमण्वान पर है।

संन्यासी—उन्होंने राजदरबार में प्रवेश करके अपने ज्योतिष-संबंधी ज्ञान का माहात्म्य फैलाया है। केवल मुखावलोकन से लोगों की शुद्ध जन्मपत्रियाँ बना-बनाकर भी राजसभा को स्तंभित किया है। भूतकाल-गर्भित भविष्य-भाषण भी अच्छे-अच्छे किए। उनकी सम्मति से राजपुत्री वासवदत्ता एक ऐसे स्थान पर देवी का पूजन करने दो ही चार दिनों में जानेवाली है, जो उज्जयिनी-राज्य की सीमा पर है। मैंने यहाँ की तीव्रतम हस्तिनी भद्रावती के गजपालक को भी साध रक्खा है। उसी पर चढ़कर राजकन्या पूजनार्थ जानेवाली है। आपका भी युक्ति-पूर्वक वहाँ पहुँचाना होगा। उसी स्थान से थोड़ी दूर पर अपनी कुछ सेना लगी हुई है। उसी हस्तिनी पर आप भी राजकन्या के साथ गज-वशीकरण-विद्या के बल पर बैठ लीजिएगा, और गजपालक मेरे इच्छानुसार उसे अपनी सेना की ओर भगा ले जायगा। यही युक्ति पक्की कर ली गई है।

उदयन—क्या आप लोग पहले ही से जान गए थे कि मुझे राजकन्या को ले जाना है?

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



संन्यासी—आपके उससे प्रेम का गुप्त समाचार मैंने युक्ति-पूर्वक प्राप्त कर लिया था। इसीलिये सब प्रबंध बाँध लिया गया।

उदयन—तब मुझे किस प्रकार ले चलिएगा?

संन्यासी—आपको यहाँ से आधी रात को निकाल ले जायँगे। उस काल के रक्षक पश्चिमी फाटक पर रहते हैं, उन्हें मिला लिया गया है। यहाँ अस्वस्थता का बहाना पहले से कर लिया जायगा। तीव्र गतिवाले आठ-दस घोड़े ठीक हो चुके हैं। उन्हीं पर चढ़-चढ़कर रुमएवान और कुछ सहायकों के सहित मैं आपके साथ रहूँगा। वह देवी का स्थान एकांत स्थल है, और छिपने योग्य वहाँ कुछ जंगल हैं। सब काम निर्विघ्नता-सहित पूर्ण हो जाने की आशा है।

उदयन—तब फिर प्रबंध कीजिए। मैं राजपुत्री से सब बातों का निश्चय कर लूँगा।

इस प्रकार वार्तालाप करके जब महामंत्री यौगंधरायण पूरा संभार पक्का करने को चले गए, तब सम्राट् ने इधर राजपुत्री से वार्तालाप आरंभ किया—

सम्राट्—राजकुमारीजी! जैसा मैंने आपसे एक दिन कहा था, अब मेरे यहाँ से निकल जाने का पूरा डौल डाला जा चुका है, अब आपका क्या कहना है?

वासवदत्ता—प्रबंध तो आपके सहायकों ने अति शीघ्र स्थिर कर लिया। मुझसे क्या पृच्छा होती है?

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



सम्राट्—यह अच्छी बात कही। आपको भी मेरे साथ निकल चलना है या नहीं? क्या उस दिन इस विषय में निश्चय नहीं हो चुका था?

वासवदत्ता—निश्चय तो हो चुका है, किंतु फिर भी बिनती करती हूँ कि अनावश्यक जोखिम क्यों बुलाई जाय? जब काम यों ही हो सकता है, तब एक छोटी-सी बात पर संदेह-पूर्ण मार्ग पर क्यों अग्रसर हुआ जाय? चलने को आपके साथ मैं प्रत्येक दशा में सन्नद्ध हूँ। केवल खटके की बात बचाना चाहती हूँ।

सम्राट्—क्षत्रिय-राजकुमारियों को सभय न होना चाहिए। यदि अब भी कोई संदेह हो, तो खुलकर ठीक-ठीक बात कर लीजिए।

वासवदत्ता—क्या मेरी बातों पर आप संदेह भी करते हैं? चलने पर सन्नद्ध हूँ ही। जो आज्ञा होगी, वही करूँगी।

उदयन—तब फिर आज्ञा अथवा बिनती जो समझिए, यही है कि जब देवी-पूजनार्थ मंदिर को भद्रावती हस्तिनी पर जाइएगा, तब उसी पर बैठकर मैं भी तुम्हें कौशांबी ले चलूँगा।

वासवदत्ता—माता-पिता का मान-भंग होता ही है।

सम्राट्—उन्होंने मेरा मान-भंग क्यों किया? मैं भी विवश हूँ।

वासवदत्ता—बात आपकी यथार्थ है ही; अच्छा, मुझे स्वीकार है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



इस प्रकार निश्चय करके तथा राजपुत्री को शतशः धन्यवाद देकर सम्राट् अपने निवासस्थान को पलट गए। उधर महामंत्री यौगंधरायण ने सारा प्रबंध ठीक कर लिया। देवी के मंदिर पर जब राजकन्या गई, तब गज-वशीकरण-विद्या से सम्राट् उदयन भी भद्रावती हस्तिनी पर बैठ गए, तथा गजपालक उसे नियत स्थान की ओर भगा ले चला। कुछ रक्षकों ने यह देखकर पीछा किया। सम्राट् के पास निष्कों से भरी थैली रक्खी जा चुकी थी, जिससे निकाल-निकालकर सोने की मुहरें आप पीछे फेकते जाते थे। पीछा करनेवाले रक्षक उन्हें बीनने के लालच में पीछे छुट जाते थे। जो दो-चार निकट आ जाते थे, वे हस्तिनी की साँकर तथा उदयन और इनके सहायकोंवाले अचूक बाणों के लक्ष्य हो जाते थे। ऐसी दशा देखकर उज्जयिनी-पति के पास शीघ्रता-पूर्वक संदेश भेजा गया, और उसने अपने युवराज गोपालक को पीछा करने को ससेन भेजा, किंतु गुप्त रूप से यह भी समझा दिया कि वास्तविक पीछा न करके सम्राट् को निकल जाने दें, तथा कौशांबी में जाकर कन्यादान कर दें। गोपालक ने इसी प्रकार झूठा पीछा किया, और सम्राट् कुशल-पूर्वक सहायकों-सहित सपत्नीक कौशांबी पहुँच गए। वहाँ जाकर गोपालक ने नियमानुसार बहन का विवाह सम्राट् उदयन से कर दिया, तथा उज्जयिनी-पति ने प्रचुर मात्रा में दायज भी भेजा, जो सप्रेम स्वीकार हुआ।

---

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# षष्ठ परिच्छेद

## यौगंधरायण की प्रतिज्ञा

राजकुमारी वासवदत्ता से धर्म-पूर्वक, मान-सहित विवाह करके सम्राट् उदयन बहुत ही हर्षित हुए तथा सम्राज्ञी का मान भी पूर्णता के साथ करते रहे। दोनो पति-पत्नी में प्रेम-भाव की वृद्धि समय के साथ दिनोंदिन अधिकाधिक होती रही। उधर प्राचीन संबंध के कारण महामंत्री यौगंधरायण काम तो कौशांबी में ही करते थे, किंतु सम्राट् की आज्ञा लेकर मगधेश के इच्छानुसार कभी-कभी दस-दस, पंद्रह-पंद्रह दिनों के लिये जाया वहाँ भी करते थे। महाराजा अज्ञातशत्रु परलोकवासी हो चुके थे, और उनके सुपुत्र दर्शक महाराज हुए थे। वह भी यौगंधरायण का मान पिता ही के समान करते थे। इच्छा उनकी इन्हें मागध महामंत्री बनाने की थी, क्योंकि प्राचीन महामंत्री गत हो चुके थे। फिर भी कौशांबी-नरेश से परम प्रगाढ़ प्रेम रखने के कारण आप इन्हें छोड़ना नहीं चाहते थे। राजपुत्री पद्मावती रूप, शील, गुणों आदि में अद्वितीया थी, और प्राचीन मान्य संबंध के कारण इन्हें मानती भी बहुत ही थी। इन्हीं के मागध मंत्रित्व-काल में उसका जन्म हुआ था, और उसे इन्होंने प्रायः गोदी में खेलाया था। जैसी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



प्रीति आप उदयन पर रखते थे, उससे कुछ ही कम पद्मावती पर भी इनका पितृप्रेम-सा था। वह राजकुमारी ऐसी सुशीला थी कि केवल एक सखी को साथ लेकर साधारण पूजिकाओं की भाँति राजप्रासाद के समीपवाले सांकेतिक लक्ष्मी-मंदिर में पूजनार्थ कभी-कभी जाया करती थी। उसकी इच्छा यह थी कि एक तो देव-पूजन में राजसमाज-पूर्ण महत्ता-प्रदर्शन से भक्ति-भाव का दैन्य रूप नहीं आता, दूसरे, इतर पूजकों को भी कष्ट हो सकता है।

एक बार मंत्री यौगंधरायण मगध में ही विराजमान थे, तथा अकस्मात् पांचालराज अनंतवीर्य भी अपने सहपाठी मागध नरेश के अतिथि होकर उसी समय पधारे। मगधेश दर्शक ने सम्राट् उदयन को भी निमंत्रण द्वारा बुला रक्खा था, और तीनो नरेशों की सिंह-मृगया का साथ-ही-साथ संभार हो रहा था। सम्राज्ञी वासवदत्ता भी पति के साथ वहीं पधारी थीं। एक दिन अकस्मात् अनंतवीर्य पूजनार्थ लक्ष्मी-मंदिर को ऐसे समय गए, जब देवी पद्मावती भी गुप्त रूपेण केवल एक सखी के साथ वहाँ पूजन में प्रवृत्त थीं। मागध राजसेवियों को भी इसका पता न था, क्योंकि भक्ति-भाव की पूर्णता से राजपुत्री पूजनार्थ एकाकिनी केवल एक सखी के साथ जाया करती थीं, सो भी छिपकर। जब पांचालराज मंदिर के समीप गए, तब इनके अनुयायियों ने राजकीय महत्ता के अनुसार मंदिर से अन्य पूजकों को बाहर निकाल

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



दिया, जिनमें राजपुत्री भी छिपकर निकल गई। निकलने में किसी एक पूजक द्वारा विलंब होने से पांचालराज ने स्वयं न केवल डाट बतलाई, वरन् एक ठोकर भी मार दी। राजपुत्री ने यह सारी लीला देखकर पांचाल-पति के ऐसे दर्प-पूर्ण व्यवहार को बहुत ही निंद्य समझा। राजसमाज में पद्मावती ने सम्राट् उदयन का स्वभाव बहुत ही उच्च पाया, तथा इनके ललित कलाओंवाले ज्ञान, शौर्यादि ने भी इस पर बहुत अच्छा प्रभाव डाला। सम्राज्ञी वासवदत्ता से भी पद्मावती का बहुत ही प्रेम-पूर्ण व्यवहार दोनो के समान सद्गुणों के कारण बढ़ा। उधर पांचालराज के व्यवहार में उदयन के साथ बालवय में भी कुछ ईर्ष्या-पूर्ण भाव था, जो इनके सद्गुणों तथा मगध में विशेष आत्मीय मान से और भी बढ़ा, यहाँ तक कि उसका कुछ भद्दा रूप चतुर निरीक्षकों पर प्रकट भी हो गया। अनंतवीर्य ने पद्मावती के स्वभाव की महत्ता तथा अपने स्वभाव की नीचता पर समुचित विचार किए विना एक बार अपने मित्र दर्शक से राजकुमारी के साथ अपने विवाह का मंतव्य भी छेड़ दिया। मगध-पति ने विना कोई उत्तर दिए ही विचारार्थ समय माँगकर एकांत में इस प्रश्न पर यौगंधरायण से सम्मति माँगी।

दर्शक—काकाजी ! अनंतवीर्य के वैवाहिक प्रस्ताव पर आपकी क्या सम्मति है ? मैं तो बालवय से ही उसे एक अयोग्य व्यक्ति समझता आया हूँ। उसका इधर का व्यवहार और भी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



निंदित दिखलाई दे रहा है। मैं तो उसे प्रेम-भाव से निमंत्रण भेजकर पछता-सा रहा हूँ।

यौगंधरायण—है तो देव! यही बात। मुझे भी वह बड़ा ही नीच व्यक्ति समझ पड़ता है। उसे इस आतुरता से ऐसा धृष्ट प्रस्ताव करने का साहस कैसे हुआ, यह भी एक महदाश्चर्य है।

दर्शक—तब उस मूर्ख से कहा क्या जाय?

यौगंधरायण—इसका नीच पिता कौशांबी-राज्य का राष्ट्रीय-मात्र था, किंतु बल बढ़ाकर हमारी निर्बलता की दशा में स्वतंत्र हो गया। अपने कुल-गौरव की नीचता-पूर्ण उत्पत्ति पर विना विचार किए तथा अपने कुत्सित आचरणों को विना स्मरण किए ऐसा धृष्ट प्रस्ताव कर बैठना, जिसमें मित्र कहे जानेवाले महापुरुषों को उत्तर देने में विपत्ति पड़ जाती है, कितनी गर्हित बात है!

दर्शक—फिर भी कुछ उत्तर तो देना ही पड़ेगा। यदि मित्र उदयन का विवाह न हो गया होता, तो यह संबंध सभी प्रकार से श्रेष्ठ था। भगिनी इनके आचरणों से भी बहुत प्रसन्न दृष्टिगोचर होती है; उधर अनंतवीर्य से राजसभ्यतानुसार साधारण बात तो कर लेती है, किंतु किसी प्रकार की अनुरक्तता का आभास दूर से भी नहीं दिखलाई देता।

यौगंधरायण—अनुरक्तता कहाँ से दिखे? कहाँ एक देवी और कहाँ राक्षस!

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



दर्शक—आपने इस उदयनवाले संबंध पर कभी विचार क्यों न किया ? आर्य ! यह तो जानते ही थे कि दोनो ओर से संबंध के कारण भी मैं आपके ऐसे कथन को तिल-मात्र अयोग्य न समझता।

यौगंधरायण—विचार तो मेरा इस विषय में एक समय से दृढ़ था, किंतु वहाँवाले विशेष संबंध के कारण तथा अपने यहाँवाले भारी मान से मैं कुछ संकोच में पड़ गया। सोच-समझकर बात समय पर उठाता भी अवश्य, किंतु बीच ही में विघ्न उपस्थित हो गया, और उज्जयिनी से संबंध का प्रस्ताव आ पड़ा, जिसे मैंने एक बार टाल भी दिया, किंतु वहाँ हमारे सम्राट् बंदी हो गए। इतने पर भी उस राजपुत्री के भारी सद्गुणों से रीझकर यह विवाह कर ही बैठे। अब किया क्या जा सकता है ?

दर्शक—कोई भारी अड़चन तो है नहीं। राजाओं के अनेक विवाह हुआ ही करते हैं। सारे भारतवर्ष में इनसे बढ़कर स्वसा के लिये मुझे कोई वर तो समझ पड़ता नहीं। आपकी क्या सम्मति है ?

यौगंधरायण—मैं इस विषय में ऐसा धृष्ट प्रस्ताव कैसे कर सकता हूँ ? देव ! हूँ तो मैं फिर अब वहीं का।

दर्शक—इससे क्या होता है ? आप क्या हमारे भी नहीं हैं ? वरन् आपके संकोच-पूर्ण उत्तर से भी मतैक्य दृष्टि-गोचर होता है। है कि नहीं ?

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



यौगंधरायण—है अवश्य । ऐसा वर कहीं न मिलेगा। आशा है, बेटी पद्मावती भी इससे प्रसन्न होगी।

दर्शक—इसमें कोई संदेह नहीं। आप उससे बात भी कर लीजिएगा।

यौगंधरायण—ऐसा हो सकता है, किंतु एक संदेह मुझे अब भी है।

दर्शक—वह क्या है ? आर्य !

यौगंधरायण—सम्राट् उदयन का सम्राज्ञी से इतना भारी प्रेम है कि मेरे कहने से भी शायद उनके जीवन-काल में वह द्वितीय विवाह करने को सन्नद्ध न हों। ऐसे संकोच-पूर्ण विषय पर आपका कुछ कहना तो उचित है नहीं, क्योंकि नाहीं की संभावना होने से आप दोनो की प्रगाढ़ मित्रता में भी अंतर पड़ सकेगा। मैं तो समझता हूँ कि यदि आपकी इच्छा हो, तो मैं अपनी ही ओर से यह चर्चा उनसे गुप्तरूपेण चलाऊँ।

दर्शक—यह ठीक होगा, कक्कू जी !

यौगंधरायण—चाहता मैं भी इसे बहुत हूँ, किंतु राज-दंपति का प्रगाढ़ प्रेम इसका बाधक है, जिसके प्रतिकूल कोई कुछ कह भी नहीं सकता, क्योंकि वह पूर्णतया उचित है।

दर्शक—ऐसा तो है ही, किंतु मुझे आपकी महती योग्यता पर पूरा विश्वास है कि आपके आरंभ कभी असफल नहीं हो सकते।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



यौगंधरायण—प्रयत्न अवश्य करूँगा।

दर्शक—प्रयत्न-मात्र की बात छोड़कर प्रतिज्ञा कीजिए, आर्य! मेरी अब यही बिनती है। प्यारी पद्मा की स्वीकृति का भार मुझ पर रहा।

यौगंधरायण—क्या आपकी यही आज्ञा है?

दर्शक—आज्ञा नहीं, प्रार्थना है; कृपा का भिखारी हूँ।

यौगंधरायण—ऐसे दीन वचन क्यों कहे जाते हैं? अच्छा, मैं प्रतिज्ञा करता हूँ।

दर्शक—पूर्ण दृढ़ता के साथ, आर्य!

यौगंधरायण—जब प्रतिज्ञा हो ही चुकी, तब दृढ़ता में क्या न्यूनता हो सकती है?

दर्शक—अनेकानेक धन्यवाद, कक्कूजी! तब फिर आज्ञा हो कि अनंतवीर्य को क्या उत्तर दूँ?

यौगंधरायण—अपनी ओर से तो आपको एक माने हुए मित्र से नीरस वचन कहना न चाहिए। मैं समझता हूँ, यही कह दीजिए कि यह विषय पूज्य पिता के आज्ञानुसार आपने भगिनी पर ही छोड़ रक्खा है।

दर्शक—है तो युक्ति अच्छी, किंतु अनंतवीर्य उसे प्रार्थनाओं से विकल करेगा। कहीं कष्ट से बचने को "हाँ" न कह बैठे?

यौगंधरायण—ऐसी मूर्खा वह नहीं हैं। मैं समझा भी रक्खूँगा।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



दर्शक--यदि इच्छा हो, तो यहीं बुलवाकर आपसे बात करा दूँ। मैं उस समय चला जाऊँगा, जिसमें उसे कोई संकोच न हो।

यौगंधरायण—अच्छी बात है; शुभस्य शीघ्रम् का मामला ठीक ही है।

दर्शक—कंचुकी!

कंचुकी—( प्रवेश करके ) आज्ञा, देव!

दर्शक—राजकुमारी पद्मावती से जाकर निवेदन करो कि यदि अवकाश हो, तो क्या इधर पधार सकती हैं? कोई विशेष कार्य नहीं है।

कंचुकी "जो आज्ञा" कहकर जाता है। थोड़ो देर में पद्मावती आती हैं, और यौगंधरायण को प्रणाम करने पर आशीर्वाद पाती हैं।

पद्मावती—दादाजी! क्या इच्छा है?

दर्शक--बहनजी! कक्कूजी महोदय तुमसे एकांत में कुछ बात करनी चाहते हैं। मैं जाता हूँ। क्या इनसे संभाषण का अवकाश है?

पद्मावती—दादाजी! आप भी विराजिए न। ऐसा कौन गुप्त विषय होगा? क्यों न काकाजी! अवकाश है ही, कर ही क्या रही हूँ।

दर्शक—तब मैं जाता हूँ, तू इन्हीं से बात कर। जो कुछ यह कहें, मानो मैंने भी कहा।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



यह कहकर दर्शक चले जाते हैं।

पद्मावती—कहिए, काकाजी! क्या आज्ञा है? आपसे अब तक कोई गुप्त संभाषण कभी नहीं हुआ। आज कौन-सी नवीनता उपस्थित हो गई?

यौगंधरायण—बेटी! अभी तेरी अवस्था सत्रहवें साल में है ही, और विवाहादि का कोई प्रश्न न मेरे चित्त में उठा, न तेरे भ्राता के।

पद्मावती—यह तो योग्य ही था; क्या अब ऐसा विचार होने लगा है? मैं अभी उसे समय से पूर्व का समझती हूँ। है न यही बात? काकाजी!

यौगंधरायण—है तो यही, बेटीजी! किंतु एकाध इतरों ने यह प्रश्न उठा दिया है, जिससे मुझे भी इस पर विचार आवश्यक समझ पड़ने लगा है, तथा तेरे भाई को भी।

पद्मावती—किसी बाहरवाले को मेरे कुटुंब पर विचार-प्रक्षेप का क्या अधिकार है? आप महोदयों ने उससे तत्काल नाहीं क्यों न कर दी?

यौगंधरायण—ऐसे महत्ता-युक्त विचार कोई साधारण पुरुष तो उठाते नहीं, जो नाहीं कर दी जाय; इनके उठाने-वाले भी गण्य-मान्य महानुभाव होते हैं, जिनसे युक्ति-पूर्वक ही बात करनी पड़ती है, लट्ठ-सा थोड़े ही मारा जाता है।

पद्मावती—आजकल मगध में दो नरेश अतिथि रूप से पधारे हैं। उनमें से कौशांबी-नरेश तो विवाहित व्यक्ति हैं।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



उन्होंने ऐसा कहा न होगा, क्योंकि जीजी वासवदत्ता से उनका व्यवहार भी अत्यंत श्रेष्ठ दिखता है। क्या अनंतवीय ने ही ऐसी धृष्टता की है? उसका विवाह शायद अभी हुआ भी नहीं है।

यौगंधरायण—तुम तो, बेटीजी! उड़ता पक्षी-सा पकड़ती हो; कहा तो है पांचाल-पति ने ही। इस पर तेरा क्या विचार है? विना तेरी इच्छा जाने न तो मैं कुछ उत्तर दे सकता हूँ, न देव ही।

पद्मावती—उत्तर यही है कि यह प्रश्न समय से बहुत पूर्व का है। मैं अभी इस पर विचार भी नहीं कर सकती।

यौगंधरायण—बेटीजी! यह कोई उत्तर नहीं है। सोलह-सत्रह वर्षों की अवस्थाओं में कन्याओं के विवाह बराबर होते हैं। तेरी जीजी सम्राज्ञी वासवदत्ता भी तो अठारहवें वर्ष में ही हैं।

पद्मावती—क्या विना मेरी इच्छा के भी कोई राज-पुत्र इस प्रकार की चर्चा चला सकता है?

यौगंधरायण—शास्त्रों में आठ प्रकार के विवाह वर्णित हैं, जिन सबमें कन्या की इच्छा प्रधान नहीं रहती, केवल कुछ में उसका भी मान है।

पद्मावती—क्या कोई भी राजपुत्र ऐसी धृष्ट चर्चा चला सकता है?

यौगंधरायण—जात-मात्र से ही कन्यका योग्य वर को देय

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



होती है। राजन्य-वर्ग के लिये ऐसी याचना में कोई धष्टता नहीं है।

पद्मावती—क्या ऐसी बातों में योग्यायोग्य का विचार नहीं होता ?

यौगंधरायण—होता क्यों नहीं ? वही प्रश्न तो पूछ रहा हूँ।

पद्मावती—अच्छा, पहले आप अपनी उचित सम्मति दीजिए।

यौगंधरायण—यदि मैं ही निर्णय कर दूँ, तो तेरी इच्छाओं का निरादर हो जाय कि नहीं ?

पद्मावती—मैं निर्णय न चाहकर आपसे केवल सम्मति माँगती हूँ।

यौगंधरायण—सम्मति भी तो अर्द्ध निर्णय है।

पद्मावती—क्या किसी का विवरण विना जाने ही सम्मति स्थिर कर लूँ ?

यौगंधरायण—ऐसा कौन कहता है ? पांचालराज के कुटुंब तथा उनका सारा हाल बेटीजी को बतला सकता हूँ।

पद्मावती—तब फिर कृपा करके बतलाइए।

यौगंधरायण—इनके पिता कौशांबी-नरेश के राष्ट्रीय थे, किंतु बल बढ़ाकर वह उस राज्य की निर्बलावस्था में स्वतंत्र हो गए। हमारी शक्ति इस धर्म-हीन राज्य को नत करना चाहती है, किंतु कौशांबी में अभी इस आरंभ के लिये बल

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai


की न्यूनता है। अनंतवीर्य महर्षि जमदग्नि की संस्था में आपके भ्राता दर्शक तथा सम्राट् उदयन के सहपाठी थे, जहाँ इन दोनो की उनसे विशेष मित्रता न थी। इन दिनों में साधारण राजकीय प्रेम-वर्द्धनार्थ मगधेश ने मृगया के लिये इन दोनो भूभुजों को निमंत्रित करके बुलाया है।

पद्मावती—पांचालराज का निजू व्यवहार लोगों से कैसा है?

यौगंधरायण—यदि ऐसे प्रश्नोत्तरों में मैं उनकी निंदा करूँ, तो मानो प्रतिकूल सम्मति देता हूँ।

पद्मावती—सत्य भाषण आप करते ही हैं। जब तथ्य कथन में उनकी निंदा होने का भय है, तब प्रश्न का उत्तर तो मिल ही चुका।

यौगंधरायण—मुझे कोई आत्मीय ज्ञान तो इस विषय पर है नहीं, किंतु सुनी-सुनाई बहुत-सी बातें जानता हूँ, जो उनके प्रतिकूल पड़ती हैं।

पद्मावती—मेरा आत्मीय अनुभव भी इसी प्रकार का है। समाज में उनकी बातें जो होती हैं, वे प्रायः दर्प-पूर्ण रहती हैं। एक बार जब राजप्रासाद के निकटवाले लक्ष्मी-मंदिर में यह पूजनार्थ गए, तब पहले ही से सारे पूजकों को इनके परिचारकों ने वहाँ से भगा दिया।

यौगंधरायण—आपसे यह कथा किसने बतलाई?

पद्मावती—बतलाता कौन? मैं स्वयं छिपकर उन्हीं पूजकों

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



में सम्मिलित थी, और उन्हीं के साथ पूजन-समाप्ति से पूर्व खेदी गई।

यौगंधरायण—सारी बातों का प्रयोजन यह निकलता है कि बेटोजी को उन पर कुछ श्रद्धा नहीं है।

पद्मावती—यही तो बात है, किंतु उनसे कथन कौन करेगा? दादाजी ही करें, तो ठीक है।

यौगंधरायण—यही तो काठिन्य है; पांचाल-पति मित्ररूप से यहाँ बुलाए गए हैं। देव उनसे नीरस कथन कर नहीं सकते। इसीलिये कहा जायगा कि स्वर्गवासी पूज्य पिता के आज्ञानुसार यह प्रश्न आप ही के निर्णय पर छोड़ा गया है।

पद्मावती—तब तो वह नीच मुझी से इस अनुचित विषय पर वार्तालाप करेगा। मुझे काकाजी! क्या कहना चाहिए, आप ही उचित आज्ञा कर दीजिए।

यौगंधरायण—सम्मति तो आपकी प्रकट ही हो चुकी है। मैं समझता हूँ कि नीरस कथन बचाने को आप यही कह दें कि यद्यपि पूज्य पिता के आज्ञानुसार मुझे इस विषय पर स्वतंत्रता है, तथापि बिना दादाजी तथा काकाजी की सम्मति पाए मैं कोई उत्तर नहीं दे सकती। इससे आपकी बला टल जायगी, और देव कुछ कहेंगे नहीं। तब मुझी को वार्ता करनी पड़ेगी, जो मैं किसी प्रकार बिना नीरसता लाए संपन्न करूँगा।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai


पद्मावती—यह तो बहुत ही अच्छा डौल निकला। अब मुझे कोई कठिनाई न पड़ेगी। उत्तर मेरा निश्चित ही समझिएगा, काकाजी!

यौगंधरायण—सो तो प्रकट ही है।

अनंतर अनंतवीर्य का वार्तालाप इस विषय पर मगधेश दर्शक से एक बार फिर हुआ, और उन्होंने उपर्युक्तानुसार बात भगिनी पर डाल दी, तथा उसी से बात करने की सम्मति दी। अनंतर उचित समय ताड़कर पांचालराज ने पद्मावती से कथनोपकथन चलाया—

अनंतवीर्य—देवीजी! दस-पाँच दिनों से मुझे आपके दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है, तथा विविध विषयों पर साधारणी सभ्यता-गर्भित बातचीत भी होती है। यदि आज्ञा हो, तो एक गूढ़ विषय पर भी आपसे प्रार्थना करूँ।

पद्मावती—आश्चर्य-सा होता है कि इतने ही दिनों की चिन्हार के पीछे ऐसा गूढ़ विषय कौन उपस्थित हो गया, जिस पर देव को संभाषण की आवश्यकता समझ पड़ी?

अनंतवीर्य—विषय में कोई विशेष गूढ़ता नहीं है, केवल गुप्त भाव से एक प्रार्थना की बात है।

पद्मावती—मेरी इतनी बड़ी पदवी क्या है, जो देव का-सा उच्च पदाधिकारी भूपाल मेरे सम्मुख प्रार्थी के रूप में उपस्थित हो? तो भी कृपया आज्ञा कीजिए।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



अनंतवीर्य—आप जानती होंगी कि मैं अभी अविवाहित हूँ, तथा मेरी अवस्था छब्बीसवें साल में है। मैंने आपके उच्च गुणों तथा मोहक रूप से प्रसन्न होकर आपके भ्राता से विवाहार्थ प्रार्थना की, तो उन्होंने यह विषय पूर्णतया आप ही की स्वतंत्र सम्मति पर आधारित करके मुझे आप ही से वार्ता करने की सम्मति दी है। इससे मैं और भी प्रसन्न हुआ हूँ, क्योंकि ऐसी सर्व-गुण-संपन्ना राजकुमारी में कृपा का भी बाहुल्य होना ही चाहिए। इसी से आपके सम्मुख यह प्रश्न मैंने एकांत में उपस्थित किया है। आशा है, उदारता-पूर्ण उत्तर मिल जायगा।

पद्मावती—राजप्रवर! कथन आपका बहुत उचित है, जिससे मेरी मान-वृद्धि ही मानी जा सकती है। तो भी वय देखते हुए अभी मेरे द्वारा पूर्ण स्वतंत्रता का व्यवहार पंडित-समाज में योग्य न समझा जायगा। मैं इस प्रस्ताव को न तो स्वीकार कर सकती हूँ, न अस्वीकार। इसका निर्णय पितृचरण के आज्ञानुसार यद्यपि है मेरे ही स्वाधीन, तो भी विना दादाजी तथा काका आर्य यौगंधरायण की सम्मति प्राप्त किए मैं कुछ कह नहीं सकती। यद्यपि दादाजी ने कोई उत्तर आपको नहीं दिया है, तथापि मैं सम्मति उनकी भी चाहूँगी अवश्य। आप स्वयं समझ सकते हैं, ऐसी लघु वयवाली बालिकाएँ ऐसे महत्त्व-पूर्ण प्रश्नों का निर्णय अपनी ही बुद्धि के अनुसार नहीं कर सकतीं।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



अनंतवीर्य—देवीजी! है तो आपका उत्तर एक प्रकार से उचित, किंतु जब उन्होंने यह उत्तर आप ही के अधीन कर रक्खा है, तब अपनी सम्मति आपको दे कैसे सकेंगे, क्योंकि परिस्थिति को देखते हुए उनकी अनुमति एक प्रकार से आज्ञा हो जायगी, जो वह चाहते नहीं।

पद्मावती—है तो आपके कथन में भी बहुत कुछ सार, किंतु वय देखते हुए मैं अभी ऐसे गंभीर विषय पर निर्णय अपनी ही बुद्धि पर छोड़ नहीं सकती। यदि दादाजी सम्मति न देंगे, तो काकाजी महामंत्री होकर नाहीं नहीं कर सकते, क्योंकि उनका काम ही मंत्र-दान है।

अनंतवीर्य—यह विषय मूलतः प्रेम का है, जिस पर महामंत्रियों के मंत्र-दान की विशेष आवश्यकता नहीं होती। इस पर तो आपको अपने ही चित्त की साक्षी ढूँढ़नी चाहिए।

पद्मावती—मैंने अब तक प्रेमादि का विषय जाना नहीं है। गुरुओं से विद्या सीखती आई हूँ, तथा ललित कलाविदों से नृत्य, गान, वादन आदि की शिक्षा पा रही हूँ। सबसे अधिक चित्त देव-पूजन में लगता है। शृंगार-रस का रूप मुझे देव-विषयक रति-भाव में विशेष दिखा है, मनुष्य के संबंध में नहीं। अतएव प्रेमादि का बोध मुझे नहीं है, केवल साधारण समाज में उचित भद्रत्व के साथ वार्तालाप की भी शिक्षा मिली है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



अनंतवीर्य—इन बातों से तो जान पड़ता है कि जिस विषय पर मैं अनुकूलता चाहता हूँ, उससे आप नितांत अछूती हैं।

पद्मावती—इतना मैं भी जानती हूँ कि २५ वर्ष की अवस्था पाकर पुरुषों को गृहस्थ होना चाहिए, और अठारह-बीस वर्ष की अवस्था में स्त्रियों को। यह एक साधारण गार्हस्थ्य धर्म है, जिसका पालन समय पर मुझ पर भी बाध्य होगा, किंतु कैसे वर के साथ? इस विषय पर अभी मुझे कोई शिक्षा नहीं मिली है, न मैं अपने को किसी भारी विषय पर ज्ञान-वृद्ध समझती हूँ।

अनंतवीर्य—मैं समझता हूँ कि अभी आप में संसारीपने का सम्यक् बोध नहीं है, जिससे यह विषय आपके लिये कोई और ही निर्णीत करेगा।

पद्मावती—कम-से-कम किसी विश्वास-पात्र, ज्ञान-वृद्ध सज्जन की सम्मति आवश्यक होगी, जो अभी प्राप्त नहीं हुई है, न मुझे इसकी कोई शीघ्रता परिलक्षित होती है। जो होना होगा, समय पर आप हो जायगा। मैं तो अभी अध्ययन-पूर्ण संसार में हूँ, वास्तविक में नहीं।

अनंतवीर्य—जितनी उच्च कोटि की बातें आप करती जाती हैं, उनसे आपके संबंध में मेरी लालसा और भी बलवती हो रही है। तो भी नहीं समझ पाता कि प्रसन्न किस प्रकार कर सकता हूँ?

पद्मावती—मैं केवल प्रसन्नता के आधार पर इस भारी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



प्रश्न का निर्णय चाहती ही कब हूँ ? मुझे तो अब तक कर्तव्य-पालन का पाठ पढ़ाया गया है।

अनंतवीर्य—क्या कहूँ, देवीजी ! आप मानुषी नहीं, वास्तव में देवी हैं। क्या मैं जान सकता हूँ कि आपने मुझमें कोई दोष तो नहीं देखा ?

पद्मावती—एक तो गुरुजी की शिक्षा है कि अन्यों में दोष देखने की प्रकृति निंद्य है। यथासाध्य सबमें गुण ही खोजना चाहिए। फिर मुझे आपका अनुभव ही क्या हुआ है, जो मैं आपके संबंध में गुण-दोष की उचित समीक्षा कर सकूँ।

अनंतवीर्य—यह सम्मति पहलेपहल आशाप्रद है। यदि मुझे आपकी उच्च संगति का अधिक अवसर मिले, तो संभवतः प्रसन्न कर सकूँ।

पद्मावती—हो सकता है, किंतु मैंने कहा न कि प्रसन्नता न चाहकर मैं कर्तव्य-पालन की ओर जाना चाहती हूँ।

अनंतवीर्य—कर्तव्य-पालन तो पूर्णतया ठीक है, किंतु अपने सुख-साधन पर भी तो मनुष्य को ध्यान देना पड़ता है।

पद्मावती—सुख-साधन की सामग्री तो परमात्मा ने पहले ही से बिना याचना प्रचुर मात्रा में दे रक्खी है। ऐसे भगवान् की आज्ञाओं पर भी तो ध्यान देना चाहिए।

अनंतवीर्य—आज्ञाएँ तो उसकी सुकर्म-पालन की हैं, जो आप कर ही रही हैं। प्रत्येक स्त्री-पुरुष के लिये वैवाहिक संस्कार भी शास्त्रों में आवश्यक समझा गया है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



पद्मावती—क्या मैं उससे पीछे हटती हूँ ?

अनंतवीर्य – तब फिर आत्मीय विषय दूसरों की सम्मति पर क्यों छोड़ा जाता है ?

पद्मावती—अभी मैं वयस्का नहीं हूँ । कोई-न-कोई रक्षक आवश्यक है। नीति-चक्षु से दादाजी अभिभावक बने-बनाए हैं, और वैवाहिक विषय पर भी उनकी आज्ञा मान्य है ही। न-जाने क्या समझकर पूज्य पितृचरण ने यह एक निर्णय उनके अधीन न करके मुझ पर छोड़ा है। उस आज्ञा के प्रतिकूल मैं उन्हें विवश भी नहीं करना चाहती। उधर वयस्का न होने से इस भारी विषय पर केवल अपनी सम्मति पर अनुगमन करने का साहस नहीं कर सकती। बड़े-बड़े वयस्क नरेश तक मंत्रियों की सम्मति के बिना जब काम नहीं करते, तब मैं ही विश्वास-पात्र महामंत्री के विचारों पर अनुगमन करने में क्यों किसी अशुभ मार्ग की पथिका समझी जाऊँ ? कम-से-कम उनकी सम्मति जान लेने में तो दोष है नहीं। अतएव आपको उचित है कि यदि मुझसे संबंध के इच्छुक हों, और इस कृपा को कार्य-रूप में परिणत करना चाहें, तो अपने विचार उन पर प्रकट करके उनकी सम्मति प्राप्त कर लें।

अनंतवीर्य—देवीजी ! आपसे कथनोपकथन मैं पूर्णता के साथ कर चुका हूँ, अब आप ही के इच्छानुसार मित्रवर मगधेश से बात न चलाकर मंत्रिवर यौगंधरायण से ही

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



चलाऊँगा। वास्तविक बात यह थी कि मैं ऐसे महान् विषय पर एक मंत्रिमात्र के सम्मुख प्रायः प्रार्थी के रूप में नहीं जाना चाहता था। फिर भी जब आपके विषय में मेरी लालसा अदम्य है, और आप किसी प्रकार अपने निजू असहाय निर्णय पर भरोसा नहीं कर सकती, तब विवश होकर मुझे उनसे वार्तालाप करनी पड़ेगी।

पद्मावती—बड़ी कृपा, देव ! मैंने अद्य-पर्यंत ऐसे महत्ता-पूर्ण विषयों पर किसी से बात नहीं की। एक आप ही से विवश होकर करनी पड़ी। आशा है, आपको मेरी इन मूर्खता-पूर्ण बातों से असंतोष न हुआ होगा। यदि कुछ हुआ हो, तो मैं पहले ही से क्षमा माँगे लेती हूँ।

अनंतवीर्य—देवीजी महोदया ! क्षमा-याचना की आपके लिये कोई आवश्यकता नहीं है। आपने मुझसे कोई अनुचित बात नहीं कही है, न किसी प्रकार से कोई अनिच्छा प्रकट की है। आपने केवल अपने ऊपर विश्वासाभाव दिखलाया, जो आपके कुछ असंपूर्ण सांसारिक अनुभव के कारण यदि मान्य नहीं, तो कम-से-कम समझ में आने के योग्य है। आपके चित्त में धार्मिक भाव ने इस आधिक्य से घर कर लिया है कि साधारण सांसारिक प्रश्नों की ओर इतर सम-वयस्क बालिकाओं की भाँति आपका चित्त समुचित प्रकारेण नहीं चलता। मैं स्वयं आपसे क्षमा का प्रार्थी हूँ कि एक न चाहे हुए विषय पर देर तक संभाषण करता रहा। यदि मेरा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



रूप और सद्गुण-लोलुप चित्त आपमें परमाधिक्य से अनुरक्त न होता, तो इतना कष्ट भी न देता। अब एक बार फिर से क्षमा का प्रार्थी हूँ।

पद्मावती—इसकी कोई आवश्यकता नहीं है, देव!

इस प्रकार सविलंब वार्ता करके ये दोनो पृथक् हुए। अनंतर उचित समय ताड़कर पांचालराज एक दिन महामंत्री यौगंधरायण से इस विषय पर वार्तालाप करने लगे—

अनंतवीर्य—आर्य! मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई है कि आपके सद्गुणों पर रीझकर न केवल कौशांबी-नरेश पूर्ण विश्वास रखते हैं, वरन् मगध में भी आपका वैसा ही मान है।

यौगंधरायण—देव! मैं यहाँ का भी अठारह-बीस वर्ष मंत्रित्व करता रहा हूँ। इसके भी पीछे मगधेश छोड़ते न थे, किंतु कौशांबी के प्राचीन व्यवहार के कारण विवश होकर मुझे छोड़ना पड़ा। अब भी व्यवहार बहुत कुछ जैसे-का-तैसा चल रहा है।

अनंतवीर्य—बड़ी प्रसन्नता की बात है, आर्य! आज एक आत्मीय विषय पर मैं आपसे वार्तालाप करना चाहता हूँ। यदि आपके पास समयाभाव न हो, तो प्रारंभ करूँ।

यौगंधरायण—बड़ी कृपा, देव! अवश्य आज्ञा कीजिए।

अनंतवीर्य—मैंने अपने मित्र मगधेश से उनकी स्वसा पद्मावती के साथ विवाह की बात चलाई थी, किंतु उन्होंने

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



स्वर्गवासी पिता के इच्छानुसार यह विषय भगिनीजी के ही निर्णयाधीन बतलाकर उन्हीं से वार्ता करने का मंत्र दिया। जब मैंने उनसे प्रार्थना की, तब उन्होंने न तो स्वीकृति प्रकट की न अस्वीकृति, वरन् ऐसे भारी प्रश्न के निर्णयार्थ अपनी वय-संबंधी अयोग्यता पर हठ किया।

यौगंधरायण—हैं तो अभी वह अल्पवयस्का। कोई भी ऐसी कन्या ऐसे विषयों पर अपनी ही सम्मति पर अनुगमन का साहस कठिनता से कर सकेगी।

अनंतवीर्य—जब पूज्य पिता ने यह विषय उन्हीं के निर्णय पर छोड़ रक्खा था, तब उनके उच्च मानस पर उन्हें कुछ तो निश्चय होगा ही। फिर भी राजकुमारी ने यह गुरुतर विषय बहुत करके आप ही के मंत्र के अधीन बतलाया है। ऐसी दशा में मुझे आप ही से यह गंभीर विषय छेड़ना पड़ता है। आशा है, आप खुले चित्त से वार्तालाप करना उचित समझेंगे।

यौगंधरायण—पांचालराज महोदय! मेरी सम्मति तो यहाँ सभी भारी विषयों पर ली जाती है, किंतु राजकुमारी को मंत्रदान के अवसर मुझे अब तक नहीं पड़े। उनके संबंध का कोई महान् प्रश्न भी उपस्थित न हुआ था। अब तक उनके संबंध में विद्याध्ययन, ललित कलाओं में योग्यता-प्राप्ति आदि के ही विषय चलते रहे थे। राजकुमारी मेरे ही सम्मुख उत्पन्न हुई थीं, और मैंने उन्हें गोद में सदैव

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



खेलाया है। इन्हीं कारणों से वह मुझ पर कृपा विशेष करती आई हैं। तो भी, विवाह के-से गहन विषय पर बिना उनकी आकांक्षा जाने मैं क्या मंत्र दे सकता हूँ? यह तो एक आत्मीय विषय है।

अनंतवीर्य—ऐसा तो है ही, आर्य! इसीलिये मैंने उनसे कई बार स्वमत-स्थापन के संबंध में प्रार्थना भी की, किंतु उन्हें अपने ऊपर ऐसा प्रचंड विश्वास-लाघव है कि मत-प्रकाशन से पूर्णतया बचती रहीं। इन कारणों से आप ही पर यह विषय अवलंबित हो गया है। यदि आप भी मत-स्थापन से बचें, जैसा कि समझ पड़ रहा है, तो नहीं जान पड़ता कि मैं बात किससे चलाऊँ?

यौगंधरायण—बात यह है, देव! कि यह विषय तर्क का न होकर मानसिक झुकाव का है। यह मैं जानता हूँ कि राजकुमारी कर्तव्य-पालन पर बहुत मन लगाती हैं, तथा धार्मिक प्रवृत्ति भी उनमें आधिक्य से है, फिर भी चार प्रकार के दर्शन जो शृंगार-काव्य में वर्णित हैं, अर्थात् श्रवण, चित्र, स्वप्न और प्रत्यक्ष, उनमें दो आपके विषय में पुष्ट हैं ही। राजपुत्री ने आपका विवरण सम्यक् प्रकारेण सुन रक्खा है, तथा प्रत्यक्ष दर्शन एवं वार्तालाप में कमी नहीं है। फिर भी जब उनकी अभिरुचि इस ओर नहीं दौड़ती, और वह कर्तव्य-पालन, मंत्रिसम्मति आदि पर हठ कर रही हैं, तब मेरी समझ में उनकी रुचि की गति प्रकट है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



अनंतवीर्य—यह तो कारण-माला के आधार पर अनुमान-मात्र है। क्या आपको इसका समर्थक कोई मूल-कारण भी दिखता है ?

यौगंधरायण—राजपुत्री की भक्ति बहुत ही दैन्य-पूर्ण भावों पर आश्रित है। वह जब राजप्रासाद के निकटवाले मंदिर में पूजनार्थ जाती हैं, तब अन्य पूजकों का कष्ट बचाने के विचार से गुप्त भाव से केवल एक सखी के साथ छिपकर जाती हैं। जब वह एक बार इसी प्रकार पूजन-कार्य में संलग्न थीं, तब अकस्मात् आपके सेवकों ने श्रीमान् के पूजनार्थ सारे पूजकों को मंदिर से निकाल दिया, यद्यपि सबके पूजन समाप्त न हुए थे। उन्हीं में वह भी थीं, और छिपकर राजप्रासाद को चली गई। भवदीय सेवकों की यह कार्यवाही उन्हें बहुत बुरी लगी। इस बात का उपालंभ मुझसे भी करती थीं।

अनंतवीर्य—हुआ तो बेजाने में अनुचित व्यवहार अवश्य, किंतु क्या एक इसी भूल पर वह मेरी प्रार्थना भंगकर देंगी ?

यौगंधरायण—ऐसा तो नहीं है। यदि अन्य आचरणों से इस दोष का मार्जन हो जाता, तो बात और थी, किंतु मेरी समझ में ऐसा हुआ न होगा, नहीं तो उनके आचरणों से आपके संबंध से उदासीनता परिलक्षित न होती। आपके सामाजिक वार्तालाप में भी दो-चार बार उन्हें अहंभाव दिख गया था।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



अनंतवीर्य—क्या मेरे संबंध में उनका आचरण आप उदासीनता-पूर्ण समझते हैं ? आर्य ! मुझे तो पूर्णतया ऐसा समझ न पड़ा, केवल कुछ छाया सी थी।

यौगंधरायण—संभव है, मेरा अनुमान अशुद्ध हो। मैं तो उसे ठीक ही समझता हूँ।

अनंतवीर्य—मेरी समझ में उन्हें अपनी विचार शक्ति पर पूर्ण विश्वास-मात्र नहीं है, और आपकी सम्मति पर असीम श्रद्धा है। यदि आप कृपा कर सकें, तो मेरी मनोकामना सिद्ध हो सकती है।

यौगंधरायण—विना उनकी कामना जाने, देव! मैं सम्मति क्या दे सकता हूँ ?

अनंतवीर्य—यह तो टालने की-सी बात समझ पड़ती है। आर्य ! किसी नियम या निबंध पर मेरे ऊपर कृपा कर सकें, तो मैं किसी प्रकार बाहर न हूँगा। पांचाल-राज्य का चतुर्थांश तक अर्पण कर सकता हूँ।

यौगंधरायण—यह तो बहुत बड़ा पातक देव विचार रहे हैं। क्या मैं राज्य-लोभ से स्वपुत्री के समान पूज्या और प्रिय राजकुमारी को धोखा दे सकता हूँ ? देव समझ क्या रहे हैं ? किससे बात हो रही है ? सारा पांचाल-राज्य, वरन् उत्तर भारतीय राज्य पाकर भी यौगंधरायण धर्म से विचलित नहीं हो सकता। महामंत्री क्या राजसेवक-मात्र है ? उसकी संज्ञा तो राज्य-रत्नों में है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



अनंतवीर्य—क्षमा कीजिएगा, आर्य ! मुझसे भूल हो गई। यह बात भूल जाइए। केवल मेरी प्रार्थना पर विचार कीजिए। बिना राजकुमारी को पाए मेरा जीवन सुखी नहीं रह सकता।

यौगंधरायण—आपने राजपुत्री के सच्चे या माने हुए गुणों को देखकर उनका मान अवश्य किया, किंतु उन्हें आपने कौन-से गुण दिखलाए, जिनके कारण वह आपके ऊपर मोहित हो गई हों ? मेरी समझ में अभी तक उनके चित्त में कोई ऐसा भाव नहीं आया है, जिसके कारण उनके लिये आपके संबंध में आत्मसमर्पण का प्रश्न उठता हो।

अनंतवीर्य—आपके उत्तर, आर्य ! बड़े ही हृदय-विदारक हो रहे हैं। क्या ऐसी कोई भी युक्ति नहीं है, जिससे मैं आपकी सम्मति पलट सकूँ ?

यौगंधरायण—अभी तक मैंने कोई सम्मति नहीं स्थिर की है, देव ! मैं वचन देता हूँ कि आपके प्रतिकूल राजपुत्री को कोई सम्मति न दूँगा। यह विषय उन्हीं के अमिश्र निर्णय पर छोड़ूँगा। मुझसे उन्होंने आपके संबंध में जो बातें की हैं, मैंने आपके कुटुंब का जो विवरण उन्हें बतलाया है, और उन्होंने उसे जिस प्रकार सुना है, उससे मुझे इस मामले के बारे लगने की आशा कम है, तो भी एक बार पूछ देखूँगा।

अनंतवीर्य—यथासाध्य ऐसी बात कीजिएगा, तथा सम्मति दीजिएगा, जिसमें मेरा अभिप्राय सिद्ध हो जाय, ऐसी विनम्र प्रार्थना है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



यौगंधरायण—जो आज्ञा, देव ! उनका निश्चित उत्तर प्राप्त करके यथासमय आपको विज्ञप्ति करा दूँगा।

अनंतवीर्य—आपसे बात करके मेरी आशा-लता तो बहुत कुछ मुरझा चुकी है, तो भी परिस्थिति के प्रतिकूल आशा कर रहा हूँ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# सप्तम परिच्छेद

## पद्मावती

अनंतवीर्य से उत्साह-मर्दिनी वार्ता करके महामंत्री यौगंधरायण ने राजपुत्री पद्मावती से एक बार फिर बात की—

यौगंधरायण—बेटी ! पांचालराज से मैंने आपकी उदासीनता का निष्कर्ष निकालकर उसे बहुत कुछ समझाया, किंतु वह प्रार्थना से विरत नहीं हो रहा है। आपकी अंतिम इच्छा या निर्णय जानना चाहता है।

पद्मावती—क्या अब तक आपने उसे निश्चित उत्तर नहीं दिया ?

यौगंधरायण—नहीं, बेटी ! अब तक मैंने उसे कोमल कथनों से ही निराश करना चाहा, किंतु उसकी आकांक्षा ऐसी उद्दाम है कि बिना निश्चित उत्तर पाए, वह न मानेगा। मैंने उसे वचन दिया है कि उसके प्रतिकूल आपसे कुछ न कहूँगा।

पद्मावती—आपने अब तक भी सिवा घटना-चक्र बताने के और क्या कहा था ? अब कृपया निश्चित नकारात्मक उत्तर मेरी ओर से दे दीजिए।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



यौगंधरायण—ऐसा तो करूँगा, किंतु अपने विवाह के संबंध में भी आपको विचार करना होगा।

पद्मावती—किसके संबंध में ? काकाजी !

यौगंधरायण—यही एक विकट प्रश्न है। मैंने बहुतेरे राजाओं एवं राजकुमारों पर विचार किया है, तथा तेरे दादाजी ने भी ऐसा ही किया है। हम दोनो को सारे भारत में सम्राट् उदयन से बढ़कर आपके लिये कोई योग्य वर नहीं दिखता।

पद्मावती—समझती तो मैं भी उन्हें श्रेष्ठ पुरुष हूँ, किंतु उनकी रानी प्रस्तुत हैं ही। इसका क्या उत्तर है ?

यौगंधरायण—स्वयं आपके बाबा के दो विवाह हुए थे। दोनो रानियाँ अंत-पर्यंत प्रस्तुत थीं, एक लिच्छवि तथा दूसरी कोशल की।

पद्मावती—आपसे छिपाव क्या करूँ ? काकाजी ! उनके गुणों का विवरण पहले ही से सुन रक्खा था, तथा दर्शन करके मेरा चित्त पूर्णतया लोलुप हो उठा है। फिर भी छोटी अवस्था के कारण न तो उनसे कुछ कहने का साहस हुआ, न दादा जी से। कहती आपसे भी नहीं, किंतु पूछने पर मानसिक भावों का पूरा विवरण करना ही पड़ा। आपसे दुराव करने का मेरा कभी स्वभाव नहीं रहा है। यदि इस विषय पर सन्नद्धता हो, तो साफल्य की आशा कहाँ तक है ?

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



यौगंधरायण—इस विषय पर तो, बेटी! मैं तेरे भ्राता से साफल्य-संबंधी प्रतिज्ञा भी कर चुका हूँ। फिर भी प्रयत्न की आवश्यकता होगी, क्योंकि सम्राज्ञी से उनका प्रगाढ़ प्रेम द्वितीय विवाह का बाधक है ही। आशा मुझे विजय की तो भी है।

पद्मावती—यदि असाफल्य हो गया, तो मेरा जीवन सुखी न रह सकेगा, काकाजी!

यौगंधरायण—ऐसा क्यों होने लगा? बेटी रानी! कोई-न-कोई युक्ति लगाऊँगा ही।

पद्मावती—मुझे ऐसी मानसिक लोलुपता आप-सरीखे गुरुजनों पर प्रकट करना सर्वतोभावेन अयोग्य था, किंतु भाव-गोपन का मेरा अभ्यास रहा नहीं है, जिससे आपके पृच्छा करने पर मेरे कथन अयोग्य सीमा तक चले गए, जिसके लिये मुझे पश्चात्ताप भी कम नहीं है।

यौगंधरायण—बेटी मेरी! तुझे इस बात से अनुतापित न होना चाहिए। मुझे तूने सदैव गुरुजनों की भांति माना है, जो परिस्थिति के देखते हुए अनुचित भी नहीं है। तो भी इतना समझे रहना चाहिए कि मैं मुख्यतया इस घराने का मंत्री हूँ। मंत्रियों से कोई आभ्यंतरिक भाव तक छिपाने का नियम नहीं है, क्योंकि ऐसा होने से उनके प्रयत्नों में असाफल्य संभव हो जायगा। अतएव न केवल आज, वरन् सदैव के लिये, बेटी! तुझे मुझसे आज ही के समान खुल

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



कर बात करनी ठीक है। इसमें तुझे लज्जा का बोध न करना चाहिए।

पद्मावती—क्या काकाजी ! आप ऐसा व्यवहार न केवल तिरस्कार-योग्य नहीं मानते, वरन् इसे उचित भी समझते हैं ?

यौगंधरायण—ऐसा तो है ही, बेटी मेरी ! मंत्रियों का काम ही राजन्यवर्ग के कार्य-साधन का है। यदि हम लोग गुह्यागुह्य मानसिक भावों से अवगत न रहें, तो कार्य-साधन कैसे करें ?

पद्मावती—तब भविष्य में भी आपसे इसी प्रकार यथा-तथ्य-पूर्ण वार्तालाप किया करूँगी। इस विषय पर अपने विचार बहुत न बढ़ाकर अब मैं आप ही की सम्मति पर अनु-गमन करना चाहूँगी।

यौगंधरायण—यही तो उचित है। तब फिर मैं अनंतवीर्य को नकारात्मक निश्चित उत्तर दिए देता हूँ।

पद्मावती—सो तो है ही।

इस प्रकार वार्तालाप के पीछे ये दोनो पृथक् हुए, और मंत्रीजी ने पद्मावती का सारा विवरण मगधेश दर्शक को सुना दिया, जिससे उन्हें पूर्ण प्रसन्नता हुई। अनंतर पांचाल-पति अनंतवीर्य से वार्तालाप करने लगे—

यौगंधरायण—मैंने देव ! आपके इच्छानुसार बेटी पद्मावती से आपके विषय में निश्चित वार्तालाप कर लिया है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



अनंतवीर्य—बड़ी कृपा, मंत्रिप्रवर ! उनका निश्चित विचार क्या है ?

यौगंधरायण—आपके संबंध में उनके भाव प्रतिकूलता-गर्भित तो हैं नहीं, किंतु अभी अवस्था छोटी होने से विवाह के विषय पर निश्चितरीत्या विचार करने को सन्नद्ध नहीं हैं।

अनंतवीर्य—यह तो, आर्य ! कुछ अनोखी-सी बात है। आपके-से चतुर महामंत्री को ऐसा समझाने में विलंब न होना चाहिए था कि वास्तव में उनका वयक्रम विवाह के योग्य हो चुका है। जब मुझ में कोई कथनीय दोष नहीं देखतीं, तब ऐसा अनिश्चित उत्तर कुछ अनोखा-सा लगता है।

यौगंधरायण—है आपके कथन में न्यूनाधिक सार, किंतु उनका मानसिक भाव चल इसी प्रकार से रहा है। मैंने समझाने का भी प्रयत्न किया। विदित ही है कि बाल-हठ, राजहठ और स्त्री-हठ कठिनता से छूटते हैं। यहाँ तो तीनो प्रकार के हठों का न्यूनाधिक सम्मिश्रण है।

अनतवीर्य—क्या आप उचित समझते हैं कि मैं एक बार फिर उन्हें अनुकूल करने का प्रयत्न करूँ।

यौगधरायण—मैंने भी उनसे यह प्रश्न किया था, किंतु उन्होंने इसे ठीक न माना। यदि आप विशेष वार्तालाप चाहते हों, तो अपने मित्र से कर सकते हैं, क्योंकि स्वसा ने उनसे भी भाव प्रकट कर दिए हैं।

अनंतवीर्य—तब यही करूँगा।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



अनंतर दो-चार दिनों में पांचालराज ने मगधेश से इस विषय पर वार्तालाप किया, और उनके द्वारा भी यह जानकर कि राजपुत्री अभी विवाहार्थ सन्नद्ध नहीं थीं, इस विषय की चर्चा छोड़ दी।

समय पर मृगया का उचित प्रबंध किया गया, और तीनो राजन्यवर्ग हाथियों के समुचित समारोह में मृगयार्थ पधारे। ठीक संख्या में अन्य मृगयार्थी तथा अनुयायी भी गए। तीनो राजे एक-एक हाथो पर चढ़-चढ़कर, एक एक अन्य प्रवीण मृगयार्थी साथ लेकर जंगल में ठीक दाँवों पर लगे, तथा हाँके का अच्छा प्रबंध किया गया। अन्य लोग भी दो-चार हाथियों पर बंदों पर लगाए गए, तथा दस-बीस सजे-सजाए हाथी आवश्यक कार्यों के लिये सन्नद्ध रहे। हाँके के प्रभाव से समय-समय पर पाँच सिंह आगे-पीछे निकले, जिनमें से बाणों द्वारा सम्राट् उदयन ने दो मारे, और मगधेश ने एक, तथा दो सिंह निकल गए, क्योंकि अनंतवीर्य का लक्ष्य चूक गया था। मगधेश ने बार-बार सम्राट्वाली मृगया-पटुता तथा लक्ष्य-भेदन की प्रवीणता की प्रशंसा की, जिससे पांचाल-पति का चेहरा कुछ उतर गया। जंगल में सबों ने इकट्ठे होकर पहले से एकत्र सुस्वादु वस्तुओं से मुख-यात्रा की। अनंतर सब लोग राजधानी को पलट आए। पांचाल-पति की न तो विवाह-सबंधिनी इच्छा पूर्ण हुई, न मृगया ही सफल रही। अतएव नत-मस्तक होकर आप मित्रों से उचित प्रकारेण

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



मिलकर स्वदेश को प्रस्थित हो गए। इधर महामंत्री यौगंधरायण ने एक बार युक्ति-पूर्वक सम्राट् से द्वितीय विवाह के संबंध में बात चलाई। यों वार्तालाप हुआ—

यौगंधरायण—देव! आपको विदित ही है कि कौशांबी का साम्राज्य था तो बहुत प्रभावशाली और सबल, किंतु पूज्य पिता के समय कुछ दिनों के लिये अपनी शक्ति की क्षीणता भी हो गई थी।

उदयन—है तो ऐसा ही, आर्य! पांचाल का देश अपने ही साम्राज्य का अंग था, और वर्तमान पांचालपति का पिता अपना ही राष्ट्रीय था ही, किंतु बल बढ़ाकर वह स्वतंत्र बन बैठा। अनंतवीर्य था तो महर्षि जमदग्नि के आश्रम में मेरा सहपाठी, किंतु व्यवहार उसका मुझसे कभी ठीक न रहा, वरन् उसमें मुझसे कुछ अनावश्यक ईर्ष्या भी दिखी। यहाँ मगध में भी उसने मुझसे व्यवहार प्रेम-पूर्ण न रखकर अनुचित संभाषण तक किए।

यौगंधरायण—मेरा विचार ऐसा है कि पांचाल-राज्य फिर से अपने साम्राज्य में सम्मिलित होना चाहिए। कुछ दिनों से मैं यही सोच रहा हूँ।

उदयन—है तो, काकाजी! आपकी चिंता बहुत ही पूज्य, किंतु उसकी वर्तमान शक्ति अपनीवाली से कुछ न्यून नहीं है। ऐसी दशा में पांचाल-पराजय का प्रश्न कुछ सुगम नहीं दिखता।

यौगंधरायण—है तो ऐसा ही, किंतु उपाय करने से बहुतेरे कष्ट-साध्य विषय सुसाध्य भी हो जाते हैं।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



उदयन—क्या उपाय आप सोचते हैं ? आर्य !

यौगंधरायण—मेरा विचार ऐसा है कि उज्जयिनी की सहायता से तो यह कार्य वारे लगता नहीं दिखता, क्योंकि वहाँ की शक्ति ऐसी-ही-वैसी है, तथा उनसे पांचाल का व्यवहार भी प्रेम-पूर्ण है।

उदयन—यह तो हई है; अपने यहाँ से दूर भी है। उनका व्यवहार भी पांचाल-पति से बहुत नहीं, तो भी साधारण-तया अच्छा है ही। यदि विशेष हठ किया जाय, तो कुछ सहायता न्यूनाधिक मात्रा में संभव होगी, किंतु उससे कुछ काम नहीं बन सकेगा। कोई और युक्ति सोचनी पड़ेगी।

यौगंधरायण—मेरी इच्छा न केवल पांचाल-राज्य को नत करने की, वरन्, काशी, बंग, लौहित्य और कलिंग के भी प्रतिकूल प्रसर की है। ये शक्तियाँ भी किसी समय अपने साम्राज्य की सहायक थीं, किंतु अब कोई संबंध नहीं रखतीं।

उदयन—मुझे तो कोशल-पति के भी तेवर बहुत अच्छे नहीं दिखते।

यौगंधरायण—हैं ये ही सब बातें, किंतु इनके लिये युक्ति-पूर्वक प्रबंध की आवश्यकता है। केवल इच्छा से काम थोड़े ही निकलते हैं।

उदयन – ऐसा तो है ही आर्य ! फिर किया क्या जाय ?

यौगंधरायण—यही सब तो सोचना है। अभी कोई शीघ्रता नहीं है। फिर भी समय पर किसी महती शक्ति से पूर्ण मित्र-भाव

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



स्थापित होने से उसकी भी सहायता से हम दोनो मिलकर पहले पांचाल को नत करें, अनंतर आगे पैर बढ़ाए जायँ।

उदयन—ऐसा कौन सहायक मिला जाता है? मुझे तो कोई दिखता नहीं।

यौगंधरायण—ढूँढ़-खोज की आवश्यकता रहती है। यदि कहीं आपके द्वितीय विवाह का डौल करके कोई दृढ़ सहायक प्राप्त किया जाय, तो कैसा?

उदयन—आप तो, आर्य! गृहस्थी के कर्तव्य-खंडन को साम्राज्य-मंडन से मिलाना चाहते हैं। स्त्री-पुरुष का प्रेम बहु-विवाहों से न्यूनाधिक शिथिल पड़ जाता है। साहित्य में आचार्यों ने भी लिखा है कि एक नायक के एकाधिक नायिकाओं से अनुरक्त होने से शृंगाराभास हो जाता है। आप तो भली भाँति जानते हैं कि सम्राज्ञी मुझसे कितनी अनुरक्त हैं, तथा मैं भी उन्हें किस आधिक्य से क्या, वरन् पूर्णता से चाहता हूँ। ऐसी दशा में केवल राज्य-विवर्धनार्थ गृहस्थी के कर्तव्यों का भंजन तथा सारे जीवन-संबंधी सुख का गंजन क्या योग्य बातें हैं? राज्य-श्री की वृद्धि बहुत ही उचित है, और यथासाध्य उसके लिये प्रत्येक राजा को यत्नवान् होना चाहिए, किंतु कर्तव्य-ध्वंसन के द्वारा नहीं। देखिए, पूज्य पिताजी ने माताजी से २५ वर्षों का वियोग सहा, किंतु उन्हीं की प्रार्थना से भी द्वितीय विवाह न किया। फिर मैं एक परम गुणवती, प्रेम-पुत्तली को कष्ट देकर कैसे

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



राज्य-सुखार्थ यत्नशील हो सकता हूँ ? आर्य ! आप स्वयं सोच लीजिए, किसी प्रेमवती सती-साध्वी का अपमान कितना गर्हित कार्य होगा ?

यौगंधरायण—आप तो, देव ! पूरा व्याख्यान-सा दे गए। साहित्यिक विचार राजनीति से पृथक् माने जाते हैं। सैकड़ों राजे एकाधिक विवाह करते आए हैं। स्वयं महाराजा दशरथ ने तीन किए, आप ही के पूर्व-पुरुष अर्जुन ने चार, भगवान् श्रीकृष्ण ने नौ, उनके पूज्य पिता वसुदेव ने कई, तथा सैकड़ों अन्य नरेशों ने भी ऐसा ही किया है। राज्य-भार भी राजा पर महान् होता है। मैं यह थोड़े ही कहता हूँ कि इंद्रिय-सुखार्थ ऐसा किया जाय। राज्य-श्री-वृद्धि भी राजा के लिये महान् कर्तव्य है। उसके पालनार्थ जो युक्ति उचित हो, उसे अपनाना पड़ता है। धर्महीनता का उपदेश कोई भी सच्चा मंत्री न देगा, किंतु राज्य-रक्षणार्थ अथवा विवर्धनार्थ जो कुछ आवश्यक होता है, वह करना ही पड़ता है। ऐसी दशाओं में भी गार्हस्थ्य सुख खंडित नहीं किया जाता, वरन् राज्य-संबंधी कर्तव्य-पालनार्थ स्वयं सम्राज्ञियों से आज्ञा ले ली जाती है। इन बातों में स्वयं आपको नीरस वचन कहने का कष्ट भी न उठाना पड़ेगा, वरन् इसका भार मुझी पर रहेगा कि सम्राज्ञी स्वयं इस विषय पर आपसे प्रार्थना करें। ऐसी दशा में गार्हस्थ्य प्रेम का भी खंडन नहीं होता। राजाओं को केवल गृहस्थी पर ध्यान नहीं देना होता है, वरन् शरीर से

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



भी बृहत्तर उनकी मुख्य थाती राज्य है, जिसके लिये युद्धों में प्राण तक छोड़ने पड़ते हैं। ऐसी दशा में क्या गार्हस्थ्य सुख का खंडन नहीं होता ? राजा के लिये राज्य की महत्ता शरीर से भी गुरुतर है। आप समझ क्या रहे हैं ? मैं कोई दबाव नहीं डालता, न अपने प्राचीन गौरव का सहारा लेता हूँ। मेरा मंत्र कर्तव्य ही पर आधारित है, उसके प्रतिकूल नितांत नहीं। राजाओं को हठ कभी न करना चाहिए, क्योंकि सारे पूर्व-पुरुषों की कमाई का प्रकट रूप साम्राज्य वर्तमान है। उसे किसी प्रकार पालना पड़ता है। उसके जाने से न केवल अपना, वरन् सारे पूर्व-पुरुषों का मान मिट्टी में मिलता है।

उदयन—राज्य-रक्षण का विषय अवश्य बहुत गहन है, किंतु वर्धन के संबंध में गार्हस्थ्य सुख के कर्तव्यों पर पानी फेरना बहुत ठीक नहीं दिखता, आर्य ! सम्राज्ञी का स्वभाव ऐसा मृदुल है कि आपकी भी बात वह टालेंगी नहीं, किंतु ऐसी सुशीला, पति·प्राणा पत्नी के मान में न्यूनता बहुत समझ-बूझकर हो सकती है। मैं काकाजी ! आपकी उचित आज्ञाओं के प्रतिकूल कभी हठवाद पर न जाऊँगा, किंतु आपको भी ऐसे प्रीति-विनाशक विषय पर सोच-समझकर मंत्र-दान करना चाहिए।

यौगंधरायण—अच्छा, देव! इस विषय पर इस समय मैं हठ न करूँगा। समय पर जो ठीक होगा, सो आप ही हो रहेगा।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



अनंतर मगधेश से मिलकर सम्राट् कौशांबी जाने की प्रार्थना करते रहे, किंतु उन्होंने कह-सुनकर इन्हें कुछ दिनों के लिये अतिथि-रूप में और रोक लिया। एक दिन पद्मावती से ऐसे समय में सम्राट् का वार्तालाप होने लगा, जब कोई और न था।

उदयन—राजपुत्री महोदया ! आपके दर्शन पाकर मैं अत्यंत प्रसन्न होता हूँ। कहिए, आजकल क्या हो रहा है ?

पद्मावती—देव ! अभी तक मेरा जीवन बहुत कुछ देव-पूजन, विद्योपार्जन, ललित कलाओं के अभ्यास आदि में बीता है। जब से आपका आना हमारी राजधानी में हुआ है, तब से सामाजिक विषयों की ओर भी ध्यान जाने लगा है। उस दिन की मृगया में आपके लक्ष्य-भेदन की पटुता बहुत अच्छी प्रकट हुई। देव ने युद्ध-संबंधी शस्त्रास्त्र-कलाओं की योग्यता के साथ ललित कलाओं की भी महत्ता बहुत श्रेष्ठ प्राप्त की है। क्या यह संभव है कि मैं भी ललित कलाओं में आप ही की-सी प्रवीणता उपार्जित कर सकूँ ? कितने दिनों में इसमें कुछ कथनीय योग्यता मिल सकती है ?

उदयन—राजपुत्री महोदया ! किसी विषय की प्रवीणता बहुत करके प्रयत्नकर्ता की इच्छा और अवकाश पर निर्भर होती है। यदि आप इन बातों में चित्त लगाएँ, तथा साल-दो साल परिश्रम करें, तो प्रवीणता-प्राप्ति में कोई कठिनता न होनी चाहिए।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



पद्मावती—इन कलाओं का शिक्षक योग्यतम कौन मिल सकता है ?

उदयन—स्वयं मैंने यह शिक्षा कुलपति जमदग्नि ऋषि के आश्रम में पाई। उन्हीं ने मुझे सुघोषवती वीणा दी। वहीं से आप भी प्रवीणता प्राप्त कर सकती हैं, किंतु इतनी दूर जाना आपके लिये कुछ कठिन है।

पद्मावती—यही तो बात है। इच्छा मेरी ऐसी शिक्षा पाने की उद्दाम है, किंतु अकेली उतनी दूर जाने का साहस नहीं है।

उदयन—है तो आपके कथन में बहुत कुछ सार। अच्छा, एक युक्ति बतलाऊँ ?

पद्मावती—अवश्य कृपा कीजिए; क्या आज्ञा करते हैं ?

उदयन—सम्राज्ञी से आपका प्रेम-भाव बहुत उत्कृष्ट है ही ; मेरे ऊपर भी भ्राता के समान कृपा करती हैं ही। यदि ठीक समझिए, तो साल-दो साल के लिये भगिनी के समान प्रेम-प्रदर्शिका सम्राज्ञी के साथ कौशांबी चली न चलिए। वहाँ मैं स्वयं आपको ललित कलाओं में दक्ष कर दूँगा।

पद्मावती—मेरी इच्छा तो इस प्रस्ताव के प्रतिकूल नहीं है, किंतु बिना सम्राज्ञी का आंतरिक भाव जाने तथा भ्राता की आज्ञा प्राप्त किए इस विषय पर मैं निश्चित स्वीकृति नहीं दे सकती। है न यही बात सम्राट् !

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



उदयन—सम्मति तो आपकी बहुत योग्य है, राजकुमारीजी ! यदि आप सम्राज्ञी से कुछ संभाषण इस विषय पर करें, तो उसका रूप प्रार्थना-सा हो जायगा, तथा आंतरिक स्वीकृति के अभाव में भी वह नाहीं न कर सकेंगी। इधर मुझसे तो आपने इच्छा प्रकट की नहीं, वरन् मेरी ही प्रार्थना आपसे है ? अतएव स्वयं मैं उनकी सम्मति प्राप्त कर लूँगा। रही मित्र मगधेश की स्वीकृति, उसके विषय में भी आपका कुछ कहना अनुचित-सा दिखेगा। इधर मैं चुटकी बजाते हुए उनकी आज्ञा पा लूँगा। मेरी उनकी प्राचीन मित्रता एवं पूर्ण विश्वास के भाव चिरकाल से चले आते हैं। क्या इच्छा है ?

पद्मावती—सम्मति देव की दोनो विषयों पर उचित देख पड़ती है, तो भी मुझी को इतना संकोच होता है कि मैंने आपको थोड़े ही दिनों से जाना है; क्या आपका चिरकालीन आतिथ्य स्वीकार करने में मैंने कोई उतावली तो नहीं कर दी है ? आप अवस्था और अनुभव में मुझसे बड़े हैं; यदि मैं कोई मूर्खता की बात कह जाऊँ, तो आपको उचित है कि मुझे शिक्षण दे दें। मेरा सांसारिक अनुभव अभी समुचित मात्रा का नहीं है; यही भय ऐसे विषयों में मुझे नहीं छोड़ता। देव की क्या अनुभवी सम्मति है ?

उदयन—राजपुत्रीजी ! आपका संकोच है बहुत योग्य, किंतु इसकी आवश्यकता नहीं है। मुझे आप अभी से अभिभावक के समान मान रही हैं। यदि कौशांबी में साल-दो

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



साल विराजने की कृपा कीजिएगा, तो वहाँ मेरा यही रूप रहेगा भी, जैसा कि आप स्वयं चाहती हैं। तो भी मैं यही सम्मति अभी से दूँगा कि मित्र दर्शकजी से मेरा जैसा प्रेम-पूर्ण भाव चिरकाल से चला आता है, उसके देखते हुए इस प्रस्ताव में कोई अनौचित्य नहीं है।

पद्मावती—तब अच्छी बात है। आप दादाजी तथा सम्राज्ञी महोदया की आज्ञाएँ मेरे लिये प्राप्त कर लीजिए। और, यदि उचित समझिए, तो महामंत्री काकाजी की भी सम्मति ले लीजिए।

उदयन—बहुत ठीक है, बहनजी !

इस प्रकार राजपुत्री से संभाषण करके सम्राट् ने सबसे पहले सम्राज्ञी वासवदत्ता से बात की।

उदयन—प्रिये ! आशा है, राजगृह में आप प्रसन्न रही होंगी।

वासवदत्ता—बहुत प्रसन्न रही, आर्यपुत्र ! कोई कष्ट नहीं हुआ। महाराजा दर्शक का व्यवहार बहुत प्रेम-पूर्ण रहा; इधर राजकुमारी पद्मावती से मेरी मित्रता और भी अधिक बढ़ गई है। बड़ी ही उच्च मानस-पूर्ण है।

उदयन—अब तो मेरी इच्छा कौशांबी चलने की हो रही है। राजकुमारी यह चाहती है कि उसे ललित कलाओं का समुचित शिक्षण मिल जाय, किंतु महर्षि जमदग्नि के आश्रम में जाने का उसे साहस नहीं होता। यदि तुम्हारी भी सम्मति

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



हो, तो उसे कौशांबी ले चलने को कहूँ। साल-दो साल वहीं बनी रहेगी। ललित कलाएँ मुझसे सीख लेगी, तथा उसके साथ से तुम्हारा भी चित्त प्रसन्न रहेगा। कहो, क्या कहती हो?

वासवदत्ता—यदि मगधेश तथा काका यौगंधरायणजी भी सहमत हों, तो मुझे क्या आपत्ति हो सकती है। बड़ी ही श्रेष्ठ, धार्मिक तथा गुणवती राजपुत्री है। मैं उससे बहुत ही प्रसन्न हूँ।

उदयन—तो क्या चलाऊँ उससे बात? कोई संदेह तो चित्त में नहीं है?

वासवदत्ता—जब तक आर्यपुत्र का प्रेम मुझसे इतना गंभीर है, जिसकी सीमा विचार-कोटि में भी नहीं आती, तब तक संदेह के लिये क्या स्थान है? उधर राजपुत्री भी धर्म और सदाचार की मूर्ति है, तथा मुझसे स्नेह की मात्रा भी परम गंभीर है। आप कोई चिंता न कीजिए। बात ही कौन बड़ी है?

उदयन—जैसी आज्ञा, देवीजी! अब मैं मित्र दर्शक तथा काकाजी से वार्तालाप कर लूँगा।

इस प्रकार सम्राज्ञी से निश्चय करके सम्राट् ने पहले तो महामंत्री की सम्मति ली, जिससे वह बहुत प्रसन्न हुए। अनंतर उन्हीं के द्वारा मगधेश का मतैक्य प्राप्त हो गया। जब चलने की तैयारी होने लगी, तब राजपुत्री पद्मावती की अंतरंगा सखी माधवी ने एक दिन एकांत में उनसे यों बात चलाई—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



माधवी—देवीजी ! आजकल आपके कौशांबी जाने की चर्चा कैसी सुन रही हूँ ? आप तो विना मेरी सम्मति लिए कभी कोई साधारण कार्य भी नहीं करती थीं, फिर इस भारी मामले में अनुचित शीघ्रता कैसी देख रही हूँ ?

पद्मावती—कहना तुम्हारा, सखी, है नितांत सत्य । मैंने अपनी ओर से कोई विचार तक न किया, निश्चय की बात तो दूर रही । ललित कलाएँ सीखने की मेरी इच्छा सदैव से थी, जैसा कि आपको भी भली भाँति ज्ञात है । उसी विषय पर सम्राट् से अकस्मात् वार्तालाप होने लगा, और उन्होंने मेरे कौशांबी जाने का प्रस्ताव कर दिया, जिसकी स्वीकृति मेरी ओर से विना समझे कुछ शीघ्रता-पूर्वक अवश्य हो गई । एकाएकी बात के उठ पड़ने से पूर्ण विचार करने का मुझे अवकाश न मिला । सखीजी, तो भी मैंने उसका होना महाराजा तथा काकाजी की सम्मतियों पर आधारित कर दिया था, अपनी ओर से कोई निर्णय नहीं किया था ।

माधवी—इतना तो मैंने भी सुन लिया है, किंतु आपका ऐसा आश्चर्य-पूर्ण भाव एकाएकी जाग्रत् कैसे हो गया ? अपने राज्य में कहीं रहिए, किंतु बाहर जाने में लोग भाँति-भाँति के विचार भी कर सकते हैं ।

पद्मावती—जब मेरा रहना स्वयं सम्राज्ञी महोदया के साथ होगा, तब संदेह-जनक कोई बात कैसे समझी जा सकती है ? सखीजी, तुम्हारा ऐसा विचार कैसे हो पड़ा ?

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



माधवी—देवीजी ! दुनिया ऐसी भोली-भाली नहीं होती, जैसा आप समझती हैं । आपकी सम्राट् से साधारणी वार्ता भी ऐसी प्रेम-पूर्ण होती थी कि औरों को नहीं, तो मुझे संदेह उठ ही पड़ा था । अभी आप सांसारिक भावों के संबंध में कुछ ऐसी अछूती-सी हैं कि धार्मिकता और सज्जनता की महत्ता के कारण शीघ्रता में ऐसी बातें कर जाती हैं, जो सांसारिक अनुभव के संबंध में इतरों को संदेह उत्पन्न करने-वाली भी हो सकती हैं । मैं आपसे इस विषय पर बात चलानी ही चाहती थी कि अकस्मात् ऐसा भारी निर्णय सामने आ गया ।

पद्मावती—प्यारी सखी ! तुमसे मेरा कुछ छिपाव-दुराव कभी नहीं रहा है । सम्राट् उदयन की प्रशंसा मैं कुछ दिनों से सुन रही थी । मेरे दादाजी मगधेश उनके प्रगाढ़ मित्र हैं, जिनके कक्षों में उनके दो-तीन चित्र उपस्थित हैं । उन्हें देख-देखकर मुझे दो-चार बार रोमांच तक हो आया, तथा मान-सिक प्रेम-भाव ऐसा दृढ़ हुआ कि दो बार उनके स्वप्न-दर्शन भी हुए । इस बार जब वह हमारे राजप्रासाद को पधारे, तब प्रत्यक्ष दर्शन का भी कई बार अवकाश प्राप्त हुआ । सौजन्य उनका बहुत ही श्लाघ्य है, रूप अनमोल है, तथा युद्ध, साहस, मृगया, ललित कलाओं आदि में उनकी महत्ता सर्वतोभावेन प्रशंसनीय है । ऐसे पुरुष-रत्न को प्रत्यक्ष देख-देखकर तथा सामाजिक नियमानुसार उससे सभ्यता-गर्भित वार्तालाप कर-करके कौन अनूढ़ा अपने चित्त को रोक

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



सकती है ? दोष केवल एक है कि वह विवाहित हैं। इसी विचार से मैंने इस विषय पर यथासाध्य चित्त-निरोध के भरसक प्रयत्न किए, किंतु अपनी सारी धार्मिकता, सज्जनता, आचरण-शुद्धता आदि का आश्रय ले-लेकर भी मैं मनश्चां-चल्य रोकने में पूर्णतया सफल न हुई। इतने ही में भ्राता मगधेश तथा काका महामंत्रीजी की माननीय भावनाएँ भी इसी ओर चलती हुई ज्ञात हुईं। इतने पर भी मैंने सम्राट् से कौशांबी जाने की कोई प्रार्थना न की, वरन् ललित कलाओं के शिक्षण पर विचार करके उन्हीं ने ऐसा प्रस्ताव अपनी ओर से किया। अब तुम्हीं कहो, प्यारी सखी, कि मैं करती क्या ? मनुष्य हूँ, कोई पाषाण-मूर्ति नहीं। दादाजी तथा काकाजी को मेरी प्राचीन प्रीति का कोई ज्ञान था नहीं, तथापि उन दोनो ने भी इस विषय पर स्वीकृति तुरंत दे दी, सोभी बिना मेरी प्रार्थना के। अब तुम्हीं कहो, इसमें मैंने क्या अनुचित शीघ्रता कर डाली ?

माधवी—राजपुत्री महोदया ! मैं अब तक आपके चित्त में प्रेम-भाव का इतना अमोघ साम्राज्य नहीं समझती थी। मैं तो आपको केवल धार्मिक व्यक्ति जानती थी, जिसके चित्त में कर्तव्य-पालन का ही भाव प्रबल समझ पड़ता था। सम्राट् के विषय में ऐसे भावों का बोध मुझे शब्दों से कौन कहे, इंगित द्वारा भी नहीं हुआ। जब से ,वह यहाँ पधारे हैं तब से आपके आचरणों से मुझे संदेह क्या, निश्चय-सा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



हुआ। तो भी सम्राट् के भाव विना जाने यदि साल-दो साल कौशांबी में विराजिएगा, तो आपकी परम प्रगाढ़ आसक्ति के कारण प्रेम-याचना में उनसे याचिका का रूप आ जायगा, जो बात आपके रूप, गुण, गौरव आदि के प्रतिकूल पड़ेगी। यह मैं नहीं कहती कि सम्राट् आपका निरादर करेंगे। रूप, गुणादि में आप सम्राज्ञी से किसी भाँति न्यून तो हैं नहीं, किंतु उन दोनो का अथाह प्रेम आपकी इच्छा का बाधक होगा। जहाँ तक मैं देखती हूँ, सम्राट् आपसे स्वसा का-सा प्रेम करते हैं, तथा शब्दों से भी भगिनी ही कहते हैं। आपका आंतरिक भाव अभी उन पर विदित नहीं समझ पड़ता। यदि कहीं इसे जानकर उन्होंने नाहीं कर दी, तो मागध राज्य के अपमान के साथ आपके रूप, गुण, गौरवादि का भी निरादर अनिवार्य होगा। अपने प्रेम-गांभीर्य के कारण आप भावनाओं को दीर्घ काल-पर्यंत सम्राट् से छिपाने में समर्थ भी न हो सकेंगी। कौशांबी जाने का विचार मुझे बहुत योग्य नहीं दिखता।

पद्मावती—है तो प्यारी सखी, तुम्हारे कथनों में बहुत कुछ सार, किंतु मैं इस काल अपनी भावनाओं के अवरुद्ध करने में समर्थ नहीं हूँ। तुम भी साथ चलोगी ही। सिवा तुम्हारे और किसी सखी को मैं साथ ले भी न जाऊँगी। इतनी दृढ़ता मुझमें भी देख लेना कि प्रार्थी का रूप आचरणों, शब्दों, इंगितों आदि में नहीं आने पाएगा। यदि कोई भूल होने

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



लगे, तो तुम भी सचेत कर देना। अब कौशांबी जाने की इच्छा रोकने में अपने को मैं अशक्त पाती हूँ।

माधवी—शब्दों में तो आप अपने भाव प्रकट होने न देंगी, किंतु आचरणों तथा इंगितों को दबाना सदैव संभव नहीं होता। जब एक ओर आपका प्रेम-लोलुप चित्त स्ववश नहीं है, और दूसरी ओर मगधेश्वर तथा महामंत्री की मान्य सम्मतियाँ भी इसका समर्थन करती हैं, तब मैं भी अपना विरोध स्थगित करती हूँ। साथ चलूँगी ही, यथासाध्य आचरणों को शुद्ध रखने में सहायिका रहूँगी।

पद्मावती—बड़ी कृपा हुई, प्यारी सखी! बातें तुम्हारी सब उचित हैं; मैं अपनी ही प्रेम-संबंधी दुर्बलता से विवश हो रही हूँ। यथासाध्य विशुद्धाचरण का प्रयत्न होगा ही। यह भी समझती हूँ कि इस ओर के असाफल्य से किसी अन्य परमोत्कृष्ट वर का भी मिलना कठिन होगा, किंतु मैं किसी और से विवाह करूँगी ही नहीं। आगे जो होगा, देखा जायगा।

---

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# अष्टम परिच्छेद

## पांचालीय कुचक्र

जब अनंतवीर्य असफल-मनोरथ होकर मगध से स्वदेश पलटे, तब पहले तो पद्मावती की नाहीं से उस ओर से चित्त हटाने का निश्चय करते हुए गए, किंतु जब कुछ दिनों में यह संवाद मिला कि रूप-राशि पद्मावती कौशांबी जा चुकी है, तब उन्हें महामंत्री यौगंधरायण की नाहीं में पद्मावती की इच्छा के अतिरिक्त कुछ उनकी भी कूट-नीति की चाल का संदेह क्या, निश्चय-सा हो गया। तो भी कुछ दिनों तक उन्होंने चित्त-निरोध का प्रयत्न किया, किंतु जब इसमें अपने को असमर्थ पाया, तब एक दिन अपने प्रथम ? चाकर का स्मरण करके वार्तालाप आरंभ किया।

अनंतवीर्य—कहो मणिभद्र ! आजकल राज्य की क्या दशा है ?

मणिभद्र—देव के प्रबंध-कौशल से सब कुछ ठीक-ही-ठीक चल रहा है। महामंत्री तथा महासेनापति महोदय अपने-अपने कार्यों में भली भाँति निरत हैं। कुछ दिनों से देव की कोई आज्ञा मुझे न हुई।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



अनंतवीर्य—इसीलिये तो आज स्मरण किया है। तुम्हारे प्रयत्नों से सुंदरियाँ तो कई युक्ति-पूर्वक समय-समय पर प्राप्त हो चुकी हैं, किंतु पूर्ण प्रसन्नता का अभाव नहीं जाता।

मणिभद्र—ऐसा तो स्वाभाविक है। प्रवीण काम-शास्त्रियों की अभिरुचि सदा एक ही ओर नहीं रहती। फिर विना विवाह के युवराज की भी प्राप्ति नहीं हो सकती। इतस्ततः चित्त चाहे जहाँ ले जायँ, तथापि नरेशों के लिये वैवाहिक बंधन होना अनिवार्य है। मागध राजपुत्री पद्मावती के रूप-गुणों की तो बड़ी प्रशंसा सुन पड़ती है। देव का इन्हीं दिनों उधर जाना भी हो चुका है। क्या इस ओर ध्यान नहीं गया?

अनंतवीर्य—गया क्यों नहीं। कई कारणों से मैं तुम्हें वहाँ ले न जा सका, नहीं तो संभव था कि तुम्हीं कोई युक्ति लगा सकते। वह कन्या-रत्न तो मुझे बहुत ही भाया, और मैंने प्रयत्न भी कम न किया, किंतु उसकी ओर से सिवा नकार के कोई उत्तर ही न मिला।

मणिभद्र—क्या सीधी-सीधी नाहीं हो गई? आश्चर्य-सा है।

अनंतवीर्य—ऐसा तो नहीं हुआ। मुझसे तो लघु वय का बहाना किया गया, उधर वह कौशांबी स्वयं जा चुकी है। वर्तमान कौशांबी-नरेश उदयन मेरा सहपाठी भी था। उस काल उसका कौशांबी से संबंध भी स्वयं उसी तक को न

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



ज्ञात था। फिर भी मैं उससे प्रसन्न कभी न रह सका। अब रूप-राशि वासवदत्ता को पाकर भी पद्मावती को ले गया है।

मणिभद्र—क्या राजगृह में भी उनके तेवर ऐसे ही दिखे थे ?

अनंतवीर्य—यही तो महदाश्चर्य है। वहाँ उसका वार्तालाप पद्मावती से साधारणी सामाजिक भद्रता-भर का था। वास्तव में कन्या ही उसकी ओर कुछ विशेष झुकती-सी थी, किंतु उसकी भी कोई लगन समझ न पड़ी। फिर भी न-जाने क्यों विना ब्याहे भी उसे कौशांबी ले गया है। यह भी आश्चर्य है कि मित्रवर मगधेश ने यह मान कैसे लिया ?

मणिभद्र—देव के कुछ सेवकों का कथन था कि वह कन्या केवल ललित कलाओं की शिक्षा पाने वहाँ गई है।

अनंतवीर्य—ऐसा तो कहा जाता है, किंतु वास्तविक बात और ही होगी।

मणिभद्र—हो यह भी सकता है, यद्यपि स्वयं देव का अनुभव संदेहों के प्रतिकूल है।

अनंतवीर्य—अब तो न केवल संदेह, वरन् क्रोध भी मुझे थोड़ा नहीं हो रहा है।

मणिभद्र—तब फिर क्या आज्ञा होती है ? महामंत्री, सांधिविग्रहिक तथा महासेनापति महोदयों से भी मंत्र कर लिया जाय, क्योंकि किसी आक्रमण के प्रकट हो जाने से कौशांबी तथा मगध, दोनो से विरोध संभव है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



अनंतवीर्य--मंत्रिवर्ग ऐसे एक निजू विषय पर हाँ में सम्मति कैसे दे सकता है ? प्रकट होने से भारी विरोध संभव है ही, किंतु यहाँ तो गुप्त भाव से काम होने का आयोजन सोच रहा हूँ। ऐसे चतुर लोग नियोजित हों कि असाफल्य से भी उपद्रव का कोई मूल प्रकट न हो।

मणिभद्र—सेवक तो देव के एक-से-एक चतुर हैं, जो बड़ी ही सावधानी से काम कर ले जायँ, किंतु कौशांबी में भी कूट-नीतिज्ञों को कमी नहीं है। असाफल्य की दशा में बात शायद छिपी भी रहे, किंतु यदि कन्या का अपहरण वास्तव में हो गया, तो वहाँ से भी प्रयत्न कम न होगा। ऐसी दशा में भेद के खुल जाने का भय अवश्य रहेगा।

अनंतवीर्य—साफल्य की दशा में कन्या साल-दो साल राज्य के बाहर किसी गुप्त स्थान में रक्खी जायगी। ऐसे दो-तीन स्थान अपने प्रबंध में हैं ही। इतने में वह स्ववश हो जायगी। उसका वास्तविक परिचय कभी प्रकट न किया जायगा। सोचने की बात यह है कि अपहरण का प्रबंध किस प्रकार से किया जाय ? चाटों, भटों आदि के द्वारा पता लगा चुका हूँ। सुना जाता है कि वह नौकारोहिणी हो-होकर प्रायः नदी की सैर किया करती है, तथा यमुना-स्नान पर भी रुचि है।

मणिभद्र—तब तो यहाँ से सशस्त्र अनुयायियों की दो-तीन नौकाएँ ऐसी सुसज्जित हो सकती हैं, जिनका पांचाल-

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



राज्य से कोई संबंध न हो। डाकू-दल भी रूप बदलकर जाय, जिससे असाफल्य से भी अपना कोई संपर्क प्रकट न हो। अपने ऐसे चतुर चाकर हैं बहुतेरे। गुपचुप प्रबंध किया जाय, जिसमें किसी को कोई पता न पड़ सके।

अनंतवीर्य—यह कर कौन सकता है?

मणिभद्र—ऐसा ही प्रबंध यह सेवक संपन्न कर देगा, किंतु भंडाफोड़ यदि कहीं हो गया, तो मंत्रिमंडल से रक्षा का भार देव पर ही रहेगा।

अनंतवीर्य—सो तो है ही, इसकी चिंता न करो।

इस प्रकार संभाषण के पीछे चतुर चरों, प्रवीण युद्ध-कर्ताओं आदि का एक गुप्त समाज मणिभद्र की अधीनता में नियोजित हुआ, जिसने वस्त्रों के व्यापारियों का रूप ग्रहण करके कौशांबी में प्रवेश किया। लोगों ने इन्हें वास्तविक व्यापारी समझा।

जब से कौशांबी में महामंत्री यौगंधरायण का महामंत्रित्व प्रारंभ हुआ था, तब से यहाँ की उन्नति विशेष तीव्रता के साथ चलने लगी थी। रुमण्वान के महासेनापति हो जाने से राजकीय सेना-विभाग पर भी अच्छा ध्यान दिया जाने लगा था। सैनिकों का शिक्षण बहुत योग्यता-पूर्वक चलने लगा था। चमूपों, सेनापतियों आदि पर महासेनापति का निरीक्षण अच्छा होने लगा था, जिससे वे भी अपने-अपने कार्यों में बहुत चैतन्यता-पूर्वक

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



रत हुए। युद्ध-शास्त्र की शिक्षा परमोत्कृष्ट हुई, तथा सैनिकों को शस्त्रास्त्र-प्रहार का ज्ञान और अभ्यास भी यथायोग्य होने लगा। उनको प्रतिदिन तीन पहर कठिन परिश्रम करना पड़ता था। उनकी वर्दी, खड्ग, धनुष-बाण, नेज़ा, कटार, पानी आदि मिलाकर प्रति सैनिक पर अट्ठाईस सेर का बोझ क़वायद, परेड आदि के समय रहता था। कभी-कभी एक सप्ताह में १६० मील तक चलना पड़ता था। नदी-नालों आदि पर काम-काजू पुल बना लेने, उन्हें युक्ति-पूर्वक ससेन पार करने, युद्ध-स्थल के मानचित्र ( नक़शे ) समझने, शत्रुओं के दावँ-पेंच ताड़ने और उनसे गुप्त रखकर उन पर भेद लगाने आदि के काम सिखलाए जाते थे। रथी, गजी, हयसादी और पदातीवाली चतुरंग सेना रहती थी। धनुष बड़े और पुष्ट होते थे, तथा बाण भी लंबे रहते थे। सभी शस्त्रास्त्रों के प्रहार के काम सिखलाए जाते थे। नदी पर युद्धों के योग्य नौकाएँ चलती थीं, जिनमें प्रबल युद्धकर्ता काम करते थे। नदी पर नगर के दोनो ओर चार-चार, छ-छ नाके स्थापित थे, जिनसे नदी द्वारा आने-जानेवाली नौकाओं आदि का प्रबंध राजधानी की रक्षा के निमित्त स्थापित था। ये नाके ऐसे गुप्तभावेन रक्खे जाते थे कि दर्शक इन्हें साधारण प्रबंध-मात्र समझते थे। कौशांबी के ऊँचे-ऊँचे चतुष्कों ( बुर्जों ) से भानु-किरणों के द्वारा सैनिक नियमों की सहायता से इन सबको आवश्यक संवाद प्रबंधार्थ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



भेजे जाते थे। सैनिकों के रहने को कोसों तक फैली हुई स्कंधावार परंपराएँ बनाई गई थीं, जिनके सामने लंबे-चौड़े मैदान बने थे, जिनमें सैनिक व्यायाम करते तथा सामरिक शिक्षा पाते थे। सेना साहस-पूर्ण तथा आत्म विश्वासी थी। उसकी राजभक्ति भी त्रिविध परीक्षाओं द्वारा समय-समय पर जाँची जाती थी। सैनिकों का इतना अच्छा मान था कि वे साम्राज्य से पूर्णतया प्रसन्न रहते थे। उनमें विशेष संख्या क्षत्रियों की थी, किंतु ब्राह्मण भी बहुत कुछ थे। कुछ सेनाएँ शूद्रों आदि की भी थीं।

नगर-प्रबंध उत्तम रीति से दंडपाशाधिकरण द्वारा होता था, और सारे साम्राज्य का भी। नदी में स्नानों के लिये अच्छे प्रबंध किए गए थे। राजन्यवर्ग तथा पौर जानपद भी यथायोग्य नौकाओं द्वारा जल-विहार किया करते थे। सारे साम्राज्य से लोग विविध कार्यों के लिये राजधानी को आया करते थे, जिनके ठहरने को विश्राम-गृह बने हुए थे। उनमें निःशुल्क ठहरने का प्रबंध था, और विशेष सुविधा चाहनेवालों के लिये सशुल्क का भी। आज उसी के प्रशस्त प्रांगण में वट-वृक्ष के नीचे मित्रों की एक मंडली एकत्र हुई है, जिनमें वार्तालाप हो रहा है।

प्रबंधक—भाइयो! आज कई दिनों के पीछे यह मित्र-मंडली एकत्र हुई है। कहिए, काम-काज कैसा चल रहा है?

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



वणिक्—जब से हमारे वर्तमान सम्राट् का प्रबंध नवीन मंत्रियों द्वारा चला है, तब से साम्राज्य की दिन-दूनी, रात-चौगुनी उन्नति हो रही है। पर जानपद प्रसन्न हैं। किसी पर कोई अनुचित दबाव नहीं है। बरकत भी अच्छी है। बनिज-व्यापार उत्तमता के साथ चलता है। राज्य-संचालकों द्वारा प्रजा को समुचित सहायता धन-वृद्धि के उद्योगों में भी मिलती है। बाहर से भी वस्तुएँ उचित मात्रा में आती तथा यहाँ से जाती हैं। यवनों से भी व्यापारिक संबंध लाभप्रद है।

वाहन-संचालक—जब से साम्राज्य की उन्नति वृद्धिमती हुई है, तब से विविध प्रांतों से लोग आया-जाया भी करते हैं, सो भी विशेषता से, जिससे वाहनों की माँग अच्छी है। हम लोगों की तो भाई, खूब चलती है।

नापित—एक आप ही लोगों पर क्या है? प्रजावर्ग में धन पास होने से क्षौरकर्ताओं, कर्मकारों आदि को लाभ है। कपड़े बुननेवाले भी उनमें दिनोंदिन उन्नति करते जाते हैं, जिससे अच्छे-से-अच्छे वस्त्र बनने लगे हैं। उष्णीश, दुकूल-युग्म आदि उत्कृष्ट बिकने लगे हैं, तथा स्त्रियों के लिये स्तनांशुक भी क्या ही बढ़िया-बढ़िया आ रहे हैं। दो कार्षापण पास रहने से सारी सुविधाएँ प्राप्त हो जाती हैं।

पौराणिक—फिर धार्मिक विचारों में भी परिवर्तन हो रहे हैं। आजकल प्राकृत पुराणों का चलन देश में बढ़ रहा है। केवल ईश्वरीय भाव की कमी देख पड़ती है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



कर्मकार—यह कहाँ का टंटा निकाला ? ईश्वरीय विचारों में आजकल कौन पड़ता है ? अपना काम सीधे-सीधे भली भाँति करते जाओ, इसी में पुण्य है। मरी आदि से बचने को पहाड़ों, नदियों, गायों, अग्नि आदि के पूजन हम लोग कर लेते हैं। इन्हीं से काम चल रहा है।

वणिक्—और नहीं तो क्या ? आपके सूखे ब्रह्म-विचार के लिये किसे चाहना है ? यह पुराणवाचकों का ढकोसला बेकार है।

क्षत्रिय—यही तो बात है। जो परमेश्वर हमारे भले-बुरे से नितांत उदासीन है, उसे लेकर हम क्या भाड़ में झोकेंगे ? बहुत हुआ, तो लक्ष्मी, उमा आदि को पूज लिया।

पौराणिक—जब आप लोगों को ऐसे विषयों पर विचार-विनिमय अनावश्यक लगता है, तब इसकी चर्चा ही क्यों चलाई जाय ?

ब्राह्मण—यही तो बात है। बहुत हुआ, तो एकाध पशु-बलि कर दी, जिसमें धर्म का अंग भी नितांत छोड़ा हुआ न समझ पड़े।

प्रबंधक—अरे भाई ! कहाँ की कट-कट निकाली ? कोई काम-काज की बात चलाओ।

नापित—यही तो बात है, भैया !

वणिक्—अच्छा, सुनिए। आजकल बाहर से दो-चार कपड़े बेचनेवाले आए हैं। अच्छे-अच्छे वस्त्राभूषण उनके पास हैं।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



नापित—उनका हाल तो मैंने भी सुना है। ऐसी अच्छी-अच्छी वस्तुएँ बेचते और मोल भी लेते हैं कि उनके द्वारा व्यापारियों को खासा लाभ हो रहा है। ऐसे सज्जन हैं कि ग्राहकों को प्रसन्न खूब रखते हैं। काम उन लोगों का अच्छा चल रहा है। नौकाओं द्वारा नवीन माल मँगाते जाते तथा मोल लिया हुआ बाहर नित्य ही भेजा करते हैं। यदि ऐसे दो-चार जत्थे और आ जायँ, तो अपने नगर के व्यापारी निहाल हो जायँ।

वणिक्—यही तो बात है। नदी में तैरने की कलाएँ भी अच्छी-अच्छी जानते तथा पौर जानपदों को दिखलाते हैं। आजकल जो मागध राजकुमारी अपने यहाँ पधारी हैं, वह भी सम्राज्ञी के साथ प्रायः नदी में स्नान करती तथा नौकारोहिणी होकर सैर भी किया करती हैं।

क्षत्रिय—बड़ी ही धार्मिक, सुंदरी तथा उच्चाचरणवाली राजपुत्री हैं। कभी किसी के संबंध में कोई अनुचित शब्द मुख से नहीं निकालतीं। यथाशक्ति सभी के हित-साधन में प्रवृत्त रहती हैं।

ब्राह्मण—भला, मगध से इतनी दूर यहाँ पधारी क्यों हैं?

क्षत्रिय—अपने सम्राट् का ललित कलाओं में ज्ञान एवं अभ्यास बहुत ही श्रेष्ठ है। उधर राजकुमारी भी इन कलाओं की प्राप्ति चाहती हैं। बाहर कोई श्रेष्ठ शिक्षक मिला नहीं, सो यहीं चली आईं। महामंत्रीजी का व्यवहार उस राज्य से

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



भी बहुत ही प्रेम-पूर्ण है, तथा अपने सम्राट् का भी मित्र-भाव मगधेश से अपूर्व है। इन कारणों से राजपुत्रीजी का यहाँ आना एक साधारणी बात समझी गई होगी।

ब्राह्मण—नवीन विवाहादि का विचार तो नहीं है ?

वणिक्—यदि ऐसा होता, तो मागध राजकुमारी का व्यवहार अपनी सम्राज्ञी से अच्छा न होता। उधर इन दोनो में भी ऐसी प्रगाढ़ प्रीति है कि सम्राट् द्वारा शिक्षण-काल के अतिरिक्त ये दोनो राजमहिलाएँ प्रायः साथ ही रहती हैं। सम्राज्ञी से प्रेम-भाव भी सम्राट् का ऐसा है कि द्वितीय विवाह की कभी बात ही नहीं उठ सकती।

क्षत्रिय—सम्राटों आदि के एकाधिक विवाह होते तो बहुतायत से हैं, किंतु अपने यहाँ यह बात दूर जान पड़ती है।

प्रबंधक—यही मुझे भी समझ पड़ता है।

इस प्रकार वार्तालाप के पीछे यह सभा समय पर भंग हुई, और लोग अपने-अपने कामों में लगे। मणिभद्र के समाज ने कौशांबी में ऐसे उच्च और सर्वप्रिय आचरण रक्खे, तथा प्रकट में अपने व्यापार में ऐसा मन लगाया कि इन पर किसी को संदेह न हुआ।

एक दिन प्रातःकाल कुछ सखियों के साथ पद्मावती नदी-स्नानार्थ पधारीं। रक्षक साथ थे, जो घाट से कुछ दूर आड़ में बैठे, जिसमें स्त्रियों के स्नान में बाधा न पड़े। यहाँ यमुना-नदी में घाट बहुत ही अच्छा बनाया गया

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



था। पत्थर के आठ-दस खंभों में लोहे के तार खींचे हुए थे, जिसमें कोई नहानेवाला तारों के बाहर गहरे में न चला जाय। तारों के भीतर तीन हाथ गहरा पानी भरा हुआ था, तथा धारा का प्रबंध ऐसा था कि पानी उसके भीतर तीव्रता से बहा करता था। तारों और किनारों के बीच जो इस प्रकार तालाब-सा बन गया था, वह प्रायः ५० हाथ चौड़ा तथा १५० हाथ लंबा था। उसकी पृथ्वी पक्की बनाई गई थी, जिसमें स्नान करनेवालों को लेश-मात्र कष्ट न हो। ये सब सखियाँ गेंद आदि के सहारे देर तक स्नान करती और खेलती रहीं। उसी के निकट दो तुरगामिनी नौकाएँ आकर लगीं, जिनमें केवल दो-दो स्त्रियाँ मल्लाहों के स्थान में थीं। इस कारण सखियों ने पर्दे आदि के विचार से अपना खेल स्थगित न किया। इतने ही में नदी के किनारे पर चार-छ वानर खौंव-खौंव करते हुए उछलने लगे, जिससे राजपुत्री तथा सखियाँ बहुत भयभीत हुईं। उधर उनके रक्षकों को कुछ डकैतों ने पहले ही से बाँधकर दूर हटा दिया था। जब सखियों के पुकारने पर भी रक्षक न आए, तब दोनो नावों की मल्लाह-स्त्रियों ने इन्हें वानरों से बचाने में सन्नद्धता प्रकट करके तथा राजमहल में भेज आने की बात कहकर सबों को नावों पर चढ़ा लिया। अनंतर जिस नाव पर प्रायः सात सखियाँ-मात्र थीं, उस नाव ने उन्हें कुछ दूर किनारे पर उतारकर अपना रास्ता लिया, तथा जिस नाव पर राजपुत्री दो-तीन सखियों के

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



साथ बैठी थी, वह शीघ्रता-पूर्वक आगे बढ़ती गई, तथा पहली नाव पर प्रायः दस एवं इस पर पाँच मनुष्य बैठकर दोनो नावों को साथ-ही-साथ आगे चलाने लगे। किनारेवाली सखियों ने यह दशा देखकर ग़ल मचाया, किंतु नाववाले इसका कुछ भय न करके नावों को भगाते हुए चले गए। राजकुमारी ने उनसे इसका ब्योरा पूछा, तो उन्होंने इतना ही कहा कि आगे बढ़िया घाट पर उन्हें उतारा जाना था।

राजकुमारी ने यह गड़बड़ देखकर प्रचंड भय उपस्थित समझ लिया, किंतु परिस्थिति के कारण शोर मचाने, रोने-धोने आदि से कोई लाभ न समझकर हाथ के इंगित से किनारे कुछ दूर पर खड़ी अपनी सखियों से राज्य द्वारा रक्षा प्राप्त करने के प्रयत्न की बात बतलाई। उन्होंने यह इंगित पूर्णतया तो समझा नहीं, किंतु दशा देखकर रक्षा-प्राप्ति के प्रयत्न में शीघ्रता करने की बात स्वयं भी सोच ली। उधर रक्षकों के बंधन भी खुल चुके थे, सो इन सबों ने अति शीघ्र राज्य-प्रबंधकों से पूरा ब्योरा प्रकट किया, जिससे उद्धारार्थ कुछ नौकाएँ तुरंत दौड़ाई गईं, तथा नदी-मार्ग में गुप्तरीत्या स्थित सारा रक्षक-समाज चैतन्य किया गया। मणिभद्र की नौकाएँ बहुत तीव्र थीं, जिससे पीछा करनेवाले तो उन्हें पा न सके, किंतु दो-तीन कोस आगे जाने पर पहले रक्षक-समाज ने इन्हें रोका। यह आकस्मिक घटना देखकर डकैतों के होश उड़ गए, तथा पद्मावती को सखियों-समेत छोड़कर

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



वे लोग दोनो नौकाओं से कूद-कूदकर तैरते हुए किनारे की ओर भागे। राजसेवक युद्धकर्ताओं ने एक ओर तो सखियों-सहित राजकुमारी का उद्धार किया, तथा दूसरी ओर चारों मल्लाह-स्त्रियों को पकड़ लिया, अथच बाण-वर्षा द्वारा पंद्रह नर-डकैतों में से तीन-चार का वध कर डाला, तथा तीन-चार को पकड़ लिया। मणिभद्र सात-आठ साथियों-सहित निकल गया। दोनो नौकाओं को ले जाकर उन लोगों ने दंडपाश-विभाग को सौंप दिया, और पकड़े हुए डकैत बंदीगृह में डाले गए। राजपुत्री मान-पूर्वक सखियों-सहित राजप्रासाद भेज दी गई, और उनकी सभी सखियाँ उन्हें कुशल-पूर्वक पाकर अत्यंत प्रसन्न हुईं। राजकुमारीजी इस आक्रमण से बहुत दुखी हुईं, किंतु सम्राट् और सम्राज्ञी ने समझा-बुझाकर उन्हें फिर से प्रसन्न किया। नौकाओं तथा बंदियों से यह पता न लग सका कि वे कहाँ के थे। नियम-पूर्वक अभियोग चलाया जाकर उन्हें उचित दंड दिया गया। भविष्य के लिये राज-कुमारी की रक्षा का विशेष प्रयत्न किया गया। सम्राट्, सम्राज्ञी तथा राजकुमारी, इन तीनो को इस विषय पर संदेह पांचालराज पर ही हुआ, और भविष्य के लिये महामंत्री यौगंधरायण से मंत्र करके उचित कार्यवाही करने का विचार हुआ। वह राज्य कुछ दिनों से स्वतंत्र अवश्य हो गया था, किंतु मूलतः कौशांबी का अंग था ही। अतएव शक्ति बढ़ाकर उसके भावी दमन का विचार और भी दृढ़ हुआ, किंतु राजनीति

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



पर ध्यान देकर इसी समय से कुछ कहा-सुनी करने का विचार न हुआ। उधर राजकुमारी पद्मावती का प्रेम समाज्ञी वासवदत्ता से दिनोंदिन बढ़ता रहा, तथा वह समाट् से ललित कलाएँ भी उचितरीत्या सीखती रहीं।

---

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# नवम परिच्छेद

## महात्मा आनंद का आगमन

कौशांबी में जैन महात्मा तीर्थंकर महावीर तथा महात्मा गौतम बुद्ध सम्राट् शतानीक के समय पधार चुके थे। इन दिनों गौतम बुद्ध के शिष्य तथा काका के पुत्र आनंद की अवाई राजधानी के निकट हुई, अथच सम्राट् के आग्रह से वह कौशांबी में भी पधारे। सम्राट् तथा सम्राज्ञी की इच्छा एवं महात्माजी की स्वीकृति से राजप्रासाद में एक पडित-समाज जुड़ा, जिसमें इन तीनो के अतिरिक्त राजपुत्री पद्मा-वती, महामंत्री यौगंधरायण, महासेनापति रुमण्वान, साम्राज्य के दानाध्यक्ष अथच दो-चार और सज्जन एकत्र हुए, तथा प्रेम-पूर्वक वार्तालाप होने लगा।

सम्राट्—महत्मा आनंदजी महोदय ! आपने यहाँ पधारने में मुझ पर तथा इस साम्राज्य पर बड़ा ही अनुग्रह किया है। महात्मा गौतम बुद्ध भी पूज्य पिता के समय में यहाँ पधारे थे, तथा ऋषिपत्तन में मुझे भी एक बार उनके दर्शन हुए थे, किंतु कोई विशेष शिक्षण मैं उनके द्वारा न पा सका। आशा है, आज उनके स्थान पर आप ही अपने सुमत के मुख्य सिद्धांतों के कथन करने की कृपा कर सकेंगे।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



आनंद—सम्राट् महोदय ! ऐसे उच्च समाज के सम्मुख यदि धार्मिक कथन करने को चित्त न हुलसेगा, तो कहाँ प्रसन्नता होगी ? जिस विषय पर इच्छा हो, उसी पर कथन करूँ ।

सम्राट्—मेरी इच्छा आर्य-धर्म की समयानुसार उन्नति का हाल जानने की है, किंतु सबसे प्रथम बौद्ध-धर्म के ही मूल-सिद्धांत जानना चाहता हूँ । यदि कष्ट न हो, तो समझाने की कृपा हो जाय ।

आनंद—बहुत ही अच्छी बात है, सम्राट् ! अच्छा, सुनिए । तथागत के पूज्य मतानुसार परिव्राजक को काम तथा शारीरिक क्लेश-नामक दोनो अंतों का त्याग करके मध्यमा प्रतिपदा ग्रहण करनी चाहिए । यह चक्षु तथा ज्ञानप्रदायिनी है । इसी से उपशम, अभिज्ञान, संबोधि और निर्वाण मिलत हैं । इसी प्रतिपदा को अष्टांगिक मार्ग भी कहते हैं, जो यह है—सम्यक्कर्मांत, सम्यग्दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यग्वाचा, सम्यगाजीव, सम्यग्व्यायाम, सम्यक् स्मृति और सम्यक् समाधि अनंतर तथागत ने चारों आर्य सत्यों का उपदेश दिया, जो इस प्रकार है—दुःख, तृष्णा, दुःख-निरोध और निरोधगामिनी प्रतिपदा, जिसे अष्टांगिक मार्ग भी कहते हैं, जिसका अभी कथन हो चुका है ।

महामंत्री—ऋषिवर, दुःखादि का कुछ और कथन क्या हो सकता है ?

आनंद—हाँ, सुनिए । जन्म, जरा, व्याधि, मरण, प्रिय न

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



मिलन, प्रिय-वियोग, इच्छा की अपूर्ति आदि पंचोपादान स्कंध दुःख हैं। पुनर्भव का कारण तृष्णा है। इन दोनो का दमन निरोधों से हो सकता है। हमारे तथागत ने इन चारों आर्य सत्यों को त्रिप्रवर्तित करके द्वादशाकार माना है। हमारे मत के बुद्ध, धर्म, संघ-नामक तीन अंग हैं। संघ को इन दोनो के प्रायः सम मानने से हमारे यहाँ जनमत को भी समुचित प्रधानता दी गई है। इन्हीं तीनो को रत्नत्रय कहते हैं। हम लोगों का यह भी नियम है कि बिना माता-पिता की आज्ञा के कोई बालक संन्यासी न बनाया जाय। तथागत स्त्रियों को संघ में लेने के मूलतः प्रतिकूल थे, किंतु मेरी ही बिनती पर सहमत हुए। महाप्रजावती पहली स्त्री थीं, जिन्होंने उपसंपदा ग्रहण की।

पद्मावती—महात्माजी! आपके यहाँ संघ के लोगों का स्त्रियों के विषय में क्या कर्तव्य है?

आनंद—राजकुमारीजी! संन्यासियों के तरुण स्त्री-समाज में सम्मिलित होने से शंका की संभवनीयता होगी ही। इसी-लिये उनके संबंध में संन्यासियों के लिये अदर्शन, अनालाप तथा अत्यंत सावधानी की आज्ञा है। इससे तथागत ने स्त्रियों का कोई निरादर नहीं किया है, वरन् गृहत्यागियों के लिये आवश्यक त्याग के मार्ग से अड़चनें-भर दूर की हैं।

सम्राज्ञी—है तो इसमें स्त्रियों का कुछ अपमान अवश्य, किंतु महात्माओं के कथनों में दंश न देना ही उचित होता है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



हम लोग संसारी जीव हैं, तथा समाज में रामाओं का उचित मान रखना ही चाहती हैं।

सम्राट—महात्माजी! आप पहले अपने मत के मुख्य सिद्धांत बतला जाइए, फिर उन पर कथनोपकथन होंगे। यह महामत बौद्ध कहलाता ही है, जिससे इसका तर्कावलंबी होना आवश्यक दिखता है।

आनंद—ऐसा तो है ही, सम्राट्! अच्छा, मैं इस मत के अन्य मुख्य सिद्धांतों का भी कथन करता हूँ।

महामंत्री—अवश्य कीजिए, भंते!

आनंद—रामाओं के विषय में जो ऊपर कथन हुए हैं, उनसे भी विदित है कि हमारे यहाँ ब्रह्मचर्य-स्थापन की मुख्यता संघों के संबंध में है। बौद्ध-धर्म के सात रत्न सप्तत्रिंशच्छिद्यमाण कहे गए हैं। ये हैं स्मृत्युपस्थान, सम्यक् प्रहाण, ऋद्धिपाद, इंद्रिय, बल, बोध्यंग और मार्ग। पहला रत्न चतुर्धा है, अर्थात् शरीर अपवित्र है, संसार की वेदनाएँ दुःखमयी हैं, चित्त चंचल है, और संसार के सारे पदार्थ क्षणिक हैं। पदार्थों में रूप, वेदना, विज्ञान, संज्ञा और संस्कार की गणना है। द्वितीय रत्न सम्यक् प्रहाण भी चतुर्विध है, अर्थात् अर्जित पुण्य-संरक्षण, अलब्ध पुण्योपार्जन, अर्जित पाप, परित्याग और अलब्ध पापानुत्पत्ति। ऋद्धिपाद के दृढ़ संकल्प, उद्योग, उत्साह और आत्मसंयम अंग हैं। श्रद्धा, समाधि, वीर्य, स्मृति और प्रज्ञा इंद्रिय हैं, और इन्हीं

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



का पौरुष बल है। बोध्यंग सप्तधा है—स्मृति, धर्म-संचय, वीर्य, प्रीति, प्रश्रब्धि, समाधि और अपेक्षा। आर्य मार्ग अष्टधा है, जिसका वर्णन ऊपर अष्टांगिक मार्ग अथवा मध्यमा प्रतिपदा कहकर हो चुका है। तथागत ने इन्हीं ३७ पदार्थों को लेकर धर्म की व्यवस्था की है।

महामंत्री—इस महामत के मूल-मंत्र क्या हैं, महात्मन्!

आनंद—अहिंसा और निर्वाण इसके मूल-मंत्र हैं। दुःख का मूल वासना है। इससे कर्म, जिससे कर्म-फल, और उसी से दुःख की उत्पत्ति है। तृष्णा-विनाश से ही आत्यंतिक सुख-भव शांति मिलती है, जिसको निर्वाण कहते हैं। हमारे लोगों के विचार से यज्ञ तिरस्करणीय है, तपश्चर्या व्यर्थ है, तथा सम्यग्व्यायाम मुख्य धार्मिक सिद्धांतों में है। मुख्यता वासना-हनन द्वारा निर्वाण-प्राप्ति की है।

रुमण्वान—क्या आपके यहाँ गृहस्थों के लिये धर्म-कथन है ही नहीं?

आनंद—है क्यों नहीं? आर्य! तथागत ने ही उपासक-धर्म और श्रमण-धर्म-नामक दो विभाग धर्म के किए, किंतु मुख्यता द्वितीय की ही रक्खी।

सम्राज्ञी—ब्रह्मचर्य-संबंधी जो भाग आपने कहा, उसमें तो किसी का मतभेद शायद न हो, केवल तपश्चर्या को निंद्य कहने में विवाद संभव है, क्योंकि इससे मुख्यतया योग-साधन से बहुतेरे विद्वान् कई सिद्धियों की प्राप्ति मानते हैं।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



आनंद—हमारे यहाँ स्वयं तथागत ने घोर तपस्या करके, उससे सिवा बल-हीनता के कोई फल न देखा।

महामंत्री—संभव है कि उन्होंने सम्यक्प्रकारेण तपश्चर्या न करके शरीर पर उचित से अधिक बोझ डाल दिया हो, जिससे उनके मत में पूर्ण तपश्चर्या-विभाग निंद्य दिख गया। योग-साधन यदि नियमानुसार किया जाय, तो निर्बलता का लेश न होगा, वरन् जीवनावधि की विशेष वृद्धि होगी।

आनंद—तथागत का अनुभव इसके प्रतिकूल हुआ। योग-संबंधी जो कथन आप करते हैं, उसमें विविध महात्माओं के पृथक् अनुभानुसार मतभेद संभव है।

पद्मावती—बहुत उचित सम्मति दी गई है, महात्माजी! अच्छा, यज्ञों के विषय में क्या विचार है? आपके यहाँ वे तिरस्करणीय हैं ही।

आनंद—महात्मा बुद्ध के जो विचार हैं, उनके प्रतिकूल मैं शिक्षा क्या दे सकता हूँ?

महामंत्री—हम लोगों को तो ऐसा दिखता है, भंते! कि यज्ञों से जो धार्मिक लाभ कहा जाता है, वह तो विश्वास-मात्र का विषय है, किंतु सम्राटों द्वारा विविध यज्ञों के संपादन से उनका लौकिक प्रभाव बढ़ता ही है।

आनंद—यह तो धार्मिक विषय न होकर लोक-संग्रह-मात्र है, मारिस!

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



महामंत्री—भंते ! धर्म भी तो मूलतः लोक-संग्रह पर आधारित है। परलोक में क्या होता है, इसे किसने देखा या जाना है ? वासना-हनन से आपने जो निर्वाण-प्राप्ति बतलाई, उस कथन का क्या निश्चित आधार है ? उधर ब्रह्मचर्य-संबंधी जो २७ विभाग आपने कहे हैं, उन सबसे सांसारिक जीवन की उन्नति प्राप्त है ही। जैसे हम लोग यज्ञों से धार्मिक लाभ विश्वास द्वारा मानते हैं, वैसे ही आप वासना-हनन से निर्वाण पर निराधार विश्वास करते हैं। समझ ऐसा पड़ता है कि विना कुछ विश्वास का आधार लिए धार्मिक विचार-माला चल नहीं सकती।

आनंद—चलती क्यों नहीं ? मारिस ! आप ही ने माना है कि वासना-हनन से निर्वाण-प्राप्ति न मानने से भी उसके द्वारा लोक-संग्रह में उन्नति प्रत्यक्ष ही है। अतएव विश्वास का अंग छोड़ देने से भी यह लाभकर है। उधर यज्ञों से सम्राटों आदि को विजयों के कारण सांसारिक पदोन्नति तो मिलती है, किंतु मार-काट का विचार न करने से भी व्यक्तिगत लौकिक उन्नति क्या होती है ?

रुमण्वान—भंते ! संसार में भारी साम्राज्य स्थापित होने से शांति मिलती है, जिससे सैकड़ों प्रकार की उन्नतियाँ प्राप्त हैं। समष्टिमूलक लाभों में व्यष्टि का हित-साधन लगा ही रहता है। इसी से यज्ञों द्वारा आत्मीय लाभ भी प्राप्य है।

आनंद—मारिस ! साम्राज्य-स्थापन का मूल विजय-यात्रा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



है, न कि याज्ञिक विधान, जिसके न करने से भी समष्टि-मूलक लाभ साम्राज्य-मात्र से प्राप्य है कि नहीं ?

महामंत्री—भंते ! है अवश्य, किंतु उसी में धार्मिक लाभ जुड़ने से साम्राज्य-स्थापन में प्रत्येक समर्थ भूभुज को और भी विशेष चोप होगा।

सम्राट्—इस विषय पर अच्छी कहा-सुनी हो चुकी है, अब किसी अन्य विषय पर विचार क्या ठीक न होगा ?

रूमएवान—है यह भी बहुत योग्य।

अग्रहारिक—महात्माजी ने जन्म ही दुःख-मूलक माना है, जिसका प्रयोजन यह निकला कि संसार दुःखद होने से त्याज्य है। जब ऐसा है, तब मृत्यु को भी बुरी क्यों कहते हैं ? यहाँ प्रतिकूलता-पोषण का-सा रूप आ जाता है।

आनंद—मारिस ! मृत्यु तो संसार नहीं चाहता। तब उसे दुःख-मूलक न मानना सारे सांसारिक अनुभवों के प्रतिकूल जाना होगा।

अग्रहारिक—भंते ! यदि अनुभव पर चलिए, तो उत्पत्ति का समादर सारा संसार करके पुत्रोत्पत्ति से महानंद मानता है।

आनंद—मारिस ! यहाँ हमारा मत अनुभव पर न चल-कर वैज्ञानिक तथ्य पर चलता है।

महामंत्री—भंते ! विज्ञान संसार को कब बुरा कहता है ? वैद्यकीय सारे उपाय संतानोत्पादन का प्रयत्न करते और यथा-

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



शक्ति मृत्यु का निवारण करते हैं। यह संसार बुरा अथवा त्याज्य किस आधार पर कहा जा सकता है ? माना कि यह बहुतेरे या कुछ दुःख-मूलक पदार्थ भी हैं, किंतु कुल मिलाकर संसार बुरा नहीं कहा जा सकता। सारी जनता इसमें आने की उत्सुक तथा इसे त्यागने के प्रतिकूल है। क्या किसी ने इससे उत्तर कोई संसार देखा है, जिसके सामने यह बुरा समझा जाय ? इसे निंद्य वे ही लोग मानते हैं, जो अपने उचित भाग से बहुत अधिक पाने का अपना सहज स्वत्व समझते तथा उसे न पाकर खीझते हैं।

सम्राज्ञी—है काकाजी के कथन में बहुत कुछ सार, किंतु धार्मिक महाशय इसे बुरा न कहें, तो संसार-लिप्सा का पोषण-सा उनके द्वारा दिखने लगे, जो अवनतिकारी हो जायगा।

रूमण्वान—यह तर्क तो शुद्ध कथन है नहीं, वरन् उपयोगितावाद की ओर जाता है।

आनंद—उपयोगिता के मान पर भी तो इस सभा में मत-प्रकाशन हो चुका है।

पद्मावती—भला, अपने सिद्धांतों में यह महामत ईश्वर का कथन क्यों नहीं करता ?

आनंद—देवीजी ! ईश्वर का विषय तो न्यूनाधिक विश्वास-मात्र पर आधारित है। स्वयं याज्ञवल्क्य ऋषिराज ने बृहदारण्यकोपनिषत् में पहले तो इसे कार्यवाद के आधार पर प्रमाणित करना चाहा, किंतु जब गार्गीदेवी ने ईश्वर को भी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



कार्य मानने का तर्क उठाया, तब विवश होकर उन्हें मानना पड़ा कि ईश्वर तर्क-साध्य न होकर केवल शास्त्रों से ज्ञातव्य है, अर्थात् विश्वास-मात्र का विषय है, तर्क का भी नहीं। आज सारा संसार शैव ईश्वरत्व से विमुख या कम-से-कम उदासीन है। चार्वाकवाला लोकायत-मत संसार में चल रहा है। ऋषिवर याज्ञवल्क्य ने इसे अस्पृश्य, अपरतंत्र तथा अचल कहा है। यह अज्ञेयवाद न तो संसार को संतुष्ट कर सका है, न स्वयं पंडित-समाज को। सांख्य, पूर्व मीमांसा तथा वैशेषिक में स्वयं कपिल, जैमिनि और कणाद ने ईश्वर का कथन नहीं किया है। हमारा बौद्ध-मत भी अनीश्वर-वादी न होकर ईश्वरीय कथन-मात्र नहीं करता। यदि वह हो, तो आचार-मूलक हमारा धर्म दृढ़ रहता है, और न हो, तो भी। बौद्ध-मत यह संसार-त्यक्त विषय उठाता-भर नहीं। हम न तो इसके अनुकूल हैं, न प्रतिकूल। बुद्धिग्राह्य मत होने से यह विश्वास-मात्र पर जाता भी बहुत कम है। जिस वस्तु का अस्तित्व-मात्र अचल शब्द से प्रतिपादित है, किंतु जो अपरतंत्रत्व द्वारा संसार से पूर्णतया उदासीन-सा भी है, उसके विशेष कथन द्वारा अपने-अपने समय पर सांसारिक प्रति-कलता लाने की क्या आवश्यकता थी?

सम्राट्—बात तो आपकी बहुत ठीक है, महात्मन्! बृहदारण्यक, छांदोग्य, जैमिनीय, काठक और केन-नाम्नी जो उपनिषदें चलती हैं, वे भी ऊपर कहे हुए से कोई विशेष

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



ईश्वरीय विवरण नहीं देतीं। केन में उसकी केवल सर्वशक्ति-सत्ता दिखलाई गई है। ऐसे अस्तित्व-मात्रवाले ईश्वरीय विचार पर जनता का प्रेम नहीं उमड़ता। क्या कृपा करके भारतीय धार्मिक विचारों का ऐतिहासिक विवरण बतलाइएगा ?

आनंद—भारत में पहले कोल और द्राविड़-जाति के लोग थे। थे नाग भी, किंतु उनके धार्मिक विचारों का पता नहीं है। कोल और द्राविड़ ईश्वरीय कथन करते ही नहीं। कोलों में तरु, पर्वतादि का पूजन होता था। द्राविड़ों ने पशुपति का ध्यान भी कहा, तथा सिंहवाहिनी देवी का भाव निकाला। इससे बढ़-कर उनमें भी कोई ईश्वरीय विचार नहीं है। ऋग्वेद में तेंतीस प्राकृतिक देवताओं की विनतियाँ हैं। यह माना गया है कि ये प्राकृतिक देव केवल ईश्वरीय शक्ति से शक्तिमान् हैं; किंतु वह ईश्वर कैसा है, इसका विशेष कथन ऋग्वेद में नहीं है। सामवेद में भी इससे कोई विशेषता नहीं है। यजुर्वेद, अथर्ववेद तथा उपनिषदों में शैव ईश्वरत्व कथित है, किंतु जैसा ईश्वर वहाँ कहा गया है, उससे जनता का संतोष नहीं हुआ। वह व्यक्ति से उदासीन-सा रहकर केवल उच्च नियमों द्वारा समष्टि का उपकारक है, जिससे जनता को संतोष न होकर उस पर से भक्ति दिनोंदिन घटती आई है। आजकल साधारणी जनता बहुत करके अनीश्वरवादी है।

महामंत्री—तो भी कुछ लोगों के द्वारा निर्गुण ब्रह्म छोड़कर

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



वासुदेव-मत के साथ सगुण ब्रह्म का भाव दृढ़ होता दिख रहा है।

आनंद—है तो ऐसा ही, किंतु महर्षि बादरायण ने इसे भी वेद-विरुद्ध कहकर इसकी समीक्षा की है। वह स्वयं भगवद्गीता-नामक कोई ग्रंथ बनाने के विचार में हैं। संभव है, उससे लोक में कुछ ईश्वरवाद फैले, क्योंकि वासुदेव-मत पर कुछ अपंडितों का भी रुझान दिखता है।

अग्रहारिक—हमारे वैदिक समय में आर्य-सभ्यता का केंद्र पंचनद रहा, और ब्राह्मण-काल में कुरुक्षेत्र तथा बिहार। अब बौद्ध-काल में वह मगध में आता दिखता है। ब्राह्मण-काल में वानप्रस्थाश्रम के लिये नियमोपनियम बने। अब संन्यासाश्रम के लिये बनते हुए दिखते हैं। इस आश्रम का बल बौद्ध प्रभाव से भी बढ़ा है।

सम्राज्ञी—आजकल अवतारों का रूप जो वासुदेव-मत कहता है, वह संसार में चलता नहीं, वरन् वैदिक देवता एवं काम, कुबेर, शुक्र, कार्त्तिकेय, लक्ष्मी, उमा आदि देवी-देवता हैं। विष्णु और शिव की महत्ता है। नाग, वृक्ष, नदी, तड़ागादि पूजित हैं। देवताओं के मंदिर तथा कुछ सांकेतिक प्रतिमाएँ हैं, किंतु शिव-लिंगादि जो पुराने द्राविड़ों में चलते थे, उनका चलन नहीं है। पशु-बलि है। आवागमन-सिद्धांत पर कुछ विचार पंडितों में हुए हैं।

अग्रहारिक—ये ही बातें तो हैं, देव! कुछ लोगों में पहाड़ों,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



वृक्षों, अग्नि, चिड़ियों, नागों आदि के पूजन मरी आदि से बचने के लिये होते हैं, तथा इसी अभिप्राय से रीतियों, मंत्रों और जादू के काम कराए जाते हैं।

महामंत्री—यह लोकायत-मत शास्त्रों में तो विशेषतया कथित है नहीं, किंतु लोक में इसका चलन है पूर्ण बल के साथ। इसी से यह लोकायत-मत कहलाता है। उपनिषदों के ऋषियों ने ऋग्वेदीय ईश्वरीय भाव बढ़ाकर परमोत्कृष्ट विचार सामने रक्खे, किंतु उनका समझने और माननेवाला जनता में प्रायः कोई नहीं दिखता।

अग्रहारिक—मैं समझता हूँ कि जो बौद्ध-मत महात्माजी ने कहा है, तथा जो जैन-मत महावीर तीर्थंकर ने बड़े महाराज महोदय के सामने प्रतिपादित किया था, वे दोनो हैं तो आधारित अपने ही शास्त्रीय विचारों पर, किंतु वे कुछ विचारों पर विशेष बल लगाते तथा कुछ इतरों की निंदा भी करते हैं। जैसे जैन-मत "अहिंसा परमो धर्मः" का राग अलापता है, तथा बौद्ध-मत भी पशु-बलि के कारण यज्ञों की निंदा करता है, अथवा विवाद मिटाने को ईश्वर का कथन छोड़े ही हुए है। और बहुतेरी बातों में अपने शास्त्रों से इनका कोई भेद नहीं दिखता।

सम्राट्—यही तो समझ पड़ता है।

आनंद—ऐसा पूर्णतया न समझना चाहिए। हमारे तथागत ने स्वयं तपश्चर्या का अनुभव करके उसे निंद्य कहा,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



तथा सम्यक्प्रकारेण सारे धार्मिक कृत्यों के निभाने पर हठ किया। उन्होंने अपना बौद्ध-मत बहुत करके अपने स्वतंत्र विचारों से निकाला।

महामंत्री—ऐसा तो है, किंतु वह भी तो पूर्ण शास्त्राभ्यासी थे, सो जिन-जिन बातों को उन्होंने अपने शुद्ध विचारों से ग्राह्य माना, स्वयं उन पर भी हमारे प्राचीन शास्त्रों का बहुत कुछ प्रभाव था।

सम्राट्—यह विषय, काकाजी! विवाद-ग्रस्त है, कम-से-कम महात्माजी इसे नहीं मान सकते।

इस प्रकार सविलंब वार्ता के पीछे यह सभा यथासमय भंग हुई।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# दशम परिच्छेद

## पद्मावती की शिक्षा

जब से राजपुत्री पद्मावती कौशांबी पधारीं, तभी से इनका विशेष मान राजन्यवर्ग, परिजन, पुरजन, जानपदों, मंत्रि-मंडल आदि में होता आया था। सम्राज्ञी वासवदत्ता से इनका प्रेम-पूर्ण व्यवहार जो मगध में प्रारंभ हुआ था, वह दिनों-दिन वृद्धिगत होता गया था। ललित कलाओं के स्वयं सम्राट से सीखने में इन्होंने विशेष मन लगाया था। दोनो में सत्संगति की वृद्धि से विशेष प्रेम-भाव भी समय के साथ बढ़ता आया था। जब किन्हीं कुचक्रियों के द्वारा उनके भगा ले जाने के सक्रिय विफल प्रयत्न का संवाद सम्राट् के प्राभृतक के साथ मगधेश की सेवा में उपस्थित हुआ था, तब पूर्ण आश्वासन के कथन उसमें होने पर भी मगधेश दर्शक ने कौशांबी पधारकर भगिनी को एक बार देख जाना उचित समझा। अतएव मृगया और मित्र-दर्शन के व्याज से आप शीघ्रता-पूर्वक कौशांबी पधारे। सम्राट् ने उचित सत्कार किया। प्रेम-पूर्वक मिलकर दोनो मित्रों ने प्रायः सुखद वार्तालाप किए। मगधेश ने महामंत्री यौगंधरायण से भी एकांत में मिलकर विविध विषयों पर प्रेम-पूर्ण गुप्त संभाषण किए। पूरा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



विवरण सभी बातों का जानकर मगधेश को भी इस कुचक्र पर संदेह पांचाल-नरेश पर ही हुआ। अनंतर एकांत में वह स्वसा से वार्तालाप करने लगे।

दर्शक—पद्मे! तेरा चित्त यहाँ लगता तो होगा?

पद्मावती—हाँ, दादाजी! चित्त प्रसन्न रहता है। सम्राज्ञी, सम्राट्, काकाजी आदि सभी बहुत प्रेम-पूर्ण व्यवहार करते हैं। कोई कष्ट नहीं है।

दर्शक—जब डकैत नौका भगाकर ले चले थे, तब तुझे कैसा लगा था?

पद्मावती—पहले तो, दद्दू जी! मैं बहुत घबराई थी, क्योंकि शत्रुओं के वश में पड़ने का यह पहला ही अवसर मेरे जीवन में आया था, तथापि साम्राज्य के कौशल पर विश्वास करके मैंने छुटकारे की आशा शीघ्र ही की थी। वही बात हुई भी। उन लोगों ने न तो मुझे कोई कष्ट ही दिया, न किसी प्रकार संभाषण तक किया, वरन् वे उचित घाट पर सुख-पूर्वक उतार देने का आश्वासन भी देते रहे। जान मैं गई थी कि वे डकैत थे, किंतु गुल-गपाड़ा मचाने या नदी में कूदने आदि के प्रयत्न से मैंने सिवा कष्ट के कोई साफल्य की आशा न देखी। इसीलिये उनके आश्वासनों पर विश्वास मानने का भाव मैंने आचरण से दिखलाया। अति शीघ्रता-पूर्वक दो ही-तीन घड़ियों में मोचन भी हो गया, तथा उन दुष्टों को उचित दंड पूर्णता के साथ मिल गया।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



दर्शक—ललित कलाओं के अवगत करने में तुझे सम्यक् उन्नति समझ पड़ती होगी।

पद्मावती—यही बात है, दद्दू जी!

दर्शक—किन-किन विषयों पर अभ्यास किया है?

पद्मावती—गान, वाद्य और नृत्य का। एकाकी और मिलित दोनो प्रकार के नृत्य सीख रही हूँ। ललित कलाओं का ज्ञान सम्राट् को है बढ़िया। मुझे सिखाने में दो-तीन घड़ियों तक नित्य परिश्रम करते हैं। व्यवहार में मान की पूर्णता है। देव की उनसे पूर्ण मैत्री है ही। मगध में मैं भी मिल चुकी थी।

दर्शक—अभी कुछ दिन और यहाँ रहना चाहती हो या मगध चलोगी?

पद्मावती—जैसी देव की आज्ञा होगी, वही करूँगी। काकाजी तो अभी आठ-दस मास और यहीं रहने की सम्मति देते हैं।

दर्शक—स्वयं तेरी इच्छा क्या है?

पद्मावती—अभी इच्छा मेरी भी कुछ दिन और रहने की है। शिक्षण में उचित उन्नति हो रही है, तथा किसी प्रकार का कोई कष्ट है नहीं।

दर्शक—अपना मन भली भाँति भर ले, बेटी! पराया राज्य ठहरा, कोई अनुचित कष्ट न उठाना पड़े।

पद्मावती—इसका कोई संदेह नहीं। डकैतों से मेरी रक्षा में राज्य ने भी अति शीघ्र पूर्ण प्रयत्न किया था। सुन पड़ा था कि

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



सम्राज्ञी और सम्राट् भी इस उद्योग में स्वयं नदी के किनारे जाकर प्रबंध करते रहे थे।

दर्शक—तब फिर दो-तीन दिनों में मैं यहाँ से जा रहा हूँ।

पद्मावती—जितने दिन रह सकिए, उतना ही चित्त प्रसन्न होगा। फिर भी अभी जी ऊबता नहीं है। राजपरिवार की पूर्ण कृपा रहती है। उधर काकाजी भी प्रायः नित्य मिलकर आश्वासन कर जाते हैं। आवश्यकताओं का भी पूर्ण प्रबंध करते हैं।

दर्शक— यह सब सुनकर मैं अत्यंत प्रसन्न हुआ।

इस प्रकार स्वसा से वार्तालाप करके तथा मित्र-संग, मृगयादि का पूर्ण आनंद लेकर मगधेश यथासमय अपने देश को चले गए। इधर राजपुत्री का शिक्षण पूर्ण तत्परता के साथ होता रहा। सम्राट् शिक्षण के अतिरिक्त सम्राज्ञी के साथ तथा कभी-कभी एकाकी भी राजपुत्री से मान-पूर्वक भगिनी के समान वार्तालाप किया करते थे। एक बार यों बात हुई—

सम्राट्—राजपुत्री महोदया! मुझे बड़ा दुःख है कि स्नान के संबंध में आपको एक बार भारी कष्ट हुआ। अब तो उस दुःख की छाया शेष नहीं है?

पद्मावती—सम्राट् महोदय! इसके विषय में तो मैं आपको कई बार आश्वस्त कर चुकी हूँ। जितनी देर दो-तीन घड़ी उनके वश में रही, तब तक तो मानसिक घबराहट बहुत रही, किंतु यथासाध्य मैंने उन पर विकलता प्रकट न होने दी।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



जब उनके दाप से मुक्त हो गई, तब कोई क्लेश शेष न रहा। तब से रक्षा का प्रबंध भी बढ़ गया है। देव इसकी कोई चिंता न करें।

सम्राट्—आपने आत्मीय स्वल्प परिचय-मात्र होने से भी मेरी प्रार्थना स्वीकार करके यहाँ पधारने का कष्ट केवल विद्या और कला-लाभ की लालसा से उठाया है। इसी से मुझे चिंता रहती है कि आपको यह प्रासाद कभी पराया न दिखाई दे, तथा कोई चिंता कभी इस चंद्र-वदन को म्लान न बनावे।

पद्मावती—इन सब बातों का प्रबंध देव ने यथेष्ट कर रक्खा है। सम्राज्ञीजी की भी कृपा रहती है। कोई खेद दूर से भी नहीं होने पाता। बड़ा अनुग्रह है।

सम्राट्—प्रिय भगिनीजी! आपको यह प्रासाद कभी पराया-सा तो नहीं दिखा? मेरी ऐसी उद्दाम इच्छा है कि आप इसे अपना ही घर समझें।

पद्मावती—यदि ऐसा न समझती, तो एक ही निमंत्रण पर एकाएकी चली क्यों आती? मैं तो आपसे ललित कलाएँ-मात्र नहीं, वरन् विद्या-प्राप्ति भी चाहती हूँ। मेरे संबंध में देव को आत्मीय परिश्रम भी बहुत पड़ता है, जिस कारण से मैं कभी-कभी चिंतित भी हो जाती हूँ कि इतना कष्ट एक सम्राट् को देने का क्या उचित अधिकार है?

सम्राट्—ऐसा मनोभाव देवीजी को मेरे संबंध में न रखना चाहिए। मेरा मंत्रिमंडल बहुत सुयोग्य तथा श्रमशील है,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



विशेषतया महामंत्रीजी बड़े उत्साह तथा परिश्रम के साथ राज-भक्ति-पूर्ण शुद्ध व्यवस्था चलाते हैं। उनके कारण मुझे राज-काज से बहुत कुछ अवकाश-सा रहता है, जिससे आपकी सेवा में समय लगाने में मुझे कोई कष्ट नहीं होता। समयाभाव मुझे नहीं है। आप कोई चिंता न करके स्वच्छंदतापूर्वक जितना चाहें, पठन, अभ्यास, वार्तालाप आदि कर सकती हैं।

पद्मावती—क्या सैन्य-संचालन की पूर्ण योग्यता भी काकाजी में है?

सम्राट्—इसमें कोई संदेह नहीं है। फिर यह विभाग महासेनापति रुमण्वान का है, जिन्होंने महर्षि जमदग्नि के यहाँ ही उसकी अच्छी योग्यता उपार्जित कर ली थी। तब से राज्य में अनुभव भी प्राप्त कर चुके हैं। महासेनापति का कार्य पूर्ण योग्यता से चल रहा है। अपना युद्ध-विभाग संपन्न है।

पद्मावती—तब फिर मैं आपके समय नष्ट होने का संदेह क्या न किया करूँ?

सम्राट्—नितांत नहीं। आपके संग में समय-संकोच-संबंधी मैंने कर्म या कथन से कभी कोई शीघ्रता की भी तो नहीं।

पद्मावती—अच्छा, तो मैं आपसे पूछूँगी कि मित्रता के क्या भार तथा अधिकार हैं?

समाट्—मित्रता का मूल-मंत्र यह है कि मित्र जिन-जिन

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



बातों में जी लगाता हो या लगाना चाहे, उन सबमें पूर्ण सद्भाव तथा पौरुष से उसकी सहायता की जाय, अथच बदले में कुछ पाने का विचार तक चित्त में न आए। मित्रता के भार-ही-भार हैं, अधिकार कुछ भी नहीं। जो दो सच्चे व्यक्ति एक ही प्रकार के स्वार्थ-हीन भावों में अनुरक्त हों, वे एक दूसरे के सहज मित्र हैं। मित्र के संबंध में दोनो में से एक में भी स्वार्थी भाव का प्राकट्य वास्तविक मित्रता का विनाशक है।

पद्मावती—आपने तो मित्रता का बड़ा ही ऊँचा भाव कहा है। ऐसी दशा में कोई सच्चा वास्तविक मित्र दूसरे की सहायता ही क्यों ग्रहण करे?

सम्राट्—ग्रहण करने की कोई बात ही नहीं। प्रत्येक मित्र बिना प्रार्थना के दूसरे के हित-साधन में वैसा ही प्रवृत्त रहे, जैसा अपने में।

पद्मावती—जब दोनो अयाचित हित-साधन करेंगे, तब बदले की बात तो आ ही गई।

सम्राट्—उसमें यथाशक्ति और यथासाध्य के प्रश्न लगे रहने से पूरा बदला प्रायः न मिलेगा। इसका परिमाण कर्मों से न होकर इच्छा से होगा। कोई प्रार्थना अथवा आशा मित्रों से नहीं की जा सकती। इसीलिये अधिकारों का प्रश्न नहीं उठता।

पद्मावती—तार्किक दृष्टि से आपका उत्तर बहुत यथार्थ है; आचरण में पूरा-का-पूरा उतरना कुछ कठिन है ही।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



सम्राट्—यही तो बात है।

पद्मावती—अच्छा, एक बात देव से और पूछती हूँ कि स्त्री-पुरुषों के संबंध में सर्वोत्तम आचरण क्या समझा जाता है?

सम्राट्—मैं आपको स्वसा कहता आया हूँ, जिससे ऐसे विषय में कुछ विशेष कथन में संकोच की छाया पड़ सकती है। आपका क्या विचार है?

पद्मावती—बहनजी आदि के संबोधन तो समाज में प्रायः समवयस्क स्त्री-मित्रों से किए ही जाते और उचित भी हैं, किंतु इससे स्वसा का संबंध तो नहीं स्थापित हो जाता। इसी प्रकार विशेष आयुवाली स्त्रियों को लोग माताजी कहकर पुकारते हैं। ये कथन सामाजिक सभ्यता के अंग हैं, किसी संबंध-स्थापन के नहीं। मैं तो यहाँ आपसे विद्या और बुद्धि प्राप्त करने आई हूँ, जो बात सभी विषयों से संबद्ध है।

सम्राट्—तब सुनिए। स्त्री-पुरुष का संबंध एक सर्वोत्कृष्ट सामाजिक विषय है, जिसके निरूपण में मुझे सामाजिक अधिकारों और भारों का भी कथन करना पड़ेगा। क्या आप सुनने की कृपा करेंगी? जी तो न ऊब जायगा?

पद्मावती—अवश्य कहिए, ध्यान-पूर्वक सुनूँगी।

सम्राट्—मनुष्य संसार में सर्वोच्च होकर है अंत में एक जंतु ही। प्रत्येक जीवधारी के दो रूप होते हैं, अर्थात् आत्मीय और सामाजिक। हम सबको इन दोनो रूपों की ठीक-ठीक

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



रक्षा करनी पड़ती है। हमें अपनी रक्षा और उन्नति उचित प्रकार से करनी चाहिए, तथा अपने सामाजिक रूप की भी। जिन उपायों से ऐसी रक्षा पूर्णतया निर्दोष प्रकार से हो सकती है, उन्हें कर्तव्य कह सकते हैं। मनुष्य पंचेंद्रिय-युक्त है। मात्रास्पर्श से शीतोष्ण सुख-दुःख-प्रदाता होते हैं। ऋतुओं के अनुसार दिन-रात के विविध समयों में यह मात्रा घटती-बढ़ती रहती है, और हमें एतदर्थ शरीर-रक्षणार्थ ऐसे वस्त्रादि धारण करने पड़ते हैं, जिनसे शीतोष्ण शरीर को सरोग न कर दें। इतनी ही कर्तव्य की मात्रा है, जो नीरोग रहने के लिये करनी ही चाहिए। इससे आगे बढ़कर वासना यह भी चाहती है कि हम ऐसे सुंदर वस्त्रादि धारण करें, जिनमें रंग, चमक आदि अनेकानेक सद्गुण हमारे रूप को उन्नत दिखलाकर हमें प्रसन्नता प्रदान करें। चाहे खासे के वस्त्र में रुई भरकर जाड़ा दूर किया जाय, चाहे बढ़िया-से-बढ़िया ऊनी, पाटंबरी आदि वस्त्रों से। कर्तव्य-पालन दोनो दशाओं में सम है, किंतु एक में वासना का भी आधिक्य है, जिससे सांसारिक प्रसन्नताएँ देनेवाली वस्तुओं को हम अपने उचित भाग से बहुत अधिक भी ले सकते हैं। जो लोग अपने उचित भाग से कम पाते हैं, उनसे वासना के कारण हमारा संघर्ष बना-बनाया है।

पद्मावती—शीतोष्ण-संबंधी कर्तव्य और तृष्णा का अंतर तो आपने बहुत अच्छा समझाया।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



सम्राट्—यही दशा इंद्रिय-संबंधी विषयों की है। आँख से हमें देखने का काम लेना है, जिससे जीवन-यात्रा ठीक चले। यहाँ तक कर्तव्य है। इसी के साथ हम अच्छी-से-अच्छी वस्तुएँ देखना चाहते हैं, जो तृष्णा का विषय है। सुनने, सूँघने आदि की भी यही दशा है। इन तीनो विषयों में वासना की वृद्धि सीमा-युक्त होने से हमें कोई विशेष शारीरिक हानि नहीं पहुँचती। उधर जिह्वा का विषय कुछ विशेष विचारणीय तथा कष्टप्रद भी है। वैद्यकीय नियमों के अनुसार जो-जो वस्तुएँ जिन-जिन मात्राओं में शरीर चाहता है, उतनी ही हमें लेनी चाहिए। उधर ईश्वर ने जिह्वा में स्वाद की शक्ति इस कारण से दे रक्खी है कि हम भोजन रुचि के साथ खायँ। ऐसा होने से वह विशेष लाभकर होगा। तो भी इसी रुचि के कारण हम ऐसे विविध पदार्थ खाना चाहते हैं, जो शारीरिक आवश्यकता से विशेष हैं, अथवा दुष्पच उत्पन्न करते हैं। इन दोनो दशाओं में शारीरिक उन्नति के स्थान पर वे हानि पहुँचाते हैं। स्वादवाली वासना का स्ववश करना बड़ा कठिन है, यद्यपि दीर्घ जीवनार्थ है परमावश्यक। इस वासना के अनुचित प्रकारेण बहुत बढ़ने से अति शीघ्र शरीरांत भी संभव है।

पद्मावती—यह तो बातों-ही-बातों में आपने बड़ा ही गहन विषय समझाया। अच्छा, अब अन्य विषयों पर आइए।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



सम्राट्—अब केवल अपत्योत्पादन का विषय रह गया है, जिससे आपका प्रश्न विशेषतया संबद्ध था। पुत्रोत्पादन की विधि में ईश्वर या प्रकृति ने आनंद भी विशेष रक्खा है, क्योंकि ऐसा न होने से बहुतेरे जंतु केवल कर्तव्य के विचार से इस आवश्यक प्रयत्न में प्रवृत्त ही न होते, और संसार का अंत हो जाता। जंतुओं में नर-मादाएँ साथी चुनने में बल, सौंदर्यादि के अनुसार प्रवृत्ति दिखलाती हैं। यही बात मूल-रूपेण मनुष्यों में भी है। जंतुओं में इसके संबंध में प्रचंड युद्ध भी हो जाते हैं, जिनमें उत्पत्ति के स्थान पर संहार भी देखने में आ जाता है। यही दशा मनुष्यों में भी होती, जिसे बचाने को समाज ने विवाह-बंधन की विधि निकाल रक्खी है। स्त्री अबला होने के कारण पुरुष के आश्रित रहती है। उधर सबल होने से पुरुष परिश्रम के कार्य करता ही है, जिससे प्रायः उसे ही धनार्जन के काम करने पड़ते हैं। इस आवश्यक कार्य में विशेष प्रवृत्त होने से वह सम्यक् प्रकारेण गृह-कार्य नहीं कर सकता, जो गृहिणी के ऊपर डाले जाते हैं। गृह-संचालन के ठीक-ठीक होने से न केवल गृहस्थी के जंतुओं, चाकरों, बच्चों आदि का उचित पालन-पोषण होता है, वरन् स्वयं गृह-स्वामी का परमोचित पालन-पोषण बुद्धिमती, प्रवीणा गृहिणी का सुखद कर्तव्य है। इतना तो कर्तव्य का विषय हुआ। स्त्री-पुरुष के सहयोग से बच्चों की उत्पत्ति होकर संसार-यात्रा का उचित परिचालन होता है। यहाँ तक तो

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



कर्तव्य का विषय है। इससे आगे बढ़कर वासना का विषय भी आ सकता है।

पद्मावती—यही तो संसार का सबसे कठिन प्रश्न उपस्थित किए हुए है, विशेषतया पति-पत्नी के लिये।

सम्राट्—मनुष्य जंतु से बहुत बढ़कर है। उनके लिये नरों में शक्ति की मुख्यता है, और मादाओं में कुछ शक्ति के साथ कोमलता-गर्भित सौंदर्य की। मनुष्यों में इससे आगे विचारों में साम्य तथा गुणों का प्राचुर्य भी वांछनीय है। प्रेम केवल सौंदर्य और शक्ति पर आश्रित न होकर विशेषतया सद्गुणों के अनुसार भी चलता है। प्रेम-पात्र से कोई बदले का प्रश्न कभी नहीं सोचना चाहिए। बिना किसी स्वार्थ या आशा के प्रेम-पात्र के भी हित-साधन करने की उद्दाम इच्छा सच्चे प्रेम के लिये आवश्यक है, जैसा कि मित्रता में भी कहा जा चुका है।

पद्मावती—हित-साधन तो सज्जनों को सभी का करना चाहिए। ऐसी दशा में उनमें तथा प्रेम-पात्र में क्या भेद है?

सम्राट्—इच्छा की महत्ता वास्तविक प्रेम की कसौटी है। यदि गुणों को छोड़कर केवल शक्ति और सौंदर्य के आधार पर प्रेम किया जाय, तो वह इंद्रिय-लोलुपता से भिन्न न होकर प्रेम की कोटि के बाहर चला जायगा, अर्थात् वह प्रेम ही न होगा, वरन् स्वार्थ-मात्र रहेगा। सच्चा प्रेम प्रेम-पात्र के हित-साधन-मात्र को अपना लक्ष्य समझेगा, उससे कभी कुछ आकांक्षा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



न करेगा, तथा उसके हित-साधन में कोई भी परिश्रम या क्षति असह्य न मानेगा। वासना सच्चे प्रेम की सहज शत्रु है। अपत्योत्पादन प्रेम का अंग न होकर संसार-परिचालन-मात्र का अंग है। यदि यह परिश्रम कर्तव्यवाले विचार के अतिरिक्त केवल इंद्रिय-सुखार्थ किया जाय, तो वह कर्तव्य-पालन न होकर वासना का पोषक होगा। प्रेम-पात्र और साधारण लोगों के हित-साधन में बहुत करके केवल मात्रा का अंतर होता है, तथा उसमें वासना प्रायः नहीं होती।

पद्मावती—देव ने तो स्त्री-पुरुष का व्यवहार भी ऋषियों का-सा तप बना दिया है।

सम्राट्—बात तो यही है, देवीजी! संसार में मुख्यता कर्तव्य-पालन-मात्र की है। वासना हमें न केवल उससे च्युत करती है, वरन् हमारे आचरण गिराती अथच जीवनावधि भी घटाती है। संसार में अपने उचित भाग से बहुत अधिक इंद्रिय-सुखादि की इच्छा ही न केवल घोर संघर्ष का कारण होती है, वरन् अपनी भी हानि करती है।

पद्मावती—क्या पुरुषों को एक स्त्री के जीवन-काल में भी अन्य विवाह करने की इच्छा करनी चाहिए? है तो लालसा-मात्र वासना का अंग, किंतु मेरा प्रश्न लालसा-हीन लोक-यात्रा से संबद्ध है।

सम्राट—वास्तविक प्रेम तो इसके प्रतिकूल है ही। हमारे भारतीय राजन्यवर्ग में ऐसा प्रयोग होता अवश्य आया

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



है, किंतु मेरी समझ में वह शुद्ध प्रेम का न्यूनाधिक बाधक है।

पद्मावती—यदि स्त्री को इससे वैपरीत्य न हो, तो?

सम्राट—उससे ऐसी आज्ञा माँगनी ही प्रेमी पुरुष के लिये अनुचित है।

पद्मावती—(आकार से कुछ खिन्न होकर) है तो देव का कथन यथार्थ, फिर भी संसार में इतना ऊँचा भाव सदैव नहीं देख पड़ता।

इस प्रकार वार्तालाप करके ये दोनो पृथक् हुए, और अपने-अपने कामों में लगे। सम्राट् उदयन को आजवाला राजकुमारी का वार्तालाप दर्शन-शास्त्र-गर्भित होकर भी कुछ अनोखा-सा लगा। वह मन-ही-मन सोचने लगे—क्या राजकुमारी पद्मावती मुझसे विवाह करने को उत्सुक है? उसका आचरण तो बहुत ही उच्च है, कभी कोई वासना की झलक तक उसमें देख नहीं पड़ी, किंतु मेरे एक ही निमंत्रण पर वह यहाँ आ गई, तथा डकैतों द्वारा कुछ कष्ट पाकर अपने भ्राता से पूछे जाने पर भी उनके साथ गई नहीं। जब-जब मैंने उसे भगिनी कहा, तब-तब कभी उसके वदन पर प्रसन्नता की छाया न दिखी, वरन् कुछ झझक-सी जान पड़ी। आज सामाजिक नियम-मात्र के आधार पर उसने स्वसापन को एक अशुद्ध यद्यपि सुभाषित कथन-मात्र माना। अब मैं सिवा देवीजी, राजपुत्री आदि कहने के उसे कभी स्वसा, भगिनी,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



वहन आदि न कह सकूँगा। जब एकाधिक विवाह के प्रतिकूल मैंने मत प्रकाशित किया, तब कहने को तो उसने उसे योग्य कहा, किंतु चेहरा उसका उतर गया। सौंदर्य में अनुपमेय है ही, वरन स्वयं सम्राज्ञी से बढ़कर सुंदरी दिखती है। सद्गुणों में भी उनसे कम नहीं है। उन्हीं का अस्तित्व इस शुद्ध-हृदया राजकुमारी की मुझसे प्रकट विवाहेच्छा का बाधक है तो भी उनसे प्रेम पूर्णता के साथ निभाती है। दोनो के आचरणों में कभी तिल-मात्र अनौचित्य नहीं आने पाता। ऐसी परमोत्कृष्ट राजकुमारी का विवाहार्थ मान न कर सकना मेरे लिये प्रशंसा की बात है तो नहीं, किंतु प्रेमवती सम्राज्ञी के साथ यह आकांक्षा अन्याय-गर्भित है ही। कर्तव्य-मार्ग का ऐसा सुदर कथन पद्मावती से करके क्या उसी के सबंध में वासना-गर्भित विचार नहीं कर रहा हूँ? किंतु क्या करूँ? इस रूप-राशि की एक प्रकार से माँगी हुई भिक्षा का निरादर कैसे करूँ, जब कि उसके सद्गुण और रूप भी मेरे हृदय में बसे हुए हैं? फिर भी प्रेमवती सम्राज्ञी की शुद्ध प्रीति का इसमें निरादर है ही। क्या करूँ और क्या न करूँ? समझ पड़ता है कि महामंत्री ने इसी रूप-राशि के संबंध में मुझसे विवाह का प्रश्न उठाया था। मित्रवर मगधेश भी इसके उत्सुक समझ पड़ते हैं, नहीं तो निष्कारण अपनी रूप-राशि, गुणवती भगिनी यहाँ भेज कैसे देते? दुष्ट पांचालराज इस बेचारी के पीछे यहाँ तक पड़ा है कि

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



डकैती से भी मुख नहीं मोड़ता ! मगधेश से पूर्ण मित्र-भाव इस विवाह द्वारा संपादित हो जाने से मैं अपना पांचाल-देश भी पा सकूँगा ! वह देश अपना ही है, और अनंतवीर्य केवल बल-पूर्वक उस पर धींगाधींगी से अधिकृत है। यदि मैं पांचालवाला अपने वंश का अधिकार भुला दूँ, तो भी वह दुष्ट केवल राज्य-लोभ से कौशांबी पर क्रूर दृष्टि न डालेगा, इसका कोई निश्चय नहीं है। फिर भी यहाँ अपना कुछ बना नहीं सकता। नीति, प्रेम और पितृतुल्य मान्य महामंत्री की सम्मति इस विवाह के अनुकूल हैं, तथापि कर्तव्य का न होकर यह है वासना का ही विषय। कुल बातों पर विचार करके मैं न तो कर्तव्य-पथ से च्युत होना चाहता हूँ, न प्रेम-पूर्ण सम्राज्ञी के शुद्ध प्रेम का निरादरकर्ता। न जाननेवाला कुछ भी कर सकता है, किंतु महर्षि जमदग्नि की शिक्षा अपनी मानसिक उन्नति तथा सम्राज्ञी के अमोघ प्रेम को जब तुला पर रखता हूँ, तब पांचाल-प्राप्ति की संभावना, नीति की राजाओं के लिये मान्यता, तथा राजपुत्री-संबंधिनी महती लालसा भी कुछ हल्की जँचने लगती है। है तो लालसा महती, किंतु शुद्ध प्रेम और कर्तव्य-पालन का उससे विरोध है। हे लालसे ! मुझको छोड़। प्यारी पद्मे ! तेरा प्रेम मुझे अप्राप्य हो रहा है। तेरा देवी-तुल्य रूप और उससे भी बढ़कर सद्गुण मेरे लिये परमात्मा ने नहीं बनाए हैं। इस रूप-राशि के त्यागने में मेरा हृदय रो रहा है, किंतु

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



उच्च शिक्षा और कर्तव्य-पालन का इस सुखद मार्ग से विरोध है। क्या करूँ? स्वयं महात्मा रामचंद्र ने जब प्रेम-मूर्ति, रूप-राशि सीता को छोड़ा था, तब क्या इससे बढ़कर कर्तव्य-निर्वाह पर प्रेम एवं आत्मसंयम नहीं दिखलाया था? हे पाप-पूर्ण दुराचार की बुद्धि! तू मुझे छोड़कर चली जा, मैं कुमति के आगे सुमति का मान करूँगा। वासना को लात मारकर शुद्ध प्रेम का मार्ग पकड़ूँगा, अशुद्ध का नहीं। क्या करूँ? लालसा पीछा नहीं छोड़ती, किंतु दृढ़ता पकड़नी ही होगी। इस प्रकार चित्त स्ववश करके सम्राट् ने यह विषय भुलाने का प्रयत्न किया।

उधर राजपुत्री पद्मावती का मानसिक क्षोभ ऐसा बढ़ता गया कि शीघ्र ही असह्यप्राय हो गया। वह यही सोचती थी कि सम्राट् पर उसकी मानसिक अनुरक्ति शब्दों से तो नहीं, किंतु इंगितों, आचरण आदि से प्रकट हो चुकी थी। वह उन्हें ऐसा मूर्ख न समझ सकती थी कि उसके कौशांबी आने, उनसे संगति-वृद्धि, मिलित नृत्य आदि का वह अर्थ ही न समझ सकते। उनकी अपने से अमोघ मानसिक अनुरक्ति भी वह भली भाँति जान चुकी थी। केवल कर्तव्य-पालन के बढ़े हुए विचारों से अपने संबंध में उनकी नाहीं का भाव समझकर उन्हें और भी पूज्य मानती थी। अपना भी आजन्म उच्चाचरण एवं धार्मिक जीवन उसके स्वार्थ-गर्भित कार्यों एवं सम्राट् पर क्रोधादि का बाधक था। फिर भी उनसे धर्म-पूर्ण मिलन का

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



ऐसा उद्दाम प्रयत्न कर चुकी थी कि उसका असाफल्य सर्वतोभावेन असह्य हो रहा था। दो-तीन दिनों तक वह पूर्ण प्रयत्न करती हुई भी अपना अश्रु-प्रवाह न रोक सकी, तथा एकांतसेविनी होकर उसे छिपा रही थी। उसके मुख की दीप्ति बहुत मलिन हो गई थी, और पूर्ण प्रयत्न करके भी वह उसासों का बाहुल्य नहीं रोक पाती थी। उसका शरीर कृश हो रहा था, और मुख पर से मुसकान की सुखद आभा लुप्त हो गई थी। न तो वह सम्राट् का दोष मानती थी, न स्वयं स्वार्थपरता अपनानी चाहती थी, फिर भी अपने को सँभाल न पाती थी। ऐसी दशा देखकर सखी माधवी ने एक बार एकांत में वार्तालाप चलाया।

माधवी—प्यारी पद्मे ! अब तुम्हारी क्या दशा हो रही है ! अपने चित्त को स्ववश करने में क्या नितांत असमर्थ हो गई हो ?

पद्मावती—प्यारी सखी ! करूँ, सो क्या करूँ ? सम्राट् का कोई दोष नहीं है, न मैं स्वार्थांध होकर सम्राज्ञी को कष्ट देना चाहती हूँ। अब तक कभी वासनाओं के वश में न हुई थी, किंतु अब विवश हुई जाती हूँ। शब्दों से कोई प्रार्थना तो मैंने की नहीं, किंतु आकार-प्रकार से मैं उसे रोक नहीं सकी हूँ। जान वह सब कुछ गए हैं, और मुझ पर उनकी अनुरक्ति उन पर मेरीवाली से अधिक नहीं, तो न्यून भी नहीं है। वह सद्धर्म के बढ़े हुए भावों से विवश हो रहे हैं, किंतु मैं

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



अपनी महत्तावाले मार्ग को सँभाल नहीं पाती। अब करूँ, तो क्या करूँ ?

माधवी—प्यारी पद्मे ! यह प्रेम का मार्ग तलवार की धार है। इसका सँभालना अनुभव-शून्य अथच परम धार्मिक बालिकाओं के लिये भी असंभव नहीं, तो परम दुस्तर अवश्य है। जब परिस्थिति ने दोनो ओर प्रचंड कामाग्नि दीप्त कर रक्खी है, तब इसका परिणाम आगे-पीछे सुखद अवश्य होगा, ऐसा मेरा भाव है। आपको, सखी ! महामंत्री की भारी कार्य-दक्षता पर विश्वास रखना चाहिए। कोई-न-कोई युक्ति निकलेगी अवश्य। अब आपका यहाँ विराजना असंभव हो गया है। शारीरिक दशा ऐसी बिगड़ रही है कि एक ओर स्वास्थ्य-रक्षण कठिन है, और दूसरी ओर मानसिक उद्दाम भावनाओं का सभी पर प्रकटीकरण रुक नहीं सकता।

पद्मावती—है तो यही बात, सखीजी ! मैं सम्राट् अथवा काकाजी से भी इस विषय पर समुचित वार्ता कर सकने में अशक्त हो गई हूँ। अश्रु-प्रवाह चल निकलेगा, तथा यथायोग्य सामाजिक वार्ता न हो सकेगी। तुम्हीं इसका प्रबंध बाँधो।

माधवी—अब यही उचित है।

पद्मावती—देखो, ऐसी बुद्धिमत्ता से बात हो कि कोई भोंडापन आने न पाए। मैं असंतोष अथवा असाफल्य-प्रदर्शन के साथ यहाँ से नहीं जाना चाहती। समझ यही पड़े कि मुझे कोई भी खेद या कुभाव नहीं है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



माधवी—ऐसा ही होगा, प्यारी सखी !

इस प्रकार राजपुत्री से सम्मति स्थिर करके माधवी ने महामंत्री से बात चलाई।

माधवी—आर्य ! अब राजकुमारीजी मगध जाना चाहती हैं। यहाँ चिरकाल रहकर सम्राट्, सम्राज्ञी तथा आर्य की कृपाओं के लिये अत्यन्त आभारी हैं। बहुत-बहुत धन्यवाद भी देती हैं। अब जाने की आज्ञा मिले।

महामंत्री—मैंने भी इन दिनों उन्हें दो-चार बार देखकर यही उचित समझा है कि वह अब राजगृह को फिर से सुशोभित करें। कृपया उन्हें समझा दीजिएगा कि मेरी सहृदय सहायता पर सदैव विश्वास रखना चाहिए। असाफल्य का शब्द मेरे कोष में नहीं है।

माधवी—आर्य ! उनकी कोई प्रार्थना आपसे है तो नहीं।

महामंत्री—ऐसा तो मैं भी समझता हूँ; आप तो भी मेरा संदेश उन पर प्रकट कर दीजिएगा। मैं स्वयं कार्याधिक्य से इन दिनों उनसे मिल कम पाया हूँ।

माधवी—बड़ी ही कृपा हुई, आर्य !

अनंतर महामंत्री से बिदा होकर माधवी ने उचित समय पर सम्राट् से भी वार्तालाप किया।

माधवी—देव ! अब मेरी सखी राजगृह पलटने को उत्सुक हुई हैं। सम्राज्ञी महोदया तथा देव की कृपाओं के

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



लिये अत्यंत आभारी हैं। बहुत-बहुत धन्यवाद अर्पित करती हैं।

सम्राट्—अभी मुझसे तो उन्होंने ऐसा कुछ कहा नहीं। क्या चित्त में खेद अथवा किसी अनौचित्य का संचार तो नहीं हो गया है? दो-चार दिन हुए, मेरी एकाध हृदय-हीन बात उनसे हो पड़ी, तभी से उन्होंने अध्ययन-कार्य भी भुला रक्खा है। क्या बात है? सखीजी!

माधवी—किसी प्रकार के संदेह का अवकाश नहीं है, देव! उस बात से तो वह और भी प्रसन्न हुई थीं। कहती थीं, देव की वार्ता से उन्हें दोनो ओर से कर्तव्य-पालन की महत्ता भली भाँति अवगत हुई है। उस वार्ता से तो वह बहुत संतुष्ट हुई। पाठ न पढ़ने का कारण यह हुआ है कि इन दिनों भ्राता की याद आ गई, जिससे घर शीघ्र जाने को उत्सुक हो गई हैं। ऐसा दुःखद स्मरण आया कि दो-तीन दिन न्यूनाधिक रोती भी रहीं।

सम्राट्—क्या मुझसे अब मिलेंगी नहीं?

माधवी—ऐसा सम्राट् क्यों समझते हैं? मिलने पर मानसिक चिंता की बात देव न चलाएँ, तो ठीक होगा।

सम्राट्—ऐसा तो होगा ही। मैं उन्हें कष्ट थोड़े ही दूँगा।

अब माधवी "बड़ी कृपा" की बिनती करके प्रणामानंतर चली गई। तब एक दिन सम्राट् ने राजकुमारी से यथासमय वार्तालाप किया। यों कथनोपकथन हुआ—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



सम्राट्—देवीजी ! मुझे भय है कि उस दिन मेरे विचार जो प्रकट हुए, वे कुछ हृदयहीन थे। क्या क्षमा-प्रदान न होगा ?

पद्मावती—देव ! ऐसा संदेह क्यों किया जाता है ? उपदेशों का रूप ही निष्ठुर सत्य-गर्भित होता है। जो व्यक्ति उसे सह न सके, वह स्वयं तिरस्करणीय या कम-से-कम निंद्य होगा।

सम्राट्—मेरे निष्ठुर कथन उस दिन हृदय-विदारक-से थे। यदि देवीजी-सा कोई परमोच्च मानस-पूर्ण बोधव्य न होता, तो उदासीनता-वर्द्धन का भय भी था।

पद्मावती—मेरे लिये देव को ऐसा भय न रखना चाहिए। स्वार्थ-पूर्ण वासना बड़े-बड़ों को नीचे गिराती है। कर्तव्य-पालन की शिक्षा उच्चादर्शों पर आधारित होती ही है। ऐसे आदर्शों को हृदयंगम करना क्या दाल-भात का कौर है ? मुझे भ्राता का स्मरण आ जाने से कष्ट हुआ, देव के उपदेशों से विशेष नहीं। कर्तव्य-क्षेत्र में आकर अलभ्य पदार्थों पर चित्त को दौड़ने देना मूर्खता ही नहीं, वरन् आचरण-पतन की भी परा काष्ठा है। फिर भी मन बड़ा चंचल होता है। सदैव उच्चातिउच्च उपदेशों को पूर्ण दृढ़ता के साथ ग्रहण नहीं कर पाता। ऐसी दशा में उपदेशक पर लांछन-भाव लादना उलटी बात है। अपने ही मन को स्ववश करना चाहिए।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



सम्राट्—ऐसे उच्च भावों के साथ आपके नेत्रों में अश्रु कैसे झलक रहे हैं ?

पद्मावती—अब मुझे क्षमा-प्रदान हो, नहीं तो झलकने के स्थान पर प्रवाह चल पड़ेगा।

सम्राट्—मैं भी इस काल अपने नेत्रों का अश्रु-प्रवाह नहीं रोक पाता।

इस प्रकार वार्तालाप के पीछे दोनो शीघ्रता-पूर्वक पृथक् हो गए। अब राजपुत्री के प्रस्थान का विचार दृढ़ किया गया। पहले तो इस असाफल्य से महामंत्री महोदय चिंतित हुए, किंतु कुछ सोच-विचारकर उन्होंने सम्राट् तथा सम्राज्ञी की आज्ञा लेकर राजकुमारी के मगध जाने का प्रबंध कर दिया, और वह सम्राज्ञी तथा सम्राट् से प्रेम-पूर्वक मिलकर साश्रु-नेत्र प्रस्थित हो गई। अनंतर महामंत्री ने एक दिन एकांत में सम्राज्ञी से वार्तालाप किया।

यौगंधरायण—देवीजी महोदया ! मैं आज आपसे एक ऐसे विषय पर वार्तालाप करना चाहता हूँ, जो आपको कुछ कष्टप्रद होकर भी सम्राट्, साम्राज्य तथा सद्धर्म, तीनो का सहायक है।

सम्राज्ञी—यदि ऐसी बात है, तो कुछ कष्ट सह्य मानना ही पड़ेगा। आपका-सा महापंडित, धर्मज्ञ, साम्राज्य तथा हम दोनो का हितैषी कहाँ मिलेगा ? कहिए, क्या कहना चाहते हैं ?

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



यौगंधरायण—मैं राजकुमारी पद्मावती को केवल ललित कलाओं के अभ्यासार्थ यहाँ नहीं लाया था, वरन् सम्राट् और उसकी प्रेम-पूर्ण दृष्टि एक दूसरे की ओर समझकर उसे दृढ़ता-पूर्वक जानने के लिये भी मैंने यह बात स्वीकृत की थी।

सम्राज्ञी—उन्हें तो स्वयं सम्राट् यहाँ लाने को उत्सुक थे।

यौगंधरायण—थी बात यह भी, किंतु यदि मेरी पूर्णेच्छा न होती, तो स्वयं मगधेश अपनी स्वसा को यहाँ न भेजते। मैं प्रायः अट्ठारह वर्ष वहाँ का भी मंत्रित्व कर चुका हूँ, इसी से वह भी अब तक मेरा मान किए जाते हैं।

सम्राज्ञी—जब ऐसी बात थी, तब विवाह का ही प्रबंध आपने क्यों न बाँधा? अनावश्यक इतना कष्ट राजपुत्री को क्यों दिया?

यौगंधरायण—वह ललित कलाओं की शिक्षा भी चाहती थी। इधर मैं यह भी देखना चाहता था कि चिरकाल की संगति से आपके राजपुत्री से मनमोटाव होने की संभावना तो नहीं है।

सम्राज्ञी—वह इतनी साध्वी है कि इस बात का भय नहीं है। क्या सम्राट् को यह विवाह स्वीकार्य है?

यौगंधरायण—यही तो बात कठिन है। वह आपके महा-प्रेम और पद का निरादर किसी दशा में नहीं करेंगे, चाहे पद्मावती से प्रेम के कारण उन्हें कितना भी कष्ट हो।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



सम्राज्ञी—क्या मेरी स्वीकृति से भी उनका ऐसा विचार न बदलेगा ?

यौगंधरायण—आपसे उनका प्रेम इतना महान् है कि आपकी स्वीकृति भी उन्हें विवाहार्थ सन्नद्ध नहीं कर सकती।

सम्राज्ञी—क्या पद्मावती से प्रेम के कारण उनको कष्ट भी संभव है ?

यौगंधरायण—कष्ट की तो ऐसी संभावना है कि मैं उनका भविष्य-स्वास्थ्य भी शंकाप्रद समझता हूँ। उधर इस विवाह के हो जाने से मगधेश से भी इस साम्राज्य का इतना प्रेम बढ़ेगा कि दोनो भूपालों की शक्तियों के बल पर हम पांचाल, काशी आदि के शत्रु नरेशों को पद-दलित कर सकेंगे। तो भी राज्य-वृद्धि की ओर मेरा इतना विचार नहीं है, जितना सम्राट् के भविष्यवाले सुख की ओर।

सम्राज्ञी—यदि ऐसा है, तो मैं सहर्ष स्वीकृति देती हूँ। यदि केवल स्वीकृति से काम न बने, तो जो युक्ति आप योग्य समझें, वही की जाय। पद्मावती के पयान-काल में मुझे भी समझ पड़ा था कि उसे तथा सम्राट् का भारी कष्ट था।

यौगंधरायण—यही तो बात है। यदि आप निश्चय-पूर्वक दृढ़ता से कहती हो, तो मैं कोई-न-कोई युक्ति निकालूँगा ही।

सम्राज्ञी—मैं, कार्याजी! आपकी सम्मति के प्रतिकूल

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



कभी नहीं जा सकती, विशेषतया ऐसी दशा में, जब मेरा भी आपकी सम्मति से पूर्ण मतैक्य है।

यौगंधरायण—तब फिर, महादेवीजी! मैं इसका प्रबंध बाँधता हूँ।

समाज्ञी—अवश्य बाँधिए, काकाजी!

---

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# एकादश परिच्छेद

## पद्मावती का विवाह

राजकुमारी पद्मावती के राजगृह पलटने के पीछे चार-छ दिनों तक सम्राट् उदयन दृढ़ विचार रखते हुए भी नितांत चिंताकुल रहे। उनको ललित कलाएँ सिखलाने में इनका समय अवश्य कुछ आधिक्य से लगता था, किंतु यह कार्य केवल कर्तव्य-पालन न होकर महानंदप्रद भी था। उनके चले जाने से सूनापन लगने लगा। चलते समय तथा उससे कुछ दिनों पूर्व राजकुमारी के सात्त्विक भावों, विशेषतया अश्रु-बाहुल्य से सम्राट् भी अपने आँसू कई दिन रोक न सके। आपने राज-काज, खेल-कूद आदि में बहुत कुछ प्रयत्न मन लगाने का किया, किंतु चित्त प्रसन्न न रख सके। यह उद्विग्नता देखकर सम्राज्ञी ने भी एक दिन कहा कि यदि राजकुमारी की कौशांबी में स्थिति ऐसी आनंदप्रदायिनी थी, तथा उनके जाने से चित्त में ऐसा भारी उचाट है, तो उनसे विवाह का प्रयत्न क्यों न किया जाय ? सम्राट् ने इस बात को टाल दिया, तथा विवाह करने के प्रश्न पर दृढ़ता-पूर्वक नाहीं कर दी। अनंतर सम्राज्ञी की स्वीकृति जानकर भी उनकी यह नाहीं हाँ में परिवर्तित न हुई। इससे सम्राज्ञी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



को भी महामंत्री के विचारों पर पूरा निश्चय बैठ गया। पद्मावती को राजगृह पधारे प्रायः एक मास बीत गया, तथापि सम्राट् का चित्त पूर्णतया कश्मल-हीन न हुआ। अब अपना मन प्रसन्न करने को महामंत्री की सम्मति से महासेनापति रुमण्वान को साथ लेकर १५ दिनों के लिये सम्राट् लावणक को पधारे। वहाँ सिंहों की सफल मृगया हुई, किंतु आप जब कौशांबी पलटे, तब ज्ञात हुआ कि यहाँ एक बड़ी ही दुःखद घटना हो गई थी, अर्थात् सम्राज्ञी वासवदत्तावाले प्रासाद के एक भाग में प्रचंड पावक-प्रकोप हो गया था, जिसमें महल के कुछ कक्षों आदि के साथ वहीं सोई हुई सम्राज्ञी भी जलकर भस्म हो गई थीं। प्रासाद का मुख्य भाग साधारणतया काष्ठ-निर्मित था ही, जिसके बुझाने का प्रचुर प्रयत्न होते हुए भी वह ऐसी विकरालता से जला कि रानी के शव का भी पूरा पता न लगा, वरन् संदेह ही रहा कि दो तीन-शवों में से उनका कौन था? सम्राट् ने जब कौशांबी आकर यह समाचार सुना, तब उन्हें घोर कष्ट हुआ। स्वयं महामंत्री तक ने दश-मूली-संग्रह, जल-पूर्ण घटों आदि के सहारे आत्मीय प्रयत्न भी करके पूर्ण परिश्रम किया तथा कराया था, किंतु सम्राज्ञी की रक्षा न हो सकी थी। सम्राट् से उनका यों वार्तालाप हुआ—

यौगंधरायण—देव! संकोच-वश मेरा मुख आपके सम्मुख नहीं होता। कितना अनर्थ हो गया कि मैं यहीं बैठा रहा, तथापि सम्राज्ञी का संरक्षण न हो सका!

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



सम्राट्—मेरा भाग्य ही फूट गया, काकाजी ! आप क्या करते ? सुना, आत्मीय घोर प्रयत्न में भी आपने कसर न लगाई थी। फिर भी उनका रक्षण न हो सका। ऐसी स्त्री तीन जन्म न प्राप्त होगी। भला, यह पावक-प्रकोप हो कैसे पड़ा ?

यौगंधरायण—गृहों के विशेषतया काष्ठ-निर्मित होने से अग्नि-कांड तो राजधानी तक में हुआ ही करता है। आग बुझाने के भी समुचित विधान रहते हैं, किंतु हर्म्य में सखियों की असावधानी से इस बार आग कुछ वस्त्रों के सहारे लग गई। उन्होंने मूर्खता-वश इतरों को न बुलवाकर कुछ देर तक अपने ही परिश्रम से सम्राज्ञी के बचाने का प्रयत्न किया, जो स्वभावतः निष्फल हुआ। जब अंत में शोर मचा, तब बाहर से लोग दौड़े। किंतु पावक-प्रकोप बहुत बढ़ गया था, और आग धू-धू करके बड़ी तीव्रता-पूर्वक जल रही थी। बेचारी सम्राज्ञी आंतरिक कक्ष में सुख से सो रही थीं। उन्हें दैव-वश बाहर निकलने का मार्ग न मिल सका। मुझे तो ऐसी ग्लानि हो रही है कि अपने उच्च पद से त्याग-पत्र देने की सोच रहा हूँ। केवल देव के पधारने को ठहरा हुआ था। ऐसा अयोग्य पुरुष क्या महामंत्री होना चाहिए ?

सम्राट्—आप भी काकाजी ! क्या अनर्गल वार्ता करते हैं ? हानि तो अकथनीय हुई है; मेरा भाग्य ही फूटा हुआ था, किंतु आपका क्या दोष है ? कृपया ऐसी अनहोनी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



बातें मन में भी न लाया कीजिए। सम्राज्ञी तो दैव-दुर्विपाक से खो ही चुका हूँ, क्या काका भी खोना संभव है ? कृपया कभी भविष्य में भी ऐसी बात मुख से न निकालिएगा।

इस प्रकार वार्तालाप करके सम्राट् दो-तीन मास-पर्यंत बहुत दुःखित रहे। अंत में महामंत्री की सम्मति मानकर घोर चिंताओं के शमनार्थ तथा एक बार फिर से घर बसाने को मित्रवर मगधेश महाराजा दर्शक का प्रस्ताव सम्राट् ने स्वीकार कर लिया, और यथासमय उचित धूमधाम के साथ इनका राजकुमारी पद्मावती से मगध ( राजगृह ) में ही विधि-पूर्वक विवाह हो गया। वहीं यथासमय सोहाग-रात हुई, और दंपती प्रेम-पूर्वक वहीं दो-चार दिन रहे। अनंतर एक रात उनमें यों वार्तालाप हुआ—

सम्राट्—प्राणप्रिये ! तुमको मैंने पहलेपहल मित्र-स्वसा होने से भगिनी के रूप में माना, किंतु समझ पड़ता है, तुमने मुझे कभी भ्रातृमित्र करके न माना।

पद्मावती—मैंने, देव ! देव-पूजन, विद्या-पठनादि के अतिरिक्त कभी सुख-साधन की ओर ध्यान ही न दिया था। फिर भी आपके दर्शन होने से पहलेपहल मुझे देवी वासवदत्ता के सौभाग्य की महत्ता का ज्ञान हुआ। तो भी सखी के प्राणप्रिय पति को स्वपति के रूप में स्थापन की इच्छा को मैं उचित न समझ सकी। कर्तव्यों तथा धार्मिक कृत्यों पर

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



सदैव पूर्ण ध्यान रखने के कारण मैं सुखों के विचारों पर आकर्षण न्यूनरूपेण रखती थी। फिर भी आपके दर्शन जब दो-चार दिन हुए, तथा मिष्ट भाषण, दैहिक सौंदर्य, ललित कलाओं में महती गति, मृगया में साफल्य, लक्ष्य-भेदन की योग्यता, अहंभाव की न्यूनता आदि देख-देख विपरीत प्रयत्न करते हुए भी मेरा चित्त विवशता-पूर्वक आपमें लग गया। ज्यों-ज्यों मैं इस अनुचित भाव को हटाना चाहती थी, त्यों-त्यों यह मानसिक रीत्या प्रबल पड़ता रहा, यद्यपि इन बातों का भेद मैंने किसी पर प्रकट न होने दिया।

सम्राट्—भाव-गोपन की क्षमता आपमें है प्रबला, क्योंकि मैं भी इसे भाँप न पाया। एकाध बार मुझे ऐसा भ्रम हुआ अवश्य, किंतु मैं इसे अपने ही मनश्चांचल्य के रूप में लेकर आपके ऊपर किसी वासना का भार न थोप सका। मैंने यह न जाना कि अमूल्य वस्तु को देखकर संतों तक का चित्त डिगने लगता है। आप तो रूपवती, गुणवती, देवपूजिका, किंतु फिर भी नवोढ़ा-मात्र थीं। अच्छा, फिर आगे क्या हुआ?

पद्मावती—तब पांचालराज के द्वारा मेरे भ्राता से माँगे जाने पर विवाह का प्रश्न उठ पड़ा, और मेरे द्वारा उसका घोर तिरस्कार सुनकर काकाजी ने दद्दूजी की सम्मति से आपके संबंध में विवाह का विचार खड़ा कर दिया।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



जब आपने ललित कलाओं के शिक्षण के व्याज से मुझे कौशांबी जाने का निमंत्रण दिया, तब उसे हर प्रकार से अनुचित समझते हुए भी प्रेम-वासना-वश मैंने मान लिया। शिक्षण के प्रयत्न में आप समय विशेष लगाते थे, और आकृतियों से भी आपमें कर्तव्य-पालन के साथ वासना का न्यूनाधिक प्राबल्य दिख जाता था, किंतु आपके इंद्रियजितपन की मैं मुक्त कंठ से प्रशंसा करूँगी, क्योंकि प्रेम-पूर्ण वासना की प्रबलता हो जाने पर भी आपने अपना आचरण कभी तिल-मात्र न बिगाड़ा।

सम्राट्—सराहना मैं आपकी भी करूँगा, क्योंकि भ्राता और काका द्वारा मुझे जीतने पर नियुक्त होकर भी आपने कभी याचिका का रूप आचरणों में न आने दिया। स्त्री-पुरुषवाले कर्तव्यों के संबंध में एक प्रकार से मैंने आपके प्रबल एवं स्वर्गीय प्रेम का तिरस्कार-सा कर दिया, किंतु दैहिक भावों से निराशा न दबा सकने पर भी मुख से आपने उसे उचित ही कहा। मैं आपको पूर्णतया धन्यवादार्ह समझता हूँ। ऐसी उच्चाचरण एवं परमोच्च मानस-पूर्ण देवपूजिका, कर्तव्य-परायणा राजपुत्री पाकर मैं अपने को धन्य समझता हूँ। चाहता मैं आपको सदा से था, किंतु सम्राज्ञी के संबंध में उनके परमोच्च प्रेम के कारण मैं इतरों से सौहार्द-स्थापन किसी प्रकार से उचित न मान सका।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



पद्मावती—सहस्रशः धन्यवाद देकर आज देव से एक प्रार्थना भी करती हूँ।

सम्राट्—आज्ञा न कहकर प्रार्थना क्या कहती हो ? कहिए, क्या इच्छा है ?

पद्मावती—हमारे यहाँ मागध राज्य में यह नियम-सा है कि राजपुत्री के साथ उसकी सबसे प्रिय अंतरंगा सखी भी पति-सदन को जाती है। मेरी भी एक ऐसी ही सखी है, जो मेरे साथ कौशांबी जायगी।

सम्राट्—इसमें प्रार्थना की क्या बात है ? क्या मैं आपकी एक भी सखी का भरण-पोषण न कर सकूँगा ?

पद्मावती—केवल यही प्रश्न तो इस बात में नहीं है।

सम्राट्—फिर क्या है ? वह भी तो जानूँ। बड़ी अनोखी बात दिखती है।

पद्मावती—है तो ऐसा ही। बात यह है कि आप मेरे साथ उसके भी पति होंगे।

सम्राट्—यह आप क्या उलटी बातें कहने लगीं हैं ? स्त्रियाँ सौत को देखकर ही जल जाती हैं। यहाँ आप बिना मेरी इच्छा के ही सौत बनाना चाहती हैं। यह तो मुझसे न हो सकेगा। जैसे आपके सर्व-गुण-संपन्ना होने पर भी सम्राज्ञी वासवदत्ता के प्रकृष्ट प्रेम का आदर करके आपके पाने को परमोत्सुक होकर भी मैं एक प्रकार से नाहीं करता था, उसी भाँति आपके भी अमोघ प्रेम का निरादर न

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



करूँगा। आपकी कोई भी इच्छा न टालने का व्रती होकर एक यही बात नहीं मान सकता। यद्यपि आप स्वयं अपने प्रेम का अपमान चाहती हैं, तथापि मैं ऐसा न करने में विवश हूँ। अभी आप बालिका-मात्र हैं, सो इतना नहीं समझ पातीं कि रूपवती सपत्नी का अस्तित्व स्त्रियों को कैसा दुःखद होता है।

पद्मावती—आज्ञा आपकी है तो पूर्णतया उचित एवं मेरी ही मान-विवर्द्धिनी, तथापि मैं अपनी प्रिय सखी को छोड़ न सकूँगी। उधर जब मैं पुत्र-पौत्रवती होऊँगी, तब बेचारी वह क्या मेरे कारण जीवन-पर्यंत पति-प्रेम से हीन रहेगी, अथवा पुत्रादि का प्रसन्न मुख कभी न देख सकेगी? इतनी स्वार्थपरता भला, मुझसे कब सधेगी? उसके रूप-गुण भी मेरे से शतगुण श्रेष्ठतर हैं। यदि उसे एक रात देखकर तथा उसका सम्यक् प्रकारेण आदर करके आपको पूर्ण प्रसन्नता न मिले, तो मैं हठ न करूँगी।

सम्राट्—प्यारी पद्मे! तुम अभी बालिका-मात्र हो। तुम सांसारिक वास्तविकताओं से अनभिज्ञ हो। इसी से ऐसी मूर्खता-पूर्ण बातें करती हो। कभी ऐसा हो सकता है कि मैं अपनी सम्राज्ञी का मान अपूर्ण करूँ, अथवा उसके प्रेम का निरादर कर दूँ।

पद्मावती—मैं आपके ऐसे परमोच्च विचारों का शत बार मान करती और इसके लिये शतशः धन्य हूँ वाद! देती फिर

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



भी इतनी प्रार्थना किए लेती हूँ कि यदि कभी मूर्खता-वश आपकी किसी आज्ञा का उल्लंघन कर जाऊँ, तो क्षमा का भाव चित्त से न हटे।

सम्राट्—यह भी कोई बात है? जो चाहो, करना। सम्राज्ञी हो, कोई सेविका नहीं, जो आज्ञा-पालन-मात्र पर ध्यान देती रहो। समझीं कि नहीं?

पद्मावती—बड़ी ही कृपा हुई देव!

अनंतर दो-चार दिनों के पीछे जब सम्राट् एक रात्रि रंगमहल को पधारे, तो शय्या पर सम्राज्ञी को मुख मूँदे बैठे पाया। इस पर उन्होंने कुछ आश्चर्यान्वित होकर उनसे इसका कारण पूछा, और उन्होंने जब कोई बात ही न की, तो शय्या पर बैठकर उनके मुख पर का वस्त्र उतार डाला। ऐसा होने पर आप बहुत ही चकित हो गए, क्योंकि पद्मावती के स्थान पर स्वयं सम्राज्ञी वासवदत्ता विराजमान थीं! सम्राट् ने प्रेम-गद्गद होकर उनके चंद्र-वदन पर चुंबन जड़े, और फिर पूछा।

सम्राट्—प्रिये! यह क्या तमाशा मैं देख रहा हूँ? ईश्वर को शतशः धन्यवाद हैं कि तुम अब भी जीवित हो, किंतु यहाँ कैसे आईं, और यह सब हो क्या गया? यह कौन-सी माया है? स्त्री-चरित्र का यह अपूर्व तथा सुखद कांड कैसा है? कहाँ तो कौशांबी में जल मरना, और कहाँ राज-गृह में सदेह प्रस्तुत होना! यह क्या माया है? प्रिये!

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



वासवदत्ता—मैं अब उज्जयिनी की राजकुमारी न होकर सम्राज्ञी पद्मावती की ज्येष्ठा सखी हूँ। उन्हीं ने कह रक्खा है कि यदि सखी आपको पसंद न हो, तो फिर कभी मुख दिखलाने का स्वत्व न रक्खेंगी।

सम्राट्—तो भी ज्येष्ठा हो, कनिष्ठा तो नहीं। यह सब तो हो चुका, किंतु बात बतलाओ कि यह सब हुआ क्या ? भला हुआ कि अग्नि-दाह के भय से अभी मरणोत्तर-संस्कार नहीं किए गए थे। ज्योतिषियों का विचार था कि यह कृत्य विवाह के पीछे हो। अब अपनी कथा पूर्णता के साथ बतलाओ। मुझे क्या धोखा दिया गया ? इसमें क्या तत्त्व था ?

वासवदत्ता—इन बातों में क्या रक्खा है ? कृपा बनाए रखिए। ज्येष्ठा सखी पसंद आई कि नहीं ?

सम्राट्—ज्येष्ठा सखी भाड़ में गई ; अपना वर्णन तो करो।

वासवदत्ता—मैं तो भाड़ में जा ही चुकी थी, अब ज्येष्ठा सखी के रूप में भी वहीं पहुँच गई।

सम्राट्—अरे, छोड़ो यह वृथा भाषण ; कहो हुआ क्या ?

वासवदत्ता—मुझे सपत्नी की आवश्यकता न थी, न कोई विशेष प्रतिकूलता ही थी। समझ पड़ता है कि काकाजी पद्मावती से आपका विवाह चाहते अवश्य थे, जिससे

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



पहले भी उन्होंने मेरे विवाह से प्रतिकूलता की थी; तथापि इतना मानना पड़ेगा कि एक बार आपकी पूर्ण भावना समझकर उन्होंने सहायता करने में कसर न लगाई। मेरा मान सदैव शुद्ध राजभक्ति के साथ किया, तथा प्यारी पद्मावती के संबंध में पूरे उत्सुक होकर भी कोई शीघ्रता न की, न उन्हें कौशांबी ले जाने में कोई चाल चली। मेरी इच्छा के प्रतिकूल कुछ किया भी नहीं। जब आप स्वयं उन्हें कौशांबी ले गए, तब भी तटस्थ हो रहे। समय पर मैंने तथा उन्होंने भी आपकी आकृति से जाना कि यद्यपि आप मेरा मान रखने को नया विवाह मेरी स्वीकृति की दशा में भी न करेंगे, तथापि उस शीलवती राजकुमारी के रूप-गुणों पर ऐसे मोहित थे कि उसकी अप्राप्ति की दशा में आपको मानसिक कष्ट कम न था। राजकुमारी भी चाहती आपको पूर्णतया थी, यद्यपि उसने सात्त्विक भावों का यदा-कदा प्राकट्य न होने दिया। जब आप मेरे कारण इतना कष्ट सहन करके भी अनादर नहीं होने देते थे, तब मेरा भी कर्तव्य आपका दुःख दूर करने का था। इसी कारण आपके मृगयार्थ जाने पर मेरी ही इच्छा से विश्वास-पात्र सेवकों तथा सेवि-काओं की संरक्षकता में मुझे उन्होंने यहाँ भेज दिया, तथा मृत्यु का झूठा संवाद उड़ा दिया। किसी ज्योतिषी को अपने पांडित्य के बल पर मरणोत्तर-संस्कार न कराए जाने का मंत्र देने पर विवश किया, तथा मगध में मैं गुप्त रूप से

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



प्यारी पद्मा की सखी बनकर उसी के प्रासाद में रही। यह भेद मगधेरा और पद्मा के अतिरिक्त यहाँ के कुछ ही विश्वास-पात्र व्यक्ति जानते थे। यही युक्ति कौशांबी में हुई। पूर्ण संदेह-निवारणार्थ प्रासाद में अग्नि-प्रकोप के पूर्व छिपाकर मृगया खेले हुए तीन कुछ बड़े मृगों के शव रखा दिए गए थे।

सम्राट्—अब तुम भी मय और शंबर की पूरी माया जान चुकी हो। इस प्रकार का धोखा देना क्या उचित था?

वासवदत्ता—यदि ऐसा न करती, तो सात्त्विक भावों के प्राबल्य से आपका रोग-पीड़ित भी हो जाना संभव था। उधर प्यारी पद्मावती का हित-साधन भी मुझे अभीप्सित था। करती, सो क्या करती? विवश हो जाना पड़ा। तो भी करबद्ध क्षमा की प्रार्थना करती हूँ। धोखा खाने में आपका तो कोई अहित हुआ नहीं, वरन् आनंद ही प्राप्त हुआ। अपनी सपत्नी लाने में मुझे रंचक खेद नहीं है, विशेषतया ऐसी दशा में कि वह बड़ी ही सात्त्विकी प्रकृति-युक्ता है। मगध के पूर्ण मित्र हो जाने से कौशांबी का राजकीय बल भी सम्यक् प्रकारेण बढ़ेगा। पांचालराज एक तो राष्ट्रीय से राजा बन बैठा, दूसरे, पुराने स्वामी के राजबल से रक्षित मागध राजकुमारी पर हाथ डाला गया। उसे इतना भी बोध नहीं है कि कौशांबी और मगध दो-दो बृहत् राज्यों से एक छोटी-सी बात पर शत्रुता मोल लेना उचित नहीं था।

सम्राट्—क्षमा माँगने की कोई आवश्यकता नहीं है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



तुमने तो अपना आत्मीय अहित करके मेरा तथा साम्राज्य का हित-साधन किया है। काकाजी की भी गौरवान्वित सम्मति अथच अपने मानस-रुझान का मान न करके मैंने तुम्हारी महत्ता को स्थापित रखना चाहा। जब तुम्हीं ने द्वितीय विवाह के लिये पति-प्रेम के बढ़े हुए कर्तव्य पर ध्यान देकर मुझे एक प्रकार से विवश-सा किया, तब आशा है कि इससे तुम्हें कोई कष्ट न होगा। तुम दोनों प्रेम-पूर्ण भगिनियों की भाँति रहोगी, ऐसी आशा है।

वासवदत्ता—कष्ट क्यों होने लगा? आपने तो विवाह किया नहीं, स्वयं मैंने एक प्रकार से विवश करके ऐसा कराया है। प्यारी पद्मा ने भी मुझसे पूरे सद्भाव का वचन लेकर विवाह में स्वीकृति दी है। आपको कोई चिंता न करनी चाहिए। सब ठीक-ठाक चलेगा।

सम्राट्—धन्य प्रिये! ऐसी दो रूप-गुण-संपन्ना प्रेम-पुत्तलियों को पाकर कौन हर्ष-विभोर न हो जायगा? फिर भी समझे रहना चाहिए कि तुमने मेरा स्वभाव एक प्रकार से बिगाड़ दिया है। एक स्त्री-व्रती होने का जो परमोच्च सिद्धांत मेरा था, उससे मैं विचलित हो गया हूँ। संभव है, भविष्य में किसी अन्य रूप-गुण-संपन्ना को देखकर मेरा चित्त कभी फिर भी डोल जाय। ऐसा कुत्सित भाव रोकने का मैं सदैव पूर्ण प्रयत्न करूँगा, तथापि परमोच्च सिद्धांतों से खिसक जाने पर भविष्य में उनका पालन डिग सकना संभव है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



वासवदत्ता—केवल एक मेरी मान-रक्षा पर जब आप इतने दृढ़ थे, तब दो-दो का मान कैसे न रक्खेंगे ? आपके उच्चाचरण पर हम दोनो को पूर्ण भरोसा है। दृढ़ता आपके आचरण का अंग हो चुकी है, जो किसी दशा में न छूटेगी, ऐसी आशा है।

सम्राट्—आशा तो मेरी भी यही है, और प्रयत्न में भी कमी न आएगी ? शेष ईश्वराधीन है।

इस प्रकार अपनी प्राणोपमा सम्राज्ञी को भी पाकर सम्राट् उदयन अत्यंत प्रसन्न हुए। महामंत्री यौगंधरायण से मिलने पर आप बहुत हँसे, और कोई उपालंभ देने के स्थान पर धन्यवाद देते रहे। महाराजा दर्शक ने यौगंधरायण की प्रतिज्ञा पूर्ण हुई समझकर हृदय से उन्हें बार-बार धन्यवाद दिए, तथा विवश करके सम्राट् उदयन के द्वारा भी आग्रह कराकर एक पूरा विषय ( देश ) मंडल के रूप में इन्हें अर्पित किया। मगधेश ने दायज के रूप में असंख्य मात्रा में धन-धान्यादि सम्राट् को अर्पित किए, तथा दोनो राज्यों में यह भी दृढ़ निबंध स्थिर हो गया कि समय पड़ने पर दोनो एक दूसरे की सहायता किया करें। पांचाल-राज्य पर मिलित आक्रमण करने का विचार भी दृढ़ हुआ। अनंतर मगधेश से प्रेम-पूर्वक मिल-भेंटकर दोनो सम्राज्ञियों-सहित सम्राट् सवर्ग कौशांबी को प्रस्थित हुए।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# द्वादश परिच्छेद

## पांचाल-विजय

कौशांबी में सम्राट् उदयन दोनो सम्राज्ञियों के साथ जब प्रायः एक साल सुख-पूर्वक रह चुके, तब दोनो से एक-एक पुत्र-रत्न भी प्राप्त हुए। वासवदत्ता का ज्येष्ठ पुत्र नरवाहन हुआ, और पद्मावती का कनिष्ठ पुत्र बोधिकुमार, जो समय पर अच्छा गज-विद्याविद् हुआ। नरवाहन को वहीनर भी कहते थे। वह शूर कहा गया है। उदयन ने एक विश्वविद्यालय कौशांबी में स्थापित किया। भारत में उस काल प्रसिद्ध बड़े नगर थे अयोध्या, काशो, चंपा, कंपिला, कौशांबी, मथुरा, श्रावस्ती, मिथिला, राजगृह, रोरुक, सागल और साकेत। इन सबको समय-समय पर आपने सम्राज्ञियों-सहित देखा। राज्य-शास्त्र को उस काल दंड-शास्त्र कहते थे, तथा ऐसा विचार था कि राज्य-शास्त्र को धर्म, व्यवहार और न्याय के अनुसार होना चाहिए। जातियों में उस काल चातुर्वर्ण्य चलता था ही, अथच अंबष्ट, निषाद, उग्र, मागध, स्वर्णकार, बढ़ई, लोहार, कुक्कुटक और चांडालों के भो विवरण आए हैं। रथकारों और पुराणवाचकों के भी कथन ग्रंथों में हैं। पैसे को क्षिपन कहते थे। पीछे यह कार्षापण

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



(कहापन) भी कहलाने लगा। निष्क (अशरफ़ी) का कथन आया है, किंतु धरण (रुपए) का नहीं। उदयन शंकर की आराधना करते थे। इन्हें गुप्त भांडार भी मिला। अपने सालों में इनका विशेष प्रेम था। वासवदत्ता के भाई का नाम गोपालक था, तथा पद्मावती के भाई का सिंहवर्मा। उसका बड़ा भाई दर्शक मगधेश था ही। इसका पुत्र उदय ४५० बी० सी० में राजा हुआ। उदयन के समय में कौशल, वत्स, अवंती और मगध प्रधान राज्य थे।

मागध संबंध होने के दो-तीन वर्ष पीछे महामंत्री यौगंधरायण ने पांचाल जीतने का विचार किया। वह राज्य वत्स का ही होने से उदयन के लिये उसकी विजयेच्छा स्वाभाविक थी। निकट के संबंध तथा महामंत्री के प्रभाव से मगधेश ने इस आरंभ में सहायता देना स्वीकार किया ही था। उनकी बहन पद्मावती पर जो आक्रमण पांचालराज द्वारा हुआ था, उसके कारण भी मगधेश अप्रसन्न थे। सब प्रकार से बल-संपन्न करके महामंत्री ने रुमण्वान की सम्मति और सम्राट् तथा मगधेश की आज्ञा लेकर साम्राज्य के सांधिविग्रहिक द्वारा पांचालराज की सेवा में प्राभृतक भेजवाया। जब उसकी एक प्रतिलिपि पांचाल-सांधिविग्रहिक को दी गई, तब उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। कौशांबी के सांधिविग्रहिक का मान वहाँ अच्छा हुआ था, और विचार हो रहा था कि इनका जाना क्यों हुआ था? युद्ध होने की संभवनीयता का

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



विचार वहाँ हुआ न था। चाटों, भटों आदि के द्वारा कौशांबी की सामरिक तैयारी का ब्योरा पांचाल में कुछ-कुछ ज्ञात हो चुका था, किंतु परिस्थिति के अनुसार अपने ऊपर आक्रमण की विशेष चिंता नहीं हुई थी। जब एकाएकी हृदय-विदारक प्राभृतक प्रेम-पूर्ण शब्दों में युद्ध-घोषणा-सी करता हुआ पहुँचा, तब सारे मंत्रिमंडल में प्रचंड खलभली पड़ गई। जब उसका समाचार महाराज की सेवा में विदित किया गया, तब उन्होंने महामंत्री, सांधिविग्रहिक, महादंड-नायक, महासेनापति तथा अक्षपटलाधिकृत का स्मरण करके अंतरंग राजसभा में मंत्र स्थिर करने का प्रबंध किया।

महाराजा—आर्य महामंत्रीजी! यह प्राभृतक तो एकाएकी आश्चर्य-पूर्ण आ गया। अब क्या विचार है?

महामंत्री—प्रायः पैंतीस-चालीस वर्षों से अपनी स्वतंत्रता चल रही है। इतने दिनों में कौशांबी ने अपने प्रतिकूल कोई आरंभ नहीं उठाया। इन दिनों कोई नवीन बात तो हुई नहीं है।

सांधिविग्रहिक—प्राभृतक में मागध राजकुमारी पर आक्रमण की जो बात लिखी हुई है, उसका विषय कुछ अज्ञात एवं आश्चर्य-जनक है।

महाराजा—प्रकट रूप में तो मानने की बात है नहीं, किंतु आपस में जाने रहना चाहिए कि उस रूप-राशि को तीन-चार साल हुए, मगध में देखकर मेरा चित्त चलायमान हो

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



गया था। मैंने मगधेश की सेवा में उसके अपने साथ विवाह की याचना भी की, जिसे प्रकट में अस्वीकार न करते हुए उन्होंने युक्ति-पूर्वक टाल दिया। पहले तो मैंने यह बात भुला दी, किंतु जब वह पढ़ाने के व्याज से कौशांबी लाई गई, तब सम्राट् तथा आर्य यौगंधरायण की कूट-नीति समझकर मुझे क्रोध हो आया, और मैंने मणिभद्र के आधिपत्य में कुछ लोग उसे उड़ा लाने के लिये दो-चार नौकाओं-सहित भेजे। यह प्रयास हो असफल गया, और उन्होंने कोई कहा-सुनी अथवा लिखा-पढ़ी भी न कराई।

महामंत्री—बात हुई तो बहुत अनुचित। मंत्रिमंडल की भी सम्मति न ली गई। क्या वहाँ समाचार ज्ञात हो गया?

महाराजा—मैं लालसा तथा ईर्ष्या के कारण उस काल ऐसा विवश हो गया था कि मुझसे रहा न गया। तो भी कार्य ऐसी सावधानी से युक्ति-पूर्वक किया गया कि शत्रुओं पर कुछ प्रकट न हो सका। न तो नौकाओं से यहाँ का कुछ पता मिल सकता था, न भेजे हुए सैनिकों से। उन्हें संदेह-मात्र रहा होगा।

सांधिविग्रहिक—नरेश लोग इंद्रिय-लोलुपता कर प्रायः बैठते हैं, किंतु स्वराज्य के भीतर ऐसी बातों से विशेष कष्ट नहीं होता। तो भी दो-दो प्रचंड शक्तियों से केवल ऐसी बातों से शत्रुता मोल लेने की बात पर क्या कहा जाय?

महाराजा—यों तो अपने राज्य में भी ऐसी बातों से विषम

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



फल हो सकते हैं। स्वयं मैथिल साम्राज्य सम्राट् करालजनक की किसी ब्राह्मण-कन्या से इंद्रिय-लोलुपता के ही कारण गिरा था। इतना अनौचित्य मुझसे अब तो हो ही गया, किंतु वह प्रकट नहीं हुआ है, और संदेह-गर्भित कथनों का यहाँ से तर्क-पूर्ण उत्तर दिया जा सकता है।

महादंडनायक—अब तो ऐसा करना ही होगा।

महाराजा—( सांधिविग्रहिक से ) आर्य! उनके प्राभृतक का भाव क्या है? क्या-क्या बातें कहते हैं?

सांधिविग्रहिक—एक तो मागध राजकुमारी-संबंधी दुर्व्यवहार का कथन करते हैं, और यह भी कहते हैं कि राष्ट्रीय-मात्र होकर इस कुटुंब को स्वतंत्र भूपाल बनने का कोई अधिकार न तब था, और न अब है।

महामंत्री—इस कथन के तार्किक उत्तर तो लूले-लँगड़े दिए ही जा सकते हैं, तथापि युद्ध सामने दिख ही रहा है। इसी का प्रबंध सोचने की आवश्यकता है।

सांधिविग्रहिक—मेरा मत है कि तार्किक वादानुवाद के पीछे विचार करने को एक मास का समय माँगा जाय, तथा इतने दिनों में अपनी मित्र शक्तियों से सहायता लेने का प्रयत्न हो, अथच अपना सैन्य बल भी दृढ़ किया जाय।

महाराजा—यही तो दिखता है। अपने मित्र तो राजमंडल में कई हैं, किंतु साधारणी मैत्री ऐसे समयों पर काम नहीं आती।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



सांधिविग्रहिक—यही तो बात है, देव! अपने मुख्य सहायक उज्जयिनी-नरेश और कोशलेश हैं। उनमें भी उनसे संबंध के कारण उज्जयिनी से तो कुछ कहना अनावश्यक है, हाँ, कोशलेश विरूधक से सहायता की दृढ़ आशा हो सकती है।

महाराजा—यही मुझे भी समझ पड़ता है। मेरी समझ में आर्य महामंत्री स्वयं श्रावस्ती जायँ। राजकोष तो संपन्न है ही।

अक्षपटलाधिकृत—कोष संपन्न है, देव! और तो कोई मत-परिवर्तन शेष है नहीं। मेरी समझ में कौशांबी के सांधिविग्रहिक बुला न लिए जायँ; बाहर प्रस्तुत हैं। महामंत्रीजी का श्रावस्ती जाना आवश्यक है ही।

महाराजा—यही बात है, आर्य!

अनंतर महामंत्री की आज्ञा से परिचारक बाहर जाकर कौशांबी के पर-राष्ट्र-सचिव को मान-पूर्वक भेजता है। पाँचों मंत्री अभ्युत्थान देते हैं, और महाराजा को प्रणाम करके कौशांबी के सांधिविग्रहिक आदर-पूर्वक यथास्थान बैठते हैं।

सांधिविग्रहिक—मंत्री महोदय! आशा है, आपको यहाँ पधारने में मार्ग में कोई कष्ट न हुआ होगा, तथा यहाँ पूर्ण सुपास होगा।

कौशांबी के सांधिविग्रहिक—आर्य! मैं बड़े सुख-पूर्वक पहुँचा, तथा देव की कृपा से यहाँ बहुत ही योग्य प्रबंध है। सुपास में कोई कमी नहीं है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



महाराजा—आशा है, सम्राट् महोदय सकुशल, स्वस्थ और प्रसन्न होंगे।

कौशांबी के सांधिविग्रहिक—देव की कृपा से वहाँ सब कुशल-मंगल है। आशा है, यहाँ भी राजकुटुंब, मंत्रिमंडल तथा पौर जानपदादि सकुशल होंगे।

महामंत्री—देव की कृपा से यहाँ भी सब चैनचान है। अब आर्य अपना प्राभृतक उपस्थित कर सकते हैं। उसकी प्रतिलिपि, जो आपने आर्य सांधिविग्रहिक को दी थी, देव ने भी देख ली है।

कौशांबी के सांधिविग्रहिक पांचालीय सांधिविग्रहिक को प्राभृतक देते हैं, तथा साम्राज्य की ओर से नज़र तथा अपनी ओर से नज़र-निछावर सामने रखते हैं, जो स्वीकृत होती है।

महामंत्री—आर्य ! आप जो यह प्राभृतक लाए हैं, वह बहुत कुछ अनोखा सा है। पहले तो मागध राजकुमारी के हरण-संबंधी इसमें निराधार कथन हैं। हम लोग आरंभ में उसी पर कथनोपकथन चाहते हैं।

कौशांबी के सांधिविग्रहिक—यह तो हमारे यहाँ का अनुमान-मात्र है, जो घटना-चक्र पर निष्पक्ष विचार करने से न केवल कौशांबी-पति को, वरन् मगधेश को भी ठीक जँचता था। फिर भी इसके समर्थन में कोई साक्षी हमारे पास नहीं है। जो तीन-चार लोग पकड़े गए थे, उनका कोई पता न लगा, न उन्होंने अपना परिचय बतलाया।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



महादंडनायक—साक्षी-शून्य केवल अनुमान-गर्भित निराधार कथन किसी नरेश को शोभा नहीं देता, विशेषतया जब एक मित्र राष्ट्र पर अनावश्यक रित्या दोषारोपण हो रहा हो। ऐसे कथन का इस राज्य से उत्तर क्या दिया जा सकता है? केवल नकारात्मक कथन से आपको संतोष होगा नहीं, और प्रमाणित करने का आपके पास दृढ़ साधन है नहीं।

कौशांबी के सांधिविग्रहिक—जब महादंडनायक होकर आप इसे स्वीकार नहीं करते, न मंत्रिमंडल या देव मान रहे हैं, तो अब इसका कथन ही छोड़ दिया जाय। मुख्य विषय तो द्वितीय है।

महामंत्री—उसमें भी हम लोगों को कोई मुख्यता नहीं देख पड़ती। इतना निर्विवाद है ही कि हमारे श्रीमान् के पूज्य पिता चालीस-पचास साल हुए, जब कौशांबी के राष्ट्रीय थे ही, किंतु इतने विशाल समय से जब हमारा स्वतंत्र राज्य चला आता है, और कौशांबी की ओर से कोई कहा-सुनी तक न हुई, तब इतने दिनों के पीछे अपना प्राचीन मूर्च्छित क्या मृत अधिकार पुनर्जीवित करने का उपक्रम क्या उपहासास्पद नहीं है? प्रायः ढाई-तीन सौ वर्ष हुए, जब हस्तिनापुराधीश सम्राट् निचक्षु अपनी राजधानी छोड़कर कौशांबी में स्थापित हुए, तब पांचाल और सृंजय नरेशों ने सुखपूर्वक अपने-अपने राज्य उन्हें समर्पित करके एक महान् साम्राज्य कौशांबी में स्थापित किया। किसी विजयादि का

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



प्रश्न तो था नहीं। पूर्ण प्रसन्नता अथच सौहार्द से तत्कालीन पांचाल-नरेश ने अपना राज्याधिकार छोड़ा था। हमारे वर्तमान महाराजा उन्हीं के वंशधर हैं हो। इतने दिनों तक राज्य छोड़े रहकर हम लोगों ने बिना लड़े-भिड़े यदि अपना प्राचीन अधिकार फिर से शांति-पूर्वक प्राप्त कर लिया है, तो कौशांबी को एतदर्थ युद्धोन्मुख होने का कौन-सा प्राकृतिक अधिकार है? कहते ही हैं कि गृहीता का एक ही धर्म माँगने का है, तथा दाता के तीन धर्म हैं, अर्थात् देना, न देना या देकर ले लेना। यदि हमने तृतीय धर्म का व्यवहार किया, तो आपको क्या उपद्रव समझ पड़ता है? फिर भी तो दीर्घ काल-पर्यंत हमारे राज्य का उपभोग कौशांबी कर चुकी है।

महाराजा—अब हमारी प्रार्थना यह है कि सम्राट् उदयन को इसमें कोई क्रोध न करना चाहिए, वरन् शांति पूर्वक हमसे मित्र-भाव स्थापित रखना योग्य है। यदि कभी आपके ऊपर कोई संकट आ पड़े, तो प्राचीन मित्रता के कारण यह राज्य पूर्ण सहायता देने को प्रस्तुत रहेगा। निष्कारण बैठे-बिठलाए युद्ध खड़ा करके लाखों भारतीयों का अमंगल उपस्थित करना कौन-सी बुद्धिमत्ता है? यदि हमारे मित्र-भाव में कोई संदेह हो, तो जिस प्रकार सम्राट् चाहें, हम लोग शंका-निवारण को उपस्थित हैं। अभी यहाँ से कोई निश्चित उत्तर नहीं दिया जा रहा है, वरन् केवल मित्र-भाव से शांति-भंग की अनावश्यकता पर प्रेम-पूर्ण कथन होता है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



कौशांबी के सांधिविग्रहिक—मुझे तो ऐसा समझ पड़ता है कि सम्राट् निचक्षु के समय की वार्ता केवल इतिहास है, वर्तमान राजनीति नहीं। पांचाल-पति के पिता जब हमारे यहाँ के राष्ट्रीय-मात्र थे, तब उनका राज्य ही दबा बैठना किसी प्रकार उचित व्यवहार नहीं माना जा सकता। यदि हम लोगों ने अपनी शक्ति कुछ काल ऐसी दृढ़ न पाई कि पांचालीय स्वामिविद्रोह का उचित उपचार करते, तो भी हमारा न्याय-पूर्ण राज्याधिकार लुप्त नहीं हो गया। अब कौशांबी का साम्राज्य अपने को एक बार फिर से सबल पाता है। ऐसी दशा में पांचालीय शक्ति को स्वामिविद्रोह के प्राचीन पातक से हाथ धो डालना चाहिए। यदि पांचाल हमारा राज्य शांति-पूर्वक पलटाने को प्रस्तुत हो, तो यहाँ की नहीं, तो किसी अन्य प्रांत की राष्ट्रीयता देने का फिर से विचार हो सकता है; किंतु यदि वर्तमान महाराजा यहाँ अपना राज्य ही स्थापित रखना चाहें, तो युद्ध बना-बनाया दिखता है। इस गहन विषय पर कौशांबी का यही अंतिम विचार है।

सांधिविग्रहिक—जब आर्य! आपने कौशांबी की ओर से दृढ़ निर्णय प्रकट कर दिया है, तब आगे तर्क चलाने की आवश्यकता तो रहती नहीं, तो भी कहना पड़ता है कि यहाँ से अभी कोई अंतिम निर्णय नहीं हुआ है। यह राज्य इस गहन प्रश्न के संबंध में निश्चय पर पहुँचने के लिये कुछ विचार करने के लिये समय चाहता है। अभी एकाएकी कोई निश्चय

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



उत्तर नहीं दिया जा सकता। इस प्रश्न पर कौशांबी का क्या विचार है ? यहाँ से एक मास का समय माँगा जाता है।

कौशांबी के सांधिविग्रहिक—है तो एक मास बहुत, किंतु मुझे इस विषय पर साम्राज्य का निर्णय अज्ञात है। इसका उत्तर वहीं से भेजा जा सकता है। एक मास में भी यदि यहाँ से हमारा प्रस्ताव स्वीकृत न हुआ, तो अस्वीकृत मानकर युद्धारंभ कर दिया जायगा।

महामंत्री—यह कथन उचित है। एक मास में यहाँ से अंतिम निर्णय हो जायगा।

इस प्रकार वार्तालाप के पीछे कौशांबी के सांधिविग्रहिक महोदय महाराजा को प्रणाम करके अपने डेरे को चले गए। वहीं पांचालीय सांधिविग्रहिक ने जाकर उन्हें प्राभृतक दिया, तथा सम्राट् के निमित्त उचित नजर एवं सांधिविग्रहिक को २१ कपड़ों का सरोपाव, ५०० निष्क बिदाई तथा एक अच्छा घोड़ा मिला। उनके पलटने का भी प्रबंध कर दिया गया, और वह कौशांबी को प्रस्थित हो गए। जाने के पूर्व अपने अनुयायियों द्वारा गुप्त पता लगाने से उन्हें ज्ञात हो गया था कि पांचाल द्वारा कोशल से सहायता मिलने का प्रयत्न होने को था। इसकी दृढ़ आशा भी थी। इधर तो सांधिविग्रहिक महोदय ने कौशांबी पलटकर पांचाल का पूरा विवरण बताया, तथा युद्ध को प्रायः अवश्यंभावी कहा। फिर भी युद्धार्थ तैयारी में कम-से-कम एक मास लगने को था ही, सो इतना समय

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



देने में कोई हानि न समझी गई, तथा इसकी स्वीकृति का समाचार पांचाल भेज दिया गया। उधर पांचालीय महामंत्री नियम-पूर्वक श्रावस्ती जाकर चुने हुए मंत्रियों की सभा में श्रीमान् से मिले। उन्होंने कोशल और पांचाल की प्राचीन काल से चलती हुई मित्रता पर ज़ोर देकर कोशलीय सहायता की माँग इस गाढ़े अवसर के लिये की, जो वहाँ से प्रेम-पूर्वक स्वीकार हुई। इधर कौशांबी के चर गुप्त रूप से श्रावस्ती और पांचाल जा चुके थे, जिनके द्वारा पांचालीय महामंत्री के श्रावस्ती जाने तथा सफल होने के समाचार महामंत्री यौगंधरायण को मिले। यह भी विदित हुआ कि दस-पंद्रह दिनों के भीतर श्रावस्ती की सेना पांचाल के लिये प्रस्थित हो जाने को थी। उधर मागधी सेना युद्ध निश्चित समझकर कौशांबी पहुँच ही चुकी थी। अतएव महामंत्री ने एक प्रचंड दल मार्गावरोध के लिये लगा दिया, तथा पूर्व और पश्चिम दोनों ओर से श्रावस्ती पर आक्रमण कर दिया। ऐसी शीघ्रता-पूर्ण तत्परता से श्रावस्ती-पति अचंभे में आ गए। इतने शीघ्र होनेवाले युद्धार्थ वह तैयार तो थे नहीं, अतएव उनकी पांचाल जानेवाली सेना बिना उस राज्य की सहायता पाए मार्ग ही में पराजित हो गई, तथा श्रावस्ती में भी दो ओर से घिर जाने से घोर संकट उपस्थित हुआ। दो-तीन साधारण युद्धों में पराजित होकर कोशलेश हतप्रभ विरूधक ने कौशांबी से संधि की प्रार्थना की, जो इस नियम पर स्वीकार हुई कि

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



श्रावस्ती न तो पांचाल की कभी सहायता करे, न संकट भी उपस्थित होने पर काशी की। कौशांबी और मगध से उसे सदा मित्र-भाव भी रखना निश्चित हुआ। ये नियम थे, विरुधक के लिये मानहारी और भारी हानिकर, किंतु विवश होकर अपना ही राज्य बचाने को उसे मानने पड़े।

इतने दिनों में समय एक मास से अधिक बीत गया था, और पांचाल से अस्वीकृति का उत्तर भी आ चुका था, अतः कोशलवाले युद्ध से निपटकर वह सेना महासेनापति रुमरावान की अध्यक्षता में पांचाल की ओर प्रस्थित हुई। उत्तर-पूर्व से यह सेना चली, तब पूर्व से कौशांबी में स्थित और भी भारी दल पांचाल के निकट पहुँचा। दोनो ओर से पांचाल दबाया गया। वह राज्य भी इतने दिनों में युद्धार्थ पूर्णतया सन्नद्ध हो चुका था। अतएव दोनो राज्यों में डटकर परम प्रचंड संग्राम होने लगा। मगध और कौशांबी की सेना मिलकर जाने से महती थी। उधर पांचाल को श्रावस्ती की सहायता मिल न सकी। इसलिये पांचालीय महासेनापति ने बाहर निकलकर युद्ध चलाना योग्य न समझकर गढ़ों, नदियों, तालाबों आदि के सहारे रक्षिका सेनाएँ लगा-लगाकर स्वयं धावे न करके शत्रुओं के आक्रमण रोकने-भर के प्रयत्न किए। इस कारण युद्ध-क्षेत्रों में तो संग्राम कम हुए, अथच सैनिक चालों का विशेष प्रयोग हुआ। समय पर राजधानी सब ओर से घिर गई, तथा शेष सारे

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



पांचाल देश पर कौशांबी का अधिकार हो गया। बड़े ही प्रचंड संकट का सामना था। महासेनापति तथा इतर युद्ध-कर्ताओं के अतिरिक्त मणिभद्र भी संग्राम में युक्तियाँ खेल रहा था। प्रायः छ मास-पर्यंत युद्ध होता रहा। पांचालीय सेना बहुत कुछ दबकर भी पराजित न हो सकी थी, तथा राज-धानी पर अनंतवीर्य का अधिकार बना हुआ था।

एक दिन जब महासेनापति रुमण्वान अपने डेरे पर विराजमान थे, तब उनके पास समाचार पहुँचा कि उनसे मातृवंशी एक स्वजन मिलना चाहते थे। वह सुकवि और ज्योतिषी भी कहे गए थे। सामरिक नियमानुसार झारा लिया जाने पर महासेनापति की आज्ञा से जब वह बुलाए गए, तो रुमण्वान को महदाश्चर्य हुआ। यों बातें हुईं—

रुमण्वान—कहिए, महाशय मणिभद्रजी! आपका शुभ नाम मुझे स्मरण नहीं आता, न इस नाम का कोई मातृवंशी मेरा स्वजन ही है। आप वास्तव में हैं कौन, और मुझसे चाहते क्या हैं?

मणिभद्र—आर्य! मैं स्वजन तो हूँ नहीं, किंतु स्वजनों से बढ़कर आपका हित-साधन चाहता हूँ। हूँ तो पांचाल-पति का गुप्तचर और उन्हीं की ओर से कृपा की भिक्षा माँगने को उपस्थित हूँ।

रुमण्वान—इसके संबंध में आपको महामंत्री महोदय की सेवा में जाना चाहिए था। मैं तो महासेनापति-मात्र होकर

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



युद्धार्थ प्रबंध करता हूँ, राजनीतिक विषयों का निर्णय नहीं।

मणिभद्र—यह तो ठीक है, किंतु हमारे महाराज को उनसे विशेष आशा नहीं है। एक बार मगध में उन्होंने हृदय-हीन उत्तर स्वयं हमारे महाराज को दिया था।

रुमण्वान—अधिकार निर्णय का तो उन्हीं को है।

मणिभद्र—अधिकार तो सम्राट् तथा मंत्रिमंडल को है। उसके सदस्य आप भी हैं।

रुमण्वान—अच्छा, कहिए, आपकी इच्छा क्या है?

मणिभद्र—कौशांबी का यह अनावश्यक संग्राम योग्य नहीं है, तथापि कितना भी समझाएँ, आपको तर्क-मात्र से संतुष्ट नहीं कर सकते। अब तो कृपा की भिक्षा माँगने आया हूँ।

रुमण्वान—माँगने से भला कहीं राज्य मिल सकता है? आप भी क्या बातें करते हैं? किसी प्रांत का राष्ट्रीय बनाने की बात पहले ही कही जा चुकी थी। इससे विशेष क्या संभव है?

मणिभद्र—यदि आपके प्रयत्न से पांचाल का काम बन जाय, तो राज्य का चतुर्थांश भाग तक आपको अर्पित हो सकता है।

रुमण्वान—यही बात तो आपके महाराजा ने राजकुमारी पद्मावतीवाले विवाह के संबंध में महामंत्री महोदय से कही थी, जिसका उन्होंने घृणा-पूर्वक तिरस्कार कर दिया था।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



संभवतः इसीलिये आज आप उनकी सेवा में उपस्थित न होकर मेरे पास पधारे हैं। समझ लीजिए, महोदय ! कौशांबी का कोई मंत्री उत्कोच लेकर साम्राज्य का हित-ध्वंसन न करेगा। अब आपको सिधारने की कृपा करनी चाहिए।

मणिभद्र—क्या महासेनापति महोदय को मेरी धृष्टता पर क्रोध आ गया है ?

रुमण्वान—क्रोध तो किसी को करना न चाहिए, किंतु बात आपने वैसी ही कही है।

मणिभद्र—अच्छा, यदि हम लोग संधि करनी चाहें, तो राज्य का कितना अंश लेकर कौशांबी शेष भाग हमारे लिये छोड़ सकती है ?

रुमण्वान—इसका लालच छोड़ दीजिए। समझ लीजिए, "वीरभोग्या वसुंधरा" की बात है।

मणिभद्र—तब क्या पांचाल पर कोई भी कृपा नहीं हो सकती ? क्या आधा राज्य लेकर आप लोग प्रसन्न हो सकते हैं ?

रुमण्वान—राज्य आपका था कब ? उसके पकड़ने के लोभ में शरीर-पर्यंत स्वाहा हो जायगा, ऐसा समझ लीजिए।

मणिभद्र—राज्य-हीन शरीर रखने से लाभ ही क्या है ?

रुमण्वान—यह प्रश्न पांचाल-पति के विचाराधीन है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



मैं तो समझता हूँ कि उपरिक, राष्ट्रीय आदि तो बड़े पद हैं, हम-आप राज्यों के तुच्छ सेवक होकर भी परम प्रसन्न रहते हैं।

मणिभद्र—जो व्यक्ति युवराज होकर उत्पन्न ही हुआ हो, वह ऐसे पदों से प्रसन्न नहीं रह सकता। ऐसा परम स्वाभाविक है।

रुमण्वान—वह यौवराज्य का पद वास्तविक न होकर अस्थिर-मात्र था। उसके आधार पर आपके स्वामी ने इतने दिन राज्य भी कर लिया। अब भविष्य में परम बृद्धिमती लालसा रखने से अमंगल संभव है।

मणिभद्र—इतना तो एक अंध भी देख लेगा, किंतु इससे संतोष दुस्तर है।

रुमण्वान—दुःख है कि मेरे द्वारा राष्ट्रीयता से बढ़कर और किसी पद का निबंध असंभव है। एक बात आपसे भी क्या कहूँ?

मणिभद्र—क्या इसके भी पूछने की आवश्यकता है? आज्ञा हो जाय।

रुमण्वान—आपको समझना चाहिए कि पांचाल-राज्य अब गया-आया हो चुका है। क्या आपको भी उचित नहीं है कि ऐसी डूबती हुई नाव को छोड़कर पुष्ट पृथ्वी का आश्रय लें?

मणिभद्र—कुछ स्पष्टतर आज्ञा क्या हो सकती है?

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



रुमण्वान—मेरा प्रयोजन यह है कि आपके द्वारा हमें पांचालीय राजधानी जीतने की यदि कोई सुगम युक्ति ज्ञात हो जाय, तो कौशांबी के साम्राज्य में आपका भी पद उचित से बढ़कर हो सकता है।

मणिभद्र—मेरी ऐसी ही प्रार्थना पर तो आपकी अप्रसन्नता तक हो गई थी ; क्या मुझे आप ऐसा नीच समझते हैं कि अपने ही स्वामी की हित-हानि करूँ ? मणिभद्र के नाम ही में भद्रत्व लगा हुआ है। आपने, आर्य ! मेरा प्रचंड अपमान किया है।

रुमण्वान—समझ लीजिए, मित्रवर ! जीतना तो हमको है ही, अपना भी काम बना लीजिए।

मणिभद्र—ऐसी शिक्षा एक धर्मज्ञ महासेनापति तथा राजमंत्री के लिये अशोभन है। एक राज्य भी पाकर मणिभद्र स्वामिविद्रोह-सा गर्हित पाप नहीं कर सकता।

रुमण्वान—फिर मुझी से ऐसा ही कार्य क्यों चाहते थे ?

मणिभद्र—आपसे तो कृपा की भिक्षा माँगता था, स्वामिद्रोह की नहीं।

रुमण्वान—बातें दोनो न्यूनाधिक एक ही हैं। अच्छा, अब यह वार्तालाप समाप्त होना चाहिए।

मणिभद्र—तब फिर मैं प्रणाम करके बिदा माँगता हूँ।

इस प्रकार विचार-विनिमय करके मणिभद्र महोदय

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



वहाँ से चलते बने। युद्ध पहले ही सा होता रहा। अंत में विशेष सामरिक प्रयत्न करके कौशांबी की सेना ने राजधानी पर भी अधिकार कर लिया, तथा महाराजा अनंतवीर्य बंदी होकर सम्राट् के सामने उपस्थित किए गए। दरबार लगा, और उसमें अनंतवीर्य का मामला हाथ में लिया गया। उनसे पूछा गया कि उन्हें कोई प्रार्थना तो नहीं करनी थी।

अनंतवीर्य—प्रार्थना करने का न तो मुझे अधिकार है न इच्छा। फिर भी एक इच्छा है कि यदि साहस हो, तो सम्राट् मेरे सम्मुख खड्ग-युद्ध में आ जायँ। मैं और कोई प्रार्थना नहीं करता।

महामंत्री—राष्ट्रीय महोदय! युद्ध करना तो सेना तथा सेनापतियों का काम है, न कि सम्राट् का।

सम्राट्—है तो यही बात, किंतु जब पांचाल-पति ने प्रार्थना के रूप में मुझसे आत्मीय युद्ध की भिक्षा माँगी है, तब मैं भी इससे विरत नहीं हो सकता। (अनंतवीर्य से) अच्छा, वीरवर! अब उठाइए खड्ग-चर्म।

यौगंधरायण—सम्राट्-प्रवर! विना मंत्रिमंडल की सम्मति के आपका ऐसे साहस-पूर्ण कार्य में लगना क्या नियमानुकूल है?

सम्राट्—विजय तो कौशांबी को मिल ही चुकी है। मैं सम्राट् के रूप में युद्ध-क्षेत्र में न उतरकर आत्मीय रूप में

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



जाता हूँ। आपके साम्राज्य को युवराज प्राप्त है ही। मेरा अस्तित्व उसके लिये आवश्यक नहीं है। ( अनंतवीर्य से ) वीरवर ! उठाइए खड्ग-चर्म ; मैं इसी समय सन्नद्ध हूँ।

इस प्रकार वार्तालाप होकर दोनो वीर ढाल-तलवार पकड़-कर युद्ध-क्षेत्र में उतरते हैं। प्रायः डेढ़ घड़ी-पर्यंत प्रचंड युद्ध होकर अंत में क्षत-विक्षत हो अनंतवीर्य धराशायी होता है। यौगंधरायण तथा रुमण्वान हर्ष-गद्गद होकर धन्य-धन्य कहते हुए सम्राट् को हृदय से लगाते हैं। मणिभद्र की प्रवीणता तथा स्वामिभक्ति से प्रसन्न होकर रुमण्वान की सम्मति से सम्राट् की आज्ञा लेकर महामंत्री उसे चर-विभाग में उच्च पद पर स्थापित करते हैं, तथा पांचालीय मंत्रिमंडल अथच इतर कार्यकर्ताओं में से सुयोग्य व्यक्ति साम्राज्य के यथायोग्य पदों पर प्रतिष्ठित किए जाते हैं।

---

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# त्रयोदश परिच्छेद

## विजय-यात्राएँ

काशी का राज्य परम प्राचीन काल से स्थापित था, किंतु कभी-कभी इतरों के अधिकार में भी चला जाता था। महाराजा दर्शक के पितामह बिंबिसार के समय में काशी-राज्य का अनस्तित्व हो गया था, और वह कोशल की अधीनता में था। मगधाधीश के दो विवाह हुए थे, एक तो कोशल-राजकुमारी से और दूसरा लिच्छवि राजकन्या से, जिससे पुत्र अजातशत्रु का जन्म हुआ था। जब अजातशत्रु युवराज हुआ, तब इसे राज्य के बहुतेरे अधिकार मिले। जो थोड़े-से अधिकार वृद्ध महाराज ने स्ववश रक्खे थे, वे भी अजातशत्रु सह न सका, और महात्मा गौतम बुद्ध के शत्रु शिष्य देवदत्त की सलाह से अपने पिता को उसने कारागार में डाल दिया। विवाह के समय महाराज बिंबिसार को काशी का प्रांत दायज में मिला था। जब अजातशत्रु ने स्वपिता को कारागार में डाला, तब कोशलेश ने अपना काशी का प्रांत वापस माँगा, और मगध के उसे न फेरने पर युद्ध हुआ। तब तक बिंबिसार का स्वर्ग-वास हो चुका था। युद्ध में कोशलेश ने अजातशत्रु को पकड़-कर कारागार में डाला, किंतु जब उसकी कन्या ने अजातशत्रु

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



से विवाह करना चाहा, तब उस( कोशलेश )ने मगधेश को मुक्त करके यह विवाह कर दिया, और काशी का राज्य दायज में फिर से दे दिया।

समय पर काशी-राज्य मगध और कोशल दोनो से स्वतंत्र हो गया। काशी के प्रत्येक राजा की इन दिनों ब्रह्मदत्त उपाधि रहती थी। वही वर्तमान भूपाल की भी थी। महामंत्री का नाम योगकरंडक था। जब पांचाल जीतने में मगध ने कौशांबी की सफल सहायता की, तब महाराजा दर्शक ने भी काशी पर अपना पैतृक अधिकार जगाना चाहा। योग-करंडक बड़ा ही कूट-नीतिज्ञ महामंत्री था। उसने बहुतेरी विष-कन्याएँ अपनी अधीनता में प्रस्तुत कर रक्खी थीं। ऐसी कन्याओं की शक्ति वास्तविक थी अथवा काल्पनिक, सो कहना कठिन है, किंतु प्राचीन विचार ऐसा है कि सुंदरी कन्याएँ इसके लिये चुनी जाती थीं, और विविध वैद्यकीय एवं इतर उपचारों से उनका सौंदर्य बढ़ाया जाता था। इसका प्रयोग यों कहा जाता है कि बाल-वय से ही उन्हें थोड़ी-थोड़ी मात्रा में विष खिलाया जाने लगता था। यह मात्रा समय के साथ बढ़ाई जाती रहती थी। कहा यहाँ तक जाता था कि समय पर इन कन्याओं के रुधिर में विष की मात्रा इतनी बढ़ जाती थी कि यदि कोई साँप इनमें से किसी को काटे, तो विष-कन्या तो मरती न थी, उलटे साँप ही मर जाता था। प्रयोजन यह निकाला जाता था कि ऐसी कन्याओं के रुधिर

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



में विष सर्पों से भी विशेष हो जाता था। जो पुरुष ऐसी किसी कन्या से सहवास करता था, वह तुरंत मर जाता था। ऐसी एक विष-कन्या का कथन चंद्रगुप्त मौर्य की कथा में भी आया है। कहा जाता है कि महामंत्री योगकरंडक ने ऐसी बहुतेरी विष-कन्याओं को अपने गुप्त राजकीय विभाग में प्रस्तुत कर रक्खा था। इन्हीं के प्रयोग से वह शत्रु-पक्ष के नरेशों, सेनापतियों आदि का अमंगल कर देता था। इसी प्रकार शत्रु-पक्ष की सेनाओं के लिये भोज्य पदार्थों में युक्ति-पूर्वक विष का मिश्रण गुप्तरूपेण कराकर उनके भोजनार्थ प्रस्तुत कराता था। इन दोनो अनीति-पूर्ण युक्तियों से वह विना आधिक्य से लड़े ही शत्रु-पक्ष की सेनाओं को पराजित कर देता था।

जब मगधेश दर्शक ने काशी को फिर से प्राप्त करना चाहा, तब सम्राट् तथा महामंत्री से पहले परामर्श हुआ, और तब दोनो राज्यों के मंत्रिमंडलों में यह प्रश्न उपस्थित किया जाकर नियमानुसार निर्णीत हो गया। अनंतर जैसे पांचाल-राज्य को कौशांबी का पर-राष्ट्र-सचिव ( सांधिविग्रहिक ) गया था, वैसे ही काशिराज के दरबार में मागध पर-राष्ट्र-सचिव नियमानुसार उपस्थित हुआ। उसी के साथ कौशांबी से मणिभद्र कई गुप्तचरों को लेकर गया। उसने साम्राज्य में राजपुत्री पद्मावती के हरण का अपना प्रयत्न पहले ही प्रकट करके क्षमा प्राप्त कर ली थी, और इसके पीछे वहाँ की सेवा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



स्वीकार की थी। दोनो राज्यों के पर-राष्ट्र-सचिवों में तर्क-पूर्ण वादानुवाद देर तक होता रहा, किंतु कुछ भी निर्णीत न हो सका। उधर मणिभद्र ने वहीं के एक राजकीय व्यक्ति को साम, दाम, भय, दंड आदि के प्रयोगों से साध लिया। उसे भली भाँति समझा दिया गया कि मगध और कौशांबी की मिलित शक्ति का सामना काशी न कर सकेगी। उस राज-पुरुष ने शत्रु-पक्ष से मिलने के पूर्व महाराजा तथा महामंत्री को बहुत समझाया था, किंतु अपनी कूट-नीति के बल पर महामंत्री ने स्वामी को राज्य-समर्पण करने का मंत्र न दिया था। अंत में राज्य-हानि के प्रश्न को निश्चित समझकर यह राजपुरुष मणिभद्र द्वारा गुप्तरीत्या कौशांबी से मिल गया, और इसके द्वारा वहाँ की विष-कन्याओं तथा विष-मिश्रित भोज्य पदार्थों का पूरा विवरण महामंत्री यौगंधरायण को युद्धारंभ से कुछ ही पूर्व ज्ञात हो गया।

समय पर पूर्व और पश्चिम दोनो ओर से कौशांबी और मगध की सेनाओं ने काशी-राज्य पर आक्रमण किया। महा-मंत्री योगकरंडक ने अपनी पूर्ण कूट-नीति का प्रयोग सेनाओं पर किया। इस युद्ध में सम्राट् उदयन तथा महाराजा मग-धेश दर्शक स्वयं युद्धार्थ न पधारे थे, वरन् इन दोनो की आक्रमणकारी सेनाएँ महामंत्री यौगंधरायण के निरीक्षण में दोनो राज्यों के महासेनापतियों की अधीनता में गई थीं। जब तक विष-कन्याओं का पूरा विवरण महासेनापतियों

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



को ज्ञात हो, तब एक दिन रुमएवान सेना से कुछ ही आगे निकलकर सैर करने लगे। एक बड़ा ही सुंदर उपवन था, जिसके वट-वृक्ष में झूला पड़ा था, तथा दो-तीन सखियों के साथ एक राजकुमारी-सी उस पर स्थित थी। सखियाँ उत्कृष्ट वाद्यों के सहारे कोकिल-कंठ की-सी ध्वनि से सुंदर गान में निरत थीं। वह झूले पर की सुंदरी धीरे-धीरे झूल रही थी, तथा गान में भी योग देती जाती थी। नंदनवन का-सा सामान था। द्रष्टाओं का मन हर लेने के सारे साधन उपस्थित थे। महासेनापति रुमएवान उस वन को देखकर बहुत प्रसन्न हुए। वृक्षों पर लताएँ चढ़ी हुई फूलों से लदी थीं। पुष्करिणी में अच्छे-अच्छे कमल फूले थे, जिन पर भ्रमर गुंजार कर रहे थे। शीतल, मंद, सुगंध-युक्त समीरण चलकर चित्त प्रसन्न कर रहा था। यह सब देखते हुए परम प्रसन्न होकर महासेनापति झूलनेवाली की ओर बढ़े। इन्हें देखते ही सारी सखियाँ गान-वाद्य का उपक्रम छोड़कर वहाँ से चल दीं, तथा एकाकिनी झूलनेवाली रह गई। रुमएवान के हाथ में सुंदर फूलों का एक स्तबक था, जो इन्होंने उस रूप-राशि को अर्पित किया। वह चंचल नेत्रों को नचाती हुई इनके निकट आकर वार्तालाप में संलग्न हुई।

झूलनेवाली—देव ! आज कहाँ से आपका शुभागमन मेरे उपवन में हो गया है ? कामदेव को भी मोहित करनेवाला यह परम सुंदर रूप देखकर मैं अत्यंत मुग्ध हुई हूँ। कहिए,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



आपकी क्या सेवा कर सकती हूँ ? दो-तीन वर्षों से इसी उपवन में रहकर तपस्या-सी करती आई हूँ। उसी का फल-स्वरूप-सा आपका दर्शन प्राप्त हुआ है।

रुमएवान—बाले ! आपके रूप-लावण्य पर सहस्र रति निछावर हो सकती हैं। इस परम शोभायमान उपवन में आप क्या किया करती हैं ? क्या मेरे ऊपर भी कृपा-कटाक्ष का निक्षेप संभव है ?

झूलनेवाली—यह उपवन मेरे पूज्य पिता ने मेरे विहारार्थ बनवाया था। दो-तीन वर्षों से इसकी शोभा पर चित्त ऐसा मोहित हो रहा है कि यहाँ से हटने की इच्छा नहीं होती। अब तक आपके समान किसी काम-विनिंदक नवयुवक के दर्शन नहीं हुए थे। अहोभाग्य कि आज ऐसा अवसर भी प्राप्त हो गया है। क्या मेरा ऐसा भाग्य है कि आपका चिरकालीन दर्शन प्राप्त होता रहे ? मेरे पूज्य पिता मुझे प्रसन्न करने को कई नवयुवक समय-समय पर विवाहार्थ लाए, किंतु मुझे उनमें से कोई भी पसंद न आया। अब सोचती हूँ कि मैंने उन्हें उलटा फेर देने में अच्छा ही किया, नहीं तो आपका-सा मन-मोहक साथी कहाँ से मिलता ?

रुमएवान—धन्य भाग्य, बाले ! दीर्घ काल-पर्यंत तो मैं इन दिनों रह सकता नहीं, किंतु एकआध दिन सेवा कर सकता हूँ। फिर आपको अपने स्वामी की राजधानी में ले

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



जाकर चरण-सेवा में रत रहूँगा। मैं ब्राह्मण-कुमार हूँ। आशा है, आप भी कोई द्विज-पुत्री होंगी।

झूलनेवाली—मेरे पूज्य पिता क्षत्रिय हैं, और नियमानुसार मेरा विवाह आपसे हो सकता है। कुछ आश्चर्य-सा है कि सदैव इतरों की प्रीति को ठुकराती हुई मैं आपके एक ही वार के दर्शन से पूर्णतया संतुष्ट हो गई हूँ।

रुमण्वान—यही दशा मेरी भी है।

यहाँ ऐसी प्रेम-पूर्ण बातें हो ही रही थीं, कि काशी के उपर्युक्त राजपुरुष को साथ लिए हुए स्वयं महामंत्री यौगंधरायण, प्रायः २५ अनुयायियों के साथ, वहीं आ धमके। जाते ही उन्होंने सैनिकों द्वारा झूलनेवाली को बँधवा लिया, तथा रुमण्वान से यों वार्तालाप आरंभ किया—

यौगंधरायण—ऐसे अनुभवी महासेनापदि होकर, वत्स! तुम यहाँ किस माया-जाल में फँसे जाते हो? यह सुंदरी विवाह के क्या, स्पर्श तक के योग्य न होकर एक विष-कन्या है, जिसका संग तत्काल प्राणांतक होता है। यदि इसे सर्प काटे, तो इसका अनिष्ट न हो, अपितु वही काल-कवलित हो जाय।

रुमण्वान—काकाजी! आपने आज मेरा प्राण ही बचाया। ऐसी मूर्खता में अब तक मैं कभी नहीं पड़ा था। न-जाने आज मुझे क्या हो गया था? यह धूर्ता मेरे प्राण ही ले चुकी थी। (पैर छूकर) अपराध क्षमा हो, आर्य! किंतु

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



इतना पूछता हूँ कि आपको इन बातों का पता कहाँ से लगा ?

यौगंधरायण—बेटाजी ! यह महाशय, जो मेरे साथ हैं, काशी के एक राजपुरुष हैं। पूर्ण कृपा करके आप मेरे मित्र हो गए हैं। इन्हीं की दया से यह पूरा हाल अभी-अभी मुझे विदित हुआ है। आप तक से बतलाने का समय मैंने न पाया था। ( राजपुरुष से ) क्या कृपया हमारे महासेनापति को अपने कथन की सत्यता प्रमाणित कर दीजिएगा ? आवश्यकता तो नहीं है, किंतु दृढ़ निश्चय इन्हें तथा मुझे भी हो जाय, तो और भी अच्छा है।

राजपुरुष—जो आज्ञा, आर्य !

अब अपने एक अनुयायी से राजपुरुष एक काला, फुंकारता हुआ साँप पिटारी से निकलवाते हैं, और उससे विष-कन्या को कटवाते हैं। उसके ऊपर कोई बुरा प्रभाव सर्प-दंश का नहीं पड़ता, अथच सर्प ही बल-हीन होकर थोड़े ही समय में मर जाता है।

रुमण्वान—बड़ा ही आश्चर्य है; यह विष-कन्या तो सर्प से अधिक विषैली है !

अनंतर वह कारागार में बंदिनी की जाती है, तथा सारी दोनो सेनाएँ सचेत करा दी जाती हैं कि विष-कन्याओं तथा विषैले भोज्य पदार्थों से प्रत्येक सैनिक अपने को बचाता रहे। इस प्रकार महामंत्री योगकरंडक की सारी धूर्तता-पूर्ण युक्तियाँ असफल हो गईं, तथा काशीपुरी दोनो ओर से प्रचंड

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



सैनिकों द्वारा घेर ली गई। ऐसी कठिन परिस्थिति देखकर महामंत्री तथा मंत्रिमंडल की सलाह से काशी-नरेश महाराजा ब्रह्मदत्त को आत्मसमर्पण-गर्भित संधि करनी पड़ी, तथा मगधेश एवं कौशांबी-पति के स्वीकार से काशी का राज्य फिर से मगध के अधीन हुआ। ब्रह्मदत्त काशी-राज्य के निमित्त मगधेश के राष्ट्रीय बनाए गए, तथा जो राजपुरुष महामंत्री यौगंधरायण से मिल गए थे, उन्हें भी अन्य उचित पद दिया गया।

काशी जीतने के पीछे सम्राट् का प्रेम-पूर्ण व्यवहार मगधेश से और भी अधिक बढ़ा। अब इन दोनो का यह भी विचार हुआ कि कौशांबी-पति का सम्राट्-पद पूर्णतया सार्थक बनाने के विचार से इसी संबंध में लगे हाथ और भी विजय-यात्राएँ कर ली जायँ। इसी विचार से स्वयं उदयन दोनो राज्यों की भारी सेना लेकर विजयार्थ आगे बढ़े। मगधेश राजगृह में ही रहे। दोनो राज्यों में आत्मरक्षणार्थ उचित संख्या में सेनाएँ रक्खी गईं। फिर दोनो की शेष सेनाएँ मिलाकर एक प्रचंड दल रुमण्वान के आधिपत्य में प्रस्तुत हुआ। स्वयं सम्राट् नेता बने, तथा महामंत्री यौगंधरायण निरीक्षक के रूप में साथ गए। उनका सुपुत्र, जो साम्राज्य का अग्रहारिक हो चुका था, कौशांबी में ही रहा। अपने पिता के बाहर जाने से वही कौशांबी में नैमित्तिक महामंत्री के काम पर भी प्रतिष्ठित किया गया।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



काशी से चलकर मगध पार करती हुई यह सेना अंग और बंग जीतती हुई समुद्र-तट पर पहुँची। वहाँ सम्राट् ने एक जय-स्तंभ आरोपित किया। अंग और बंग के भूपाल उखाड़े न जाकर करद बनाए गए। वहाँ से सम्राट् ने ससेन महेंद्र-पर्वतारोहण किया। कामरूप-नरेश आपसे दैन्य भाव से मिला। वहाँ का सुप्रबंध करके सम्राट् ससेन कलिंग पहुँचे, जहाँ का शासक घोर युद्ध के पीछे अधीन हुआ। वहाँ से यह सेना काबेरी की ओर प्रस्थित हुई। मार्ग में विंध्यकेतु का आटविक राज्य तथा भग्गगण-राज्य पराजित हुए। आगे बढ़कर चोल को जीतने पर आपने प्रत्यावर्तन किया। नर्मदा पार करके सम्राट् ने ससुराल उज्जयिनी में कुछ काल विश्राम किया। यहाँ श्वशुर चंडप्रद्योत से आप पहलेपहल प्रेम-पूर्वक मिले, और उन्होंने प्रचुर धन-धान्यादि से आपका समादर किया। वहाँ से पलटते हुए आपने चेदि जीतकर उसे अपने साले सिंहवर्मा को समर्पित किया। यह सम्राज्ञी पद्मा के भाई थे, और सारी विजय-यात्रा में मागध दल-सहित इनके साथ रहे थे। वासवदत्ता के भाई गोपालक को आपने विदेह का शासक बनाया।

इस प्रकार प्रायः सारे भारत में विजय-यात्रा करके आपने विनय-पूर्वक कुलपति जमदग्नि का स्मरण किया, और उनकी सम्मति के अनुसार अश्वमेध किया, जो विधि-पूर्वक समाप्त हुआ। उसके मुख्य नेता महर्षि जमदग्नि ही थे, जिन्हें परम

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



प्रचुर मात्रा में दक्षिणा मिली। अपने शिष्य उदयन का ऐसा विभव देखकर वह अत्यंत प्रसन्न हुए, तथा आशीर्वाद देकर सशिष्यवर्ग यथासमय अपने आश्रम को पधारे।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# चतुर्दश परिच्छेद

## ऐयारी

ईरानियों को अपने यहाँ उस काल पारसिक कहा जाता था। वहाँ का राजा दारा ५२१ से ४७५ बी० सी० पर्यंत ईरानी शासक था। उसका जल-सेनापति स्किलेक्स एक समुद्री बेड़ा लेकर सिंध आया। उसने यह प्रांत जीतकर यहाँ ईरानी राज्य स्थापित किया। पीछे समय पर पारसिक राजा साइरस सिंध में रहकर राज्य चलाने लगा। उसकी एक परम रूपवती कन्या नर्गिस थी, जो मृगया पर भी बहुत रुचि रखती थी। उसके सौंदर्य का ऐसा बखान था कि हमारे कौशांबी-पति ने भी यह सुना था, और इनकी रुचि उस ओर न्यूनाधिक आकृष्ट हुई थी। यह भी जानने की इच्छा आपको थी कि साम्राज्य-पद के विभव से असंबद्ध भी क्या कोई अनिंद्य सुंदरी इनकी ओर आकृष्ट हो सकती थी? इसी विचार से साम्राज्य-भार महामंत्री यौगंधरायण पर डालकर एक बार साधारण मंडलाधिप के रूप में आप महापुरुषों को मृगया करानेवाले बनकर सिंध की ओर, रुमण्वान की अध्यक्षता में केवल २५ अनुयायी लेकर, गए। उन सबको कठिन आज्ञा थी कि इनका वास्तविक पद किसी पर प्रकट न होने पाए। वे सब लोग चुनकर विश्वास-पात्र होने

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



से साथ लिए गए थे। वहाँ से कुछ दूरी पर कुछ सेना भी नियत संख्या में लगा दी गई थी।

सिंध-प्रांत में जाकर आपने अपना नाम कर्षक रक्खा, तथा कमएवान का प्रतीक। वहाँ मृगया के संबंध में जब इनकी ख्याति शीघ्र बढ़ी, तब राजपुत्री ने भी इन्हें बुलवाकर एक बार वार्तालाप प्रारंभ किया।

नर्गिस—जनाब कर्षक साहब! सुना आप शिकार खेलने में एकता हैं। क्या ऐसा ही है?

कर्षक—राजपुत्री महोदया! मुझे कोई विशेष ज्ञान तो है नहीं, किंतु गुरुजी की कृपा से धनुष-बाण तथा इतर अस्त्र-शस्त्रों के व्यवहार में कुछ अभ्यास किया ही है। महापुरुषों को मृगया खेलाने का मेरा व्यापार भी है। इसी से काल-क्षेप होता है। काम करते-करते कुछ योग्यता आ ही जाती है। मेरे साथ २५ अनुयायी हैं। वे भी मृगया में मेरे स्वामियों की सहायता करते हैं।

नर्गिस—आपकी बातों से भी मालूम पड़ता है कि इस फ़न में आपकी लियाक़त काफ़ी बढ़ी-चढ़ी है। क्या मेरी मदद कर सकते हैं? मुझे भी इसका कुछ ख़ब्त है।

कर्षक—अहोभाग्य कि देवीजी को मेरी सहायता की आवश्यकता प्रतीत हुई है। जो आज्ञा होगी, उसका पालन करूँगा।

नर्गिस—बड़ी ख़ुशी की बात है, नौकरी आप क्या लेंगे?

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



कर्षक—मैं तो आपकी कृपा से एक छोटा-सा मंडलाधिप भी हूँ। मृगया का काम प्रसन्नतार्थ करता हूँ। महापुरुषों की सहायता भी कर दिया करता हूँ। कोई सेवावृत्ति नहीं है। साधारण निर्वाहार्थ मेरे अनुयायियों पर उनका जो व्यय हो जाता है, वही बहुत है।

नर्गिस—क्या कुछ भी न लेने की आपने क़सम खाई है?

कर्षक—ऐसा नहीं है, देवीजी! स्वामिनी के रूप में जो कुछ दे देंगी, उसे अस्वीकार भी न करूँगा।

नर्गिस—तब फिर आज ही से मेरा काम करने न लगिए।

कर्षक—जैसी आज्ञा।

इस प्रकार सहायता स्वीकार होने पर ये दोनो मृगया के कार्य में विशेषतया प्रवृत्त हुए। प्रथम दृष्टि में ही दोनो एक दूसरे पर पूर्णतया आसक्त भी हो गए, किंतु इस बात का प्रकटीकरण दोनो को अभीष्ट न था। शाहज़ादी नर्गिस अपनी मानसिक आसक्ति को पूर्णतया समझ भी न पाई थी; केवल रूप पर मोहित थी। कर्षक तो यह देखना चाहते थे कि इन्हें निर्धन समझकर भी एक राजकन्या इनसे कहाँ तक अनुरक्त होती है। उधर शाहज़ादी एक साधारण सेवक पर अनुरक्त होते भी इसे प्रकट करने में हिचकती थी। पारसीक शाह साइरस भी इन पर अत्यंत प्रसन्न रहता था, विशेषतया इनके सभ्य व्यवहार, शस्त्रास्त्र-संबंधी योग्यता तथा इतर गुणों से।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



एक बार एक मस्ताया हुआ हाथी स्वयं शाह पर झपट पड़ा। सौभाग्य-वश कर्षक भी वहाँ खड़े थे। शाह पर विपत्ति देखकर लोग बहुत घबराए, किंतु आपने गज-वशीकरण विद्या से उसे तुरंत स्ववश कर लिया। सब लोग वाह-वाह करने लगे। शाहज़ादी भी इनके साथ मृगयार्थ प्रायः जाया करती थीं। इनके शस्त्रास्त्र-प्रहार के अभ्यास तथा अनुयायियों के फंदों पर लगाने की योग्यता से मृगया बहुत सफल हुआ करती थी। जंतुओं पर प्रहारों के ऐसे प्रबंध करते थे कि प्रायः शाहज़ादी के हाथ से उनका वध होता था। वह रूप-लावण्य पर मोहित थी ही, मृगया के साफल्य से और भी प्रसन्न रहने लगी। हाथियों के स्ववश करने की विद्या पर भी वह बहुत आश्चर्य करती थी। एक बार इनसे विशेष बात भी करने लगी।

शाहज़ादी—कर्षकजी! आपने यह इल्म कहाँ से हासिल किया था? कैसा भी मस्ताया हाथी हो, आप फ़ौरन् क़ाबू कर लेते हैं।

कर्षक—राजपुत्री! यह मुझे गुरुजी ने सिखलाया था।

शाहज़ादी—निशाना भी आपका बहुत बढ़िया लगता है।

कर्षक—यह, देवीजी! अभ्यास की बात है। काम करते-करते कुछ पटुता आ ही जाती है।

शाहज़ादी—मैंने एक बार आपको वीणा भी बजाते सुना था। ऐसा बढ़िया राग निकालते हैं कि जी में आता है, बैठी हुई वही सुना करूँ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



कर्षक—बड़ी कृपा, शाहज़ादी महोदया !

शाहज़ादी—भला, आपको कौन-कौन-से उलूम में मश्क़ है ?

कर्षक—जानता बहुत क्या हूँ ? मृगया देवीजी को खेलाता ही हूँ। इसी संबंध में शस्त्रास्त्र-प्रयोग का अभ्यास करना ही पड़ा है। वीणा-वादन आप सुन ही चुकी हैं। कुछ नृत्य एवं अभिनय में भो श्रम किया है। जानता क्या हूँ, आपके-से धनाढ्यों की कृपा से भोजन चले जाते हैं।

शाहज़ादी—देखती हूँ कि शाही मजालिस में भी आप अच्छी तरह से चल सकते हैं। क्या कभी दरबारों में भी जाने के मौक़े आए हैं ?

कर्षक—कहीं महाराजाओं की सभाओं में तो गया नहीं, पहलेपहल देवीजी के ही दरबार में पहुँचा हूँ। इससे पूर्व मंत्रियों आदि से वार्तालाप करने के सुयोग मिले थे। देवीजी की भारी कृपा के लिये सहस्रशः धन्यवाद हैं !

शाहज़ादी—लियाक़त आपमें सभी फ़नों की बहुत बढ़िया है। ख़ूबसूरती में भी एकता हैं। मेहरबानी करके यहीं बने रहिएगा। नौकरी छोड़कर कहीं चले न जाइएगा।

कर्षक—सौंदर्य का कथन तो देवीजी ने शायद हँसी में कर दिया है। तो भी ऐसी कृपालु स्वामिनी को छोड़कर जाऊँगा कहाँ ?

शाहज़ादी—बड़ी ही मेहरबानी हुई, जनाब कर्षक साहब !

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



आपकी जो ख़ातिर इस दरबार से होती है, उसमें आपको कोई कमी तो नहीं समझ पड़ती ? अगर कभी ऐसा ख़याल हो, तो मुझसे कह दीजिएगा; नाराज़ होकर चल न देना।

कर्षक—मुझे केवल मृगया से रुचि है, धनादि से नहीं। इस विषय पर देवीजी को कभी कोई संदेह या चिंता न करनी चाहिए।

शाहज़ादी—यह तो आपने पहले ही फ़र्मा दिया था; फिर भी मैंने एक बात अर्ज़ कर दी, जिसमें विना मेरे जाने किसी बात पर कभी आपको बुरा न लग जाय।

कर्षक—इतनी कृपाओं तथा ऐसे प्रेम-पूर्ण सत्कार के पीछे ऐसा कैसे हो सकता है ?

शाहज़ादी—अच्छा, आपसे पूछती हूँ कि अभी आपकी शादी हुई है या नहीं ?

कर्षक—देवीजी ! मेरे दो विवाह हुए हैं, जिनसे एक-एक पुत्र भी प्राप्त हो चुके हैं। दोनो स्त्रियाँ तथा पुत्र घर पर ही रहते हैं।

शाहज़ादी—क्या उनको देखने कभी आप नहीं जाते ? इसीलिये भी तो मेरा ख़याल था कि कहीं आप खिसकने की फ़िक्र में न हो पड़ें।

कर्षक—विना देवीजी की आज्ञा के ऐसा नहीं हो सकता। मेरा कुटुंब काकाजी के प्रबंध में सुखी रहता है। मृगयादि का

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



मुझे ऐसी लत है कि कभी-कभी दो-दो, तीन-तीन वर्ष बाहर रहता हूँ। किसी को कोई कष्ट नहीं होता।

शाहज़ादी—तब तो मैं समझूँगी कि बीबियों-बच्चों पर आपकी मेहरबानी काफ़ी नहीं है।

कर्षक—विवाह हुए कई वर्ष हो चुके हैं। स्त्रियाँ प्रसन्नता-पूर्वक मेरे सदन या अपने मायके में रहती हैं। कभी उपालंभ नहीं करतीं। यदि करें, तो एक दिन के लिये भी बाहर न निकलूँ। मंडल मेरा छोटा है। उन्हीं के लिये अच्छे वस्त्राभूषणों के प्रबंधार्थ निकलना पड़ता है। अपने लिये तो मैं कुछ चाहता नहीं। यदि वे भी न चाहें, तो घर के बाहर पैंग न दूँ। उन्हीं की सेवा में दिन-रात लगा रहता हूँ।

शाहज़ादी—उन दोनों से आपकी मुहब्बत ठीक चल रही है या नहीं ?

कर्षक—बहुत ठीक चलती है, देवीजी! कहा न कि यदि उनको अच्छे-अच्छे वस्त्राभूषणों की इच्छा न हो, तो मैं घर से बाहर पैग न दूँ।

शाहज़ादी—तब तो आप अच्छे आदमी हैं। सिर्फ़ ख़ूब-सूरती, बहादुरी, गाने-बजाने वग़ैरा में एकता नहीं हैं, बल्कि मुहब्बत भी आला दर्जे की रखते हैं।

कर्षक—और कोई विशेष गुण तो मुझमें हैं नहीं, देवीजी! किंतु अपने लिये चाहता कुछ नहीं हूँ। निर्धनता को मैं

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



क्या करूँ। यदि स्त्रियों का भी स्वभाव मेरा ही-सा होता, तो उनसे वियोग कभी न होता।

शाहज़ादी—जब महज़ बीवियों को ख़ुश रखने को दौलत कमाने के लिये फ़ुर्क़त बर्दाश्त करनी पड़ती है, तब उसके लिये आप ज़्यादा ख़्वाहाँ व जोयाँ क्यों नहीं दिखते ?

कर्पक—बहुत मुँह फैलाने से धनाढ्यों को भी अच्छा नहीं लगता। विना माँगे ही पारितोषिकादि के रूप में उचित से अधिक प्राप्ति हो जाती है। फिर मेरा विचार ऐसा है कि जितना काम किसी का करे, उसी के अनुसार वेतन, पारितोषिकादि लेना चाहिए, उससे विशेष नहीं। कार्य जितना किया हो, उससे अधिक स्वामी से लेने में दूसरे जन्म के लिये उसका ऋणी रहूँगा। उचित वेतन स्वामी लोग विना माँगे भी दे ही देते हैं। फिर विशेष लोभ-प्रदर्शन अनुचित है कि नहीं ? आपके दरबार से वेतन अब तक भी उचित से कुछ अधिक ही मिल चुका होगा, कम नहीं। ऐसी दशा में आशा है कि देवीजी जो मेरे अप्रसन्न होकर कभी विना कहे भागने का भय करती हैं, वह और भी अचिंत्य है।

शाहज़ादी—जनाब कर्पक साहब ! आप ग़रीब होकर भी बड़े आला ख़यालात के शख़्स हैं। ऐसी उलुलअज़्मी मैंने शाहों में भी न देखी। ( एक बढ़िया नगवाला प्रायः एक लक्ष दाम का अंगुलीयक दिखलाकर ) देखो, यह अँगूठी कैसी है ?

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



कर्षक—बहुत बढ़िया है. पाँच सहस्र दीनार से कम दामों की न होगी।

शाहज़ादी—क़ीमती अशिया के दाम भी आप समझ ख़ूब लेते हैं। क्या ऐसे ग़रीब हैं नहीं, जैसे कि अपने को कहते हैं ?

कर्षक—लोग तो अपनी लक्ष्मी को बढ़ाकर बतलाते हैं, घटाकर नहीं। फिर मुझी पर ऐसा करने का संदेह क्यों किया जाता है ? मैं वास्तव में धन-हीन हूँ, किंतु कंगाल नहीं। खाने-भर को ईश्वर ने दे रक्खा है। स्त्रियों की आभूषण-लिप्सा तथा अपनी मृगयासक्ति से ही पराई सेवा करनी पड़ती है। साधारण जीवन प्रसन्नता-पूर्वक चला ही जा सकता है।

शाहज़ादी—क्या यह अंगुश्तरी क़ुबूल फ़र्माने की मेहरबानी कीजिएगा ?

कर्षक—मैंने तो, देवीजी ! पहले ही बिनती की थी कि सेवा के अनुसार ही वेतन या पारितोषिक ले सकता हूँ, विशेष नहीं। इतनी बहुमूल्य वस्तु देने की इच्छा पर मैं आपको धन्यवाद देता हूँ, और यह भी प्रकट करता हूँ कि सधन्यवाद स्वीकार के पीछे इसे सेवा से अधिक समझकर ईश्वरीय भय से फेरे देता हूँ, किसी महत्ता-प्रदर्शन अथवा उपहार के निरादरार्थ नहीं। इसका मैं पूर्ण आदर करता हूँ। आशा है, देवीजी की अप्रसन्नता न होगी। क्षमा भी माँगता हूँ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



शाहज़ादी—कर्षक साहब ! आपकी उलुलअज्मी हज़ार बार क़ाबिल तारीफ़ व तहसीन के है। उम्मीद है, इस दरबार और इस नाचीज़ पर हमेशा मेहरबानी रखिएगा । मुआफ़ी की ज़रूरत नहीं है।

कर्षक—देवीजी ! यह आप क्या आज्ञा करती हैं ? मैं सदैव परम राजभक्ति-पूर्वक आपकी सेवा में तत्पर रहूँगा।

इस प्रकार वार्तालाप के पीछे शाहज़ादी महलों में चली गई, और कर्षकजी अपने साथियों से जा मिले। ऐसी कुछ अनोखी बातचीत सुनकर शाहज़ादी की सखी तर्रारा को कुछ आश्चर्य-सा हुआ, और समय ताड़कर उसने इनसे यों बात की।

तर्रारा—शाहज़ादी साहबा ! शिकारी नौकर कर्षक पर आपकी मेहरबानी कुछ ज़रूरत से ज़ायद बढ़ती हुई देख पड़ती है। क्या बात है ? मुआफ़ी माँगकर यह अर्ज़ करती हूँ।

शाहज़ादी—कोई ख़ास मेहरबानी की बात नहीं है। मामूली बात कर रही थी, सबके सामने। कुछ तनहाई में तो गुफ़्तगू हुई नहीं। तुम्हें बुरा क्या समझ पड़ा ?

तर्रारा—बुरा लगने की तो हिनोज़ कोई बात नहीं है, किन तारीफ़ उसकी ज़रूरत से बहुत ज़ायद की गई। माना कि शख़्स उलुलअज्म, बेलौस, कई फ़नून में माहिर व लालच से कोसों दूर है। फिर भी है तो मामूली ख़ादिमे-

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



रियासत। उसकी एकबारगी ऐसी इज्ज़त-अफ़ज़ाई कुछ ग़ैर-मामूली दिखती है। एकाएकी एक लाख की क़ीमती अंगुश्तरी देने लगना ज़रूरत से ज़ायद मेहरबानी ज़ाहिर करता है। तअज्जुब फिर भी यह है कि मामूली शख्स होकर उसने उसे लिया भी नहीं। माजी साहबा अगर उस बेशक़ीमती ज़ेवर का इस तरह बख्शा जाना सुनतीं, तो कुछ नाराज़ ज़रूर होतीं। ख़ैरियत यह है कि उस बेवक़ूफ़ ने ख़ुद उसे लिया नहीं।

शाहज़ादी—इतनी ही तो तुम्हें अक़्ल की कमी है। मैंने तुम्हारी समझ में ऐसी बेजा सख़ावत की, जो वालिदा माजिदा की नाराज़गी का बायस होती। उधर उसने उसे लेने की परवा भी न की। अब तुम्हीं समझो कि क्या माजी साहबा के आला खयालात उसके बराबर भी नहीं पहुँचते। मैं तो समझती हूँ कि ज़रा भी परवा न फ़रमातीं।

तर्रारा—अच्छा, इस बात को जाने दीजिए। इतना मैं ज़रूर कहूँगी कि उसकी इज्ज़त-अफ़ज़ाई इतनी ज्यादा हुई कि मुझे नहीं, तो किसी-किसी को शक की गुंजाइश थी। मेरी अर्ज़ सिर्फ़ इसी क़दर है कि हाथ-पैर बचाकर बात की जाया करे, वरना मुमकिन है, दरबार से वह बरतरफ़ कर दिया जाय, और आपको बुरा लगे।

शाहज़ादी—क्या यह भी मुमकिन है? प्यारी तर्रारा! उसकी फ़ुर्क़त तो मैं बर्दाश्त न कर सकूंगी। कोई मुहब्बत बग़ैरा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



बिलकुल नहीं है, मगर उसके औसाफ़ हमीदा मुझे पसंद बहुत हैं। उसकी बरतरफ़ी से मुझे अज़हद शाक हो जायगा।

तर्रारा—मेरी अज़ीज़ शाहज़ादी साहबा ! इसी को आशिक़ों की ज़बान में मुहब्बत कहते हैं। वह कौन है, जिसकी जुदाई हुज़ूर को नाक़ाबिले-बर्दाश्त हो ? कल तक सिंध में उसका पता भी न था। इतनी जल्दी इस क़दर उंसियत क़ाबिले-शुबहा बात होगी या नहीं ? अपने को सँभालने की कोशिश कीजिए, मलिका मेरी ! वरना बदनामी का बायस होगा। आप ही समझिए, शाहज़ादी साहबा ! बात ठीक अर्ज़ करती हूँ या नहीं ?

शाहज़ादी—तो क्या मेरे मिज़ाज में इश्क़ ने घर कर लिया है ? मैं तो इन बातों से हज़ार कोस इलाहिदा रहती हूँ। एकबारगी यह बला कहाँ से पीछे पड़ी ?

तर्रारा—अभी आपने उससे कोई बात ज़ाहिर तो नहीं की है ?

शाहज़ादी—ऐसा कुछ नहीं है, अज़ीज़ मेरी ! उससे जैसी गुफ़्तगू उस दिन तुमने सुनी, उसी से कुछ कम रियायत के साथ कई बार हुई थी। ज्यों-ज्यों बातें करती जाती हूँ, त्यों-त्यों उसमें औसाफ़ निकलते आते हैं। उसने कभी कोई मुहब्बत-आमेज़ गुफ़्तगू न की, न मैंने ही कभी ऐसा किया। ख़ूबसूरती में लासानी है ही। ग़रीब होकर भी रईसों से बढ़-

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



कर उलुलअज़मी रखता है। लालच किसी बात का छू नहीं गया है। कुछ माँगना दूर रहा, देने से भी कोई इनआम क़ुबूल नहीं करता। ऐसी कोई उम्दा सिफ़त ही नहीं, जो उसमें न देखती हूँ। जवान भी है। ताहम इश्क़बाज़ी वग़ैरा की कोई बात नहीं है, सिर्फ़ पसंदीदगी मेरी ज़रूर है। अगर ग़रीब न होकर किसी शाही ख़ानदान से होता, तो हर हालत में शादी के लिये भी क़ाबिल पसंद के था। अपना ही एक ग़रीब नौकर जब है, तब उससे इश्क़ का सवाल तो उठता ही नहीं, ताहम फ़ुर्क़त उसकी मुझे नाक़ाबिले-बर्दाश्त है ही। अज़ीज़ तर्रारा! इस तबीयत की तुम कैसी ताबीर करोगी? मैं शादी वग़ैरा का कोई ख़याल उसके निस्बत नहीं रखती। शिकार खेलाने में लियाक़त की हद उसमें है। गाने-बजाने में ऐसा कोई उस्ताद देखने में न आएगा। पसंद के क़ाबिल सारे औसाफ़ हमीदा उसमें मौजूद हैं, मगर दो औरतों से शादी कर चुका है। और, एक मामूली शख़्स है ही। फिर भी और कोई ख़्वाहिश न रखती हुई मैं उसका यहाँ से चला जाना नहीं बर्दाश्त कर सकती; और कोई बात नहीं है।

तर्रारा—बात तो आपकी मैंने अच्छी तरह से समझ ली। अपनी तबीयत को ख़ुद आप नहीं समझ सकी हैं। इश्क़ का आग़ाज़ हो ही चुका है। जब तक अपने को बहुत ज़्यादा न सँभालिए, तब तक यह दिनोंदिन बढ़ेगा, और रोकना बहुत कुछ चाहते हुए भी आप इसे रोक न सकेंगी।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



शाहज़ादी—फिर इसकी दवा क्या है? कुछ यह भी तो बतलाओ।

तर्रारा—जनाब उससे मिलना छोड़ तो सकेंगी नहीं, इत्तुलइम्कान बहुत कम कर दीजिए।

शाहज़ादी—यह भी तो सहल नहीं है। उसके सामने आते ही मैं बात करनी रोक न सकूँगी, और एक बार शुरू होकर बातचीत बढ़ती ज़रूर चली जायगी। करूँ, सो क्या करूँ?

तर्रारा—तब इसकी दवा एक ही है कि मिलना छोड़िए, वरना ग़रीबी क़ुबूल करके शादी की कोशिश कीजिए।

शाहज़ादी—जिसके दो बीबियाँ मौजूद हों, उससे शादी क्या करनी? मिलने पर ताहम मुहब्बताना गुफ़्तगू होने ज़रूर लगेगी। उसके यहाँ से चले जाने पर दुनिया सूनी मालूम पड़ने लगेगी। यही दवा समझ पड़ती है कि जाने तो वह यहाँ से पाए नहीं, मगर मिलना तर्क रहे।

तर्रारा—भला, आपके निस्बत उसके तेवर कैसे समझ पड़ते हैं?

शाहज़ादी—बातें सलीक़े से बहुत इज्ज़त के साथ करता है। किसी तरीक़े से कोई बेहूदा बात उसके मुहँ से निकलती नहीं, न मुझे मिलने या बेजा तरीक़े से .खुश करने की कोई कोशिश करता है। किसी बात की ख्वाहिश ज़बान से या दीगर तरीक़ों से भी नहीं ज़ाहिर होती, मगर आँखों से

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



मुहब्बत नज़र आती है। मुमकिन है, सच हो या शक-हो-शक हो। मुझे ख़ुश करने की पूरी कोशिश करता है, कोई बात छिपाता नहीं, न कोई आरज़ू-मिन्नत करता है। सलीक़े में कोई कमी नहीं है, न किसी क़िस्म का कोई पैग़ाम वग़ैरा है।

इस प्रकार तर्रारा की शिक्षा सुनकर शाहज़ादी ने कर्षक से न मिलने का ही निश्चय किया। उधर सम्राट् जब आर्य रुमरावान से एकांत में मिले, तब गुप्त वार्तालाप होने लगा।"

रुमरावान—देव! अब कब तक यहाँ ठहरने की इच्छा है? प्रायः १५ दिन बीत चुके हैं। पधारे तो यही जानने को थे कि क्या कोई सुंदरी केवल गुणों के कारण दरिद्रता के रूप में भी आपको चाहेगी या नहीं? इस बात का परिणाम तो संभवतः ज्ञात हो चुका है। शाहज़ादी आपसे पूर्ण अनुरक्ति रखती-सी दिखती है। क्या दो परम सुंदरी और गुण-वती सम्राज्ञियों के होते हुए भी तृतीय पर दृढ़ विचार कीजिएगा?

सम्राट्—आया तो मैं विवाहार्थ न था, वरन् केवल परीक्षार्थ अवाई हुई थी, किंतु पहलेपहल लता-भवन में शाहज़ादी को देखकर अनुरक्त अवश्य हो गया हूँ।

रुमरावान—मागधी सम्राज्ञी पर पूर्ण से अधिक अनुरक्ति रखते हुए भी आपने ज्येष्ठा सम्राज्ञी के मान-रक्षणार्थ घोर मानसिक अनुताप सहते हुए भी विवाह में नकारात्मक ही

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



विचार रक्खे। अब क्या बदल गए हैं ? अपना चित्त सँभालिए देव !

सम्राट्—आप ही ने विष-कन्या को देखते ही क्यों चित्त सँभाल न पाया ? क्या "पर-उपदेश-कुशल बहुतेरे" वाली बात ही चरितार्थ करने चले हैं ?

रुमएवान—क्या मेरे सद्गुणों की महत्ता आपवालों से समता कर सकती है ? कहाँ दिनकर और कहाँ खद्योत !

सम्राट्—मेरे सहपाठी तथा सहवयस होकर भी अपनी कल्पित अयोग्यता की आड़ में क्या हृदय-हीन उपदेशक का रूप ग्रहण करने चले हैं ? जैसे सद्गुण मुझमें हैं, वैसे ही आपमें भी। मुझसे किस बात में कम हैं ?

रुमएवान—समझ पड़ता है, देव मेरी प्रशंसा की आड़ में अपने परमोच्च सिद्धांतों से डिग रहे हैं।

सम्राट्—है तो ऐसा ही, आर्य ! इस रूप-राशि से मैं विमुख नहीं हो पाता !

रुमएवान—कोई पतन आपका है भी नहीं। मैंने केवल एक बात कह दी। सैकड़ों भूपाल एकाधिक विवाह करते आए हैं। कभी-कभी विवशता भी हो जाती है।

सम्राट्—करूँ, सो क्या करूँ ? एक बार एक-स्त्री-व्रत से च्युत हो ही चुका हूँ, सो भी इतरों की युक्तियों से। अब यह रूप-राशि मुझसे छोड़ते नहीं बनती। तो भी इतना कहे देता

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



हूँ कि यदि वह अनुरक्त होगी, तभी विवाह करूँगा, अपनी प्रार्थना से नहीं।

रुमएवान—आए तो यहाँ थे सिंध से पारसीकों का राज्य भी उठाने।

सम्राट्—बाँधूँगा उसका भी प्रबंध, किंतु उसी दशा में, जब स्वयं साइरस किसी कारण से युद्धोन्मुख हो।

रुमएवान—है तो उचित। अच्छा, शाहज़ादी के विषय में आशाएँ कैसी हैं?

सम्राट्—वह अभी अज्ञातयौवना समझ पड़ती है। चाहने तो मुझे बहुत लगी है, किंतु केवल मित्र-भाव से। अभी दांपत्य प्रेम की गुरुता उसे अज्ञात-सी है।

रुमएवान—तब यह भी संभव है कि यह मामला शुद्ध मैत्री के आगे न बढ़े।

सम्राट्—हो सब कुछ सकता है, किंतु ऐसा स्वाभाविक नहीं है। अविवाहित स्त्री-पुरुषों में मैत्री विशेष बढ़ने से संबंध उसी ओर प्राकृतिक कारणों से ढुलकने लगता है।

रुमएवान—देखिए, ऊँट किस करवट बैठता है।

इस प्रकार वार्तालाप करके ये दोनो अपने साधारण कार्यों में लगे। दो-चार दिनों तक तो शाहज़ादी नर्गिस कर्षक से न मिलने का डौल डालती रहीं, किंतु पीछे से अपने चित्त को सँभाल न सकीं। इतने ही दिनों में उनका मुँह विवर्ण-सा होने लगा, तथा वह विवश होकर ठंडी उसासे भी लेने

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



लगीं। अनंतर एक दिन कर्षक को बुलवाकर बात करने लगीं।

शाहज़ादी—कर्षक साहब ! आपने तो इन दिनों मुझे बिलकुल भुला दिया। क्या वजह हुई ?

कर्षक—देवीजी ! आपने स्मरण ही न किया, नहीं तो अवश्य उपस्थित होता। आज्ञा हो कि क्या इच्छा है ? बुलाने पर ही आया करता था।

शाहज़ादी—आपके साहबज़ादों की उम्रें कितनी-कितनी होंगी ?

कर्षक—दोनो प्राय: चार-चार वर्षों के होंगे।

शाहज़ादी—रहते आप कहाँ हैं ?

कर्षक—रहनेवाला तो कौशांबी का हूँ, किंतु मंडल उससे कुछ दूर है।

शाहज़ादी—मंडल से आमदनी कितनी होती है ?

कर्षक—यही एक सहस्र दीनार वार्षिक की हो जाती होगी। कुछ खेती-बारी भी सेवक लोग किया करते हैं, जिससे सबका काम-काज चला जाता है। न तो कोई कष्ट है, न धनाढ्यता। सुखी जीवन है। जीवन की महत्ता अथवा हीनता मानसिक विचारों पर निर्भर होती है, देवीजी ! मैं निर्धन होकर भी अपने को प्रसन्न मानता हूँ, जिससे पूर्ण संतोष रहता है।

शाहज़ादी—क्या शिकार के अलावा मुझे नाचना व गाना भी सिखला सकते हैं ?

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



कर्षक—गान-विद्या के शिक्षण में तो कोई काठिन्य नहीं है, न एकाकी नृत्य में भी, किंतु यदि मिलित नृत्य सीखने की इच्छा हो, तो माताजी या पिताजी की आज्ञा आवश्यक होगी, नहीं तो कोई उनसे चुग़ली कर सकता है। मिलित नृत्य से देवीजी के विषय में लोगों का कुछ कहने-सुनने लगना भी संभव हो जायगा।

शाहज़ादी—सीखना तो मैं मिला हुआ नाच भी चाहती हूँ।

कर्षक—तब फिर देवीजी ही सोच लें। अपमान मेरा तो कुछ होना नहीं है। जो कुछ है, आप ही का यश अथवा अपयश है।

शाहज़ादी—कोई कह क्या सकता है? महलात में अकेले सिर्फ़ नौकरानियों के सामने की बात होगी। आप डरते किस बात से हैं?

कर्षक—वास्तविक बात यह है कि इन दिनों जो देवीजी ने कई दिन स्मरण न किया, तो इससे मैं भी बहुत उदास रहा। मैं यह नहीं चाहता कि कोई ऐसी बात हो जाय, जिससे चिरकाल-पर्यंत देवीजी के दर्शन से वंचित रहूँ। आया तो हूँ यहाँ धनोपार्जनार्थ ही, किंतु जैसी कृपा देवीजी की हो गई है, उससे दर्शनों का भी अभिलाषी रहने लगा हूँ। क्षमा का भी प्रार्थी हूँ। कोई बात अथवा प्रार्थना नहीं है, केवल दर्शनेच्छा बलवती हो उठी है।

शाहज़ादी—यह मुश्किल तो इधर भी वाक़ै हो गई है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



चाहती मैं भी कुछ नहीं हूँ, मगर बग़ैर आपको देखे तबीयत ख़ुश नहीं रहती। अब देखती हूँ कि यही बला आपके ऊपर भी हावी हो गई है। इसका नतीजा क्या होगा ? कुछ इस पर भी तो ग़ौर कीजिए।

कर्षक—मैं तो ग़रीब आदमी हूँ। हम लोग अपनी चित्त-वृत्तियाँ रोकने में न्यूनाधिक सक्षम होते हैं। जब तक सेवा में हूँ, तभी तक ऐसी विकलता कष्ट देगी। उधर देवीजी उच्च वंश-भव महान् व्यक्ति हैं। यदि सुख-पूर्वक चित्तवृत्ति का निरोध कर सकें, तो अति शीघ्र यहाँ से प्रस्थित हो जाऊँ। जैसा व्यवहार देवीजी का मुझसे बढ़ रहा है, वह समय पर अनौचित्य की सीमाएँ भी पार कर सकता है। ऐसी दशा में आपको कष्ट संभव है, अतएव यदि आज्ञा हो, तो मैं अति शीघ्र यहाँ से पयान का प्रबंध करूँ।

शाहज़ादी—आप तो वे ही बातें कहने लगे, जिन्हें न करने का मुझसे वादा कर चुके हैं। अगर भागिएगा, तो फिर मुझे यह अज़ीज़ सूरत देखने को कहाँ मिलेगी ?

कर्षक—यही तो अनौचित्य की सीमा है, जो आपके माता-पिता ठीक न समझेंगे। आशा है, देवीजी केवल देखने-सुनने की अभिलाषी हैं। ऐसी दशा में माता-पिता के क्रोध का कारण क्यों उपस्थित किया जाय ? समझ लीजिए, आप एक साधारण व्यक्ति के कारण अपने कष्टों का मार्ग विस्तीर्ण कर रही हैं।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



शाहज़ादी—हो तो ऐसा ज़रूर रहा है, मगर किया क्या जाय? मुझे बग़ैर आपको देखे चैन नहीं है। आज की गुफ़्तगू से ज़ाहिर हुआ कि जनाब की भी वही हालत है। इसका नतीजा क्या होगा, सो समझ में नहीं आ रहा है।

कर्षक—फल तो प्रकट है। इन बातों में देवीजी को कष्ट होगा। केवल सूरत देखने तक तो बात रहेगी नहीं, समय पर इससे आगे भी बढ़ेगी। माता-पिता इसे स्वीकार करेंगे नहीं। यदि उनकी आज्ञा का उल्लंघन कीजिए, तो किस सुख के लिये? मेरे यहाँ रक्खा ही क्या है, जिसके लिये देवीजी अपना राज्य-सुख छोड़ें? सारी बातों पर विचार कर लिया जाय।

शाहज़ादी—यह तो बुरी बला पीछे लग रही है। बग़ैर आपसे मिले मुझे चैन नहीं। उधर वाल्दैन की नाराज़गी का होना इस रास्ते में लाबुदी है। अब कहिए, हो क्या? छोड़ मैं आपको सकती नहीं।

कर्षक—मिलने-भेंटने से देवीजी को लाभ ही क्या है? इस इच्छा को छोड़ ही क्यों न दीजिए? एक निर्धन पुरुष पर राजकुमारियों की ऐसी आसक्ति शोभा नहीं पाती। आगा-पीछा सोच लिया जाय।

शाहज़ादी—आपकी दोनो बीबियों के मिज़ाज कैसे हैं?

कर्षक—वे दोनो बहुत ही शुद्ध-हृदया हैं। जिससे मेरा प्रेम हो, उसे मेरे ही कारण जी-जान से चाहने लगती हैं, किंतु

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



देवीजी ऐसे परिवर्तन को कैसे सह सकेंगी ? कहाँ बादशाही और कहाँ एक साधारण मंडल ! कैसे प्रसन्न रह सकिएगा ?

शाहज़ादी—ख़ुश तो मैं बग़ैर आपको देखे रह सकती नहीं। करूँ, सो क्या करूँ ? आप ही सलाह दीजिए न।

कर्षक—सम्मति तो मैं यही देता हूँ कि यह कामना छोड़कर ही आप प्रसन्न रह सकेंगी, आगे जैसी इच्छा। मैं यथाशक्ति प्रसन्न रखने का पूर्ण प्रयत्न करूँगा ही, तथा मेरी स्त्रियों से देवीजी को कोई कष्ट न होगा। प्रेम-भाव की पूर्णता से आस-श्वास को सदैव प्रस्तुत रहूँगा। फिर भी राजसुख छोड़कर साधारण मंडलेश्वरी होना क्या आपको सह्य होगा ? पूरी बात विचार लीजिए। मैं दोनो दशाओं में आज्ञा पालने को प्रस्तुत हूँ। कहिए, तो यहाँ से अभी प्रस्थित हो जाऊँ। और, इससे इतर यदि कोई इच्छा हो, तो उसे भी साधने को प्रस्तुत हूँ। मुझे तो आज्ञा-भर चाहिए।

शाहज़ादी—आप सलाह क्या देंगे ?

कर्षक—मेरी तो सम्मति आपके लिये महत्ता छोड़ने की नहीं है।

शाहज़ादी—आप तो मुहब्बत की क़ीमत नहीं समझते। जहाँ अपने लिये कुछ नहीं चाहते, वहीं सादिक़ इश्क़ की भी क़द्र नहीं करते।

कर्षक—शुद्ध प्रेम का मान तो पूर्णता से करता हूँ, किंतु देवीजी के पद का गिराव कैसे ठीक मानूँ ? प्रेम में कोई

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



न्यूनता नहीं है, किंतु उसका मूल्य मैं तो कुछ दे नहीं रहा हूँ। उधर देवीजी का पद पूर्णतया जा रहा है। ऐसी दशा में निर्धनावस्था में जाने की सम्मति एक राजकीय व्यक्ति को कैसे दूँ? इतना अवश्य प्रकट किए देता हूँ कि देवीजी को खोने से मैं भी सारे जीवन दुखी रहूँगा। तो भी अपने सुखार्थ मैं आपकी हानि कैसे ठीक मानने लगूँ?

शाहज़ादी—आपकी सादिक़ मुहब्बत में तो शिम्मा-भर कमी नहीं है?

कर्षक—उसमें पूर्णता है, न्यूनता का नाम नहीं।

शाहजादी—अच्छा, मेरे साथ होने से कमाई बढ़ाने की कोशिश कीजिएगा या नहीं?

कर्षक—यथासाध्य देवीजी को आर्थिक कष्ट न होने दूँगा। चाहूँ, तो धन समुचित मात्रा में उपार्जित कर लूँ। इच्छा हो, तो आपका सिंध ही दस दिनों में जीत लूँ। यहाँ शक्ति ही क्या है? मेरी निर्धनता किसी अशक्तता के कारण न होकर धनोपार्जन की अनिच्छा-मात्र से है। मुझे धन की आवश्यकता ही नहीं है।

शाहजादी—तब फिर मुझे ले कैसे चलिएगा?

कर्षक—मृगया के व्याज से चलकर मेरे ही साथ बाहर-ही-बाहर चली चलिए। यदि आपके पिता युद्धार्थ सन्नद्ध होंगे, तो समझ लीजिए, दस ही दिनों में सिंध फिर आप ही का हो जायगा। मैं तो किसी का कुछ छीनना नहीं

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



चाहता । यदि चाहूँ, तो कोई राज्योपार्जन तक कर सकता हूँ ।

शाहज़ादी—ताक़त आपके पास क्या ह ?

कर्षक—इसकी चिंता देवीजी न करें । शक्ति की मुझमें न्यूनता न होकर इच्छा-मात्र की कमी है ।

शाहज़ादी—तब फिर चलिए, आप ही का साथ हो । ऐसा मालिक मिलेगा कहाँ ?

कर्षक—सब समझ-बूझ लीजिए, जिसमें पीछे पछताने का समय न आए ।

शाहज़ादी—सब समझे-बूझे हूँ । भला, सिर्फ़ २५ हमराहियों की ताक़त पर पीछा करनेवालों से बच कैसे सकिएगा ?

कर्षक—इसका प्रबंध पहले ही से हो चुका है । यहाँ से थोड़ी ही दूर पर समुचित संख्या में सेना लगी हुई है । कोई भय की बात नहीं है । गांधर्व विवाह की बात होगी ।

शाहज़ादी—बनते तो आप मिस्कीन हैं, मगर सिंध तक फ़तेह करना एक छोटा-सा काम समझते हैं । मेरी ख़ातिर भी पूरी करने की ताक़त दिखला रहे हैं । फ़ौज की बात भी हो रही है । सच कहिए, आप हैं कौन ? मामूली मुवाफ़ीदार या जागीरदार नहीं हो सकते । असली हालत बतलाने की मेहरबानी कीजिए ।

कर्षक—क्या साथ चलने में कोई संदेह तो शेष नहीं है ?

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



शाहज़ादी—नहीं। यह बात तो पहले ही कह चुकी हूँ।

कर्षक—तब आपसे कुछ छिपाना मेरे लिये अब योग्य नहीं है।

शाहज़ादी—यही तो बात है। पहले भी न छिपाना चाहिए था। बहरहाल अब असलियत फ़र्माने की मेहरबानी कीजिए।

कर्षक—मैं वास्तव में कौशांबी का सम्राट् उदयन हूँ। प्रायः सारा भारत जीत चुका हूँ। उज्जयिनी तथा मगध की राजकुमारियों से विवाह हो चुका है। जानना यह चाहता था कि साम्राज्य का विभव छोड़कर भी क्या कोई सुंदरी केवल गुणों के कारण मेरी दरिद्रावस्था में भी रीझ सकेगी या नहीं? वास्तविक विवाह करने की इच्छा न थी, केवल रीझ की संभवनीयता जानना चाहता था। आपने उसे प्रमाणित कर दिया। मुझे नितांत निर्धन समझकर भी राज्य-दर्प छोड़-कर मेरा मान किया। आपके गुणगण तथा भारी सौंदर्य के कारण अब मैं भी विवश हो गया हूँ। पूर्ण विवरण पहले न बतलाने के अपराध की क्षमा माँगता हूँ। छोड़ आपको मैं भी अब नहीं सकता।

शाहज़ादी—हैं आप भी अजीब व ग़रीब मिज़ाज के रईस। ज़रा-सी बात जानने के लिये आपने पराई नौकरी तक की। आफ़रीं है आपकी हिम्मत व जबहे को। तकलीफ़ काफी उठा सकते हैं, व नीज़ शाहंशाह होकर इतना पित्ता भी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



मार सकते हैं कि एक छोटे-से शाह की नौकरी बजाए ! शाबाश है इस जफ़ाकशी को !

उदयन—बड़ी ही कृपा हुई, देवीजी ! अपराध तो क्षमा किया जाता है न ?

शाहज़ादी—आपने मुझे धोखा दिया ही है, अगर मैं भी अपनी इश्क़बाज़ी छोड़कर नहीं कर दूँ, तो कैसा ?

उदयन—चाहता तो मैं यही था, क्योंकि मेरी इच्छा केवल संभवनीयता जानने की थी। फिर भी आपका प्रेम छोड़ना मेरे लिये अब असंभव है। क्या सचमुच अप्रसन्नता हो गई है ? कृपा न छोड़िए, देवीजी !

शाहज़ादी—नाख़ुशी की तो बात ही है, लेकिन रुझान से बेबस हूँ। इस अज़ीज़ सूरत को भुला नहीं सकती।

उदयन—बड़ी ही अनुकंपा हुई। यह भी बतलाने की कृपा हो जाय कि अपनी सखियों में से कितनी ले चलना चाहेंगी ?

शाहज़ादी—तर्रारा को मैं चाहती ही हूँ; दो-चार और चल सकती थीं, मगर इस वक़्त एक को भी न ले जाऊँगी। अगर अभी तर्रारा को ले चलना चाहूँ, तो उससे असली हाल बतलाना पड़ेगा, जो बात मैं अभी चाहती नहीं। वक़्त पर जब रज़ामंदी या फ़तेह, इन दोनो में से एक बात हो जायगी, तब दहेज के साथ बाँदियाँ वग़ैरा भी चलेंगी। अभी राज़ ज़ाहिर करके आपके तहफ़्फ़ुज़ पर शुबहा नहीं लाना चाहती।

उदयन—यही बात उचित है। सामान भी कुछ साथ ले

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



चलने की आवश्यकता नहीं है। पीछेसे योग्य प्रबंध हो जायगा।

शाहज़ादी—बहुत ही मुनासिब है।

इस प्रकार प्रेम-पूर्ण वार्तालाप करके तथा एकांत के कारण कई चुंबन लेकर सम्राट् शाहज़ादी से विदा हुए। उसे यह विषय पूर्णतया गुप्त रखने की सम्मति दे गए।

---

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# पंचदश परिच्छेद

## सिंध-विजय और समाप्ति

शाहज़ादी नर्गिस से प्रेम-पूर्ण संबंध स्थापित करके सम्राट् उदयन ने शीघ्रगामी साँड़िनी-सवारों द्वारा अपनी छिपी हुई सेना को सन्नद्ध रहने की आज्ञा महासेनापति रुमण्वान की सम्मति के अनुसार भेजी। किसी पर कुछ विदित न किया गया; केवल रुमण्वान ने सब कुछ जाना, तथा वह स्वयं प्रबंधार्थ सवारों के साथ चले भी गए, जिसमें मृगयावाले जंगल से सेना के स्थान तक पहुँचने के अर्थ मार्ग में सैनिकों की टुकड़ियों का भी उचित प्रबंध हो जाय। शाहज़ादी को समझा दिया गया कि मृगयार्थ चलने के संबंध में सिवा साधारणी सामग्री के कोई विशेष वस्त्राभूषणादि न लिए जायँ। सिंध के दो ही चार लोग साथ लिए गए, तथा कर्षक के सारे अनुयायी गए। ऐसा ही साधारणतया होता भी था। नियत समय पर जंगल में पहुँचकर कर्षक ने सिंधवाले लोगों को शाहज़ादी की आज्ञा से ऐसे स्थान पर लगाया, जहाँ से उन्हें शेष अनुयायियों का पता न लगे। भोज्य पदार्थादि साथ थे ही। सम्राट् के प्रायः एक शत सैनिक उसी वन के निकट लगे थे। उन्हीं से मिलकर शाहज़ादी तथा सारे अनुयायियों-सहित

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



आप युक्ति-पूर्वक अपनी सेना की ओर चल पड़े। उचित स्थानों पर ठहरते हुए तीन दिनों में यह टुकड़ी अपनी प्रधान सेना से जा मिली। बीच-बीच में छोटी-छोटी टुकड़ियाँ इन्हें मिलती जाती थीं। इधर जब सिंधी लोगों ने मृगया का कोई संभार वन में न देखा, न कोई अनुयायी वहाँ पाए, तब उन्हें संदेह हुआ। उन्होंने कुछ अन्य स्थानिक सहायक एकत्र करके सारा जंगल छान डाला, किंतु मृगयार्थी दल का कहीं पता न लगा। तब राजधानी में पहुँच उन लोगों ने महामंत्री की सेवा में जाकर सारी दुर्घटना का समाचार बतलाया। महामंत्री ने तुरंत शाह की सेवा में उपस्थित होकर मृगयार्थी दल के साथ शाहज़ादी के अंतर्धान होने का दुःखद, हृदय-विदारक समाचार सुनाया। सारी शाही में खलभली मच गई, और महलों में रोना-धोना भी चलने लगा। तो भी शाह ने तुरंत सैकड़ों लोग ढूँढ़-खोज में नियुक्त किए। दंडपाश-विभाग के भी बहुतेरे चतुर चर, भटादि नियुक्त हुए, और दस-पाँच दिनों में पता लग गया कि शाही की सीमा से प्रायः ५० कोस की दूरी पर कौशांबी की सेना पड़ी हुई थी। उसमें उज्जयिनी की भी कुछ सेना सम्मिलित थी। स्त्री-चरों द्वारा गुप्त भेद लिए गए, तो ज्ञात हो गया कि शाहज़ादी महोदया सम्राट् उदयन के दल में ही पूर्ण मान के साथ प्रस्तुत थीं। जो कुछ हुआ था, वह इन्हीं के इच्छानुसार था। शाही को जब इन बातों का समाचार मिला, तब मंत्रिमंडल के मुख्य

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



सभ्यों की एक गुप्त मंत्रणा-सभा एकत्र होकर स्वयं शाह से विचार-विनिमय होने लगा।

शाह—मेरे लायक़ वज़रा! यह बात तो बड़ी ही सुबकी व नीज़ बदनामी की सामने आई। शाहज़ादी की ख़ादिमाओं से दरियाफ़्त करने से मालूम हुआ है कि कर्षक पर उनकी मेहरबानी तो इधर ज़रूर बढ़ गई थी, मगर वह महलात में कभी जाता-आता न था। न कोई शुबहा-आमेज़ बात नज़र आती थी। उसका चाल-चलन भी आला दर्ज का मुदब्बिराना था। कभी किसी को शिम्मा-भर भी शको-शुबहा न हुआ, बल्कि उस दिनवाले मस्त हाथी के वार से उसने ख़ुद मुझी को बचाया। यह कौन जानता था कि मेरी लख़्ते-जिगर शाहज़ादी पर ही हाथ साफ़ करेगा? सबसे बुरी बात यह हुई कि वह भी राज़ी हो गई।

महामंत्री—बात तो यही थी, ख़ुदावंद नेमत! उस पर कभी किसी को शुबहा न हुआ। तनख़्वाह कभी माँगता ही न था। जो कुछ मिलता था, उसी को ख़ुशी से मंज़ूर कर लेता था, बल्कि अगर उसकी राय में ज़रूरत से कुछ ज़ायद मिले, तो वापस करने की भी कोशिश करता था। सख़ी भी दर्जे औवल का था। कौन जानता था कि इन नेकियों के साथ ऐसी जाँगुदाज़ बुराई भी निहाँ थी?

अफ़सर फ़ौज—लालच कमबख़्त क्या करता? ख़ुद शाहंशाह है। सब तरीक़ों से उम्दगी ज़ाहिर करके अपनी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



ख़ास मतलब-बरारी के अम्र पर हम लोगों की आँखों में कमबख़्त धूल झोंक गया। समझ में नहीं आता कि किया क्या जाय?

शाह—बदनामी अपनी हद से ज़ायद हुई। शाहज़ादी की ख़ादिमाएँ भी यही समझती हैं कि उस पर कोई जब्र नहीं हुआ, बल्कि वह ख़ुशी से उस नालायक़ के साथ गई है। जो होशियार जासूसिनें ख़ुफ़िया तरीक़े से उसकी फ़ौज में जाकर शाहज़ादी से मिलीं, उनका भी कहना है कि वह वहाँ ख़ुशी से रहती हैं, और उसकी काफ़ी से ज़ायद इज़्ज़त है। उस नाबकार की मलिका बनकर वहाँ रहती है।

महामंत्री—क्या कहा जाय? ख़ुदावंद! जब अपना ही दाम खोटा हो, तब परखनेवाले का क्या क़ुसूर समझा जाय? फिर भी मामला हर पहलू से शर्मनाक है, और क़ाबिल ग़ौर नज़र आता है। दुश्मनी का बर्ताव उससे लाज़िम है ही, मगर ताक़त का भी सवाल है।

सिपहसालार—है बात यह भी, लेकिन बेइज़्ज़ती हद से ज़ायद हुई है। कोई कारवाई न होने से बदनामी के साथ सुबकी भी कम न होगी।

शाह—यही तो बात है। अब तो कुछ भी हो, अपने को बरहना शमशेर होना ही पड़ेगा।

महामंत्री—ग़रीब-परवर! इतना तो भी क़ाबिल ग़ौर है कि शाहज़ादी ने किसी मामूली आदमी को तो चुना नहीं है; एक

शाहंशाह से शादी होने में कोई सुबकी नहीं है। अगर ग़ौर फ़र्माया जाय, तो ऐसी निस्बत मिली कहाँ जाती है ? सिर्फ़ बग़ैर शाही मंज़ूरी के ऐसा काम होना बेजा था। फिर भी जब हो ही गया, तब ज़्यादा जज़्बा न दिखलाकर अगर तरकीब से मेल कर लिया जाय, और पहले ही से अपनी रज़ामंदी की बात ज़ाहिर कर दी जाय, तो शायद कोई बदनामी भी न हो। बहरहाल, जब अपनी शाहज़ादी उसे चाहती है, तब उसे ख़ुश क्यों न रहने दिया जाय ?

शाह—वज़ीर आज़म ! आप क्या बात करते हैं ? अगर वह नाबकार मुझी से अर्ज़ मारूज़ करती या अपनी मा की ही इजाज़त हासिल कर लेती, तो क्या मैं इनकार कर देता ? जब उसने ख़ुद मेरी ज़रा भी परवा न की, तब मैं ही उसके लिये इज़्ज़त क्यों मिट्टी में मिलाऊँ ? अपने मिज़ाज से मजबूर हूँ। मुझसे यह तौहीन बर्दाश्त नहीं हो सकती। जानता हूँ कि रियासत कमज़ोर है, और उसी के साथ जान जाने का पूरा अंदेशा है, मगर मजबूर हूँ।

बहुत देर तक इसी प्रकार मंत्रणा होने के पीछे यही निश्चय हुआ कि युद्ध की तैयारी अति शीघ्र की जाय। थोड़े ही दिनों में कौशांबी का सांधिविग्रहिक राजधानी में उपस्थित हुआ, तथा प्राभृतक की प्रतिलिपि उसने सिंधी सांधिविग्रहिक को अर्पण की। यह समाचार पाकर शाह ने अपने उपर्युक्त मंत्रि-मंडल की गुप्त सभा फिर से एकत्र की। कौशांबी का कथन

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



यह था कि पारसीकों को भारतीय प्रांत सिंध पर अधिकार जमाने का कोई प्राकृतिक स्वत्व न था। अतएव सम्राट् का कर्तव्य था कि भारतीय प्रधान शासक होने के नाते सिंध को विदेशी अधिकार से मुक्त करते। फिर भी सिंधी शाहज़ादी से उनका आकस्मिक प्रेम हो गया। इस बात में भी स्वयं वह अग्रसर न हुए थे, वरन् रूप-गुण-शील-संपन्ना राजपुत्री ही उन पर सहज भाव से कृपालु हुई, जिसका पवित्र प्रेम वह ठुकरा न सके, वरन् वास्तविक बात ऐसी हुई कि शाहज़ादी साहबा की जितनी कृपा उन पर बढ़ी, उसका प्रतिफल उनके चित्त में भी उदित होता गया। अंत में उन दोनो का प्रेम परिपक्व हो गया, और शाहज़ादी ने उन्हें धन-हीन मानते हुए भी जब उनका पूर्ण मान किया, तब उन्होंने विवाह करके अपना तृतीय रानी के रूप में उन्हें ग्रहण किया। इस प्रेम-पूर्ण संबंध के कारण सम्राट् अब पारसीकों को सिंध से निकालने के विचार से उसी दशा में विरत होना चाहते हैं, जब [illegible] शाह भी इस संबंध को प्रेम-पूर्वक आशीर्वाद दे सकें। य[illegible] उन्हें ऐसा उचित दिखे, तो अपनी शाहज़ादी का फिर [illegible] यथोचित मान करके साम्राज्य से अटूट प्रेम-भाव स्थापित करें। यदि किसी कारण से शाह को यह उचित प्रस्ताव योग्य न जँचे, तो युद्धार्थ प्रस्तुत हों, अथवा जो उचित समझें, वह कोई अन्य विचार प्रकट करें।

जब यह भाव सिंधी दरबार में प्रकट हुआ, तब मलिका

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



ने तो पुत्री से प्रेम तथा राजनीतिक स्थिति के विचार से संधि के प्रस्ताव का स्वीकृत होना ही ठीक माना, किंतु शाह सिंध ने कन्या के अपहरण से अपना अपयश इतना भारी समझा कि इस बात को स्वीकार न करके युद्ध का ही मंत्र दृढ़ किया। महामंत्री तथा महासेनापति ने सिंधी शक्ति की न्यूनता के विचार से मलिका के ही भाव को ग्राह्य कहा, किंतु कुछ अन्य मंत्रियों की सहायता से भी शाह कन्या-हरणवाले अपने क्रोध को सँभाल न सका, और युद्ध-मंत्र ही निश्चित रहा। कौशांबी का प्राभृतक नियम-पूर्वक दरबार में लिया गया, तथा सिंधी खरीता कौशांबी के सांधिविग्रहिक को दिया गया। अनंतर एक महीने के भीतर दोनो ओर से प्रचंड सेनाएँ सन्नद्ध हुईं, और यथासमय घोर युद्ध हुआ, जिसमें पारसीकों का दल पूर्णतया पराजित हो गया। शाहज़ादी नर्गिस ने

पिता को बहुत समझाया कि सिंध में ही उचित आकार क[illegible] दल लेकर वे दोनो यहीं विराजें, किंतु उन्होंने यह प्रस्ताव स्वीकार न करके ईरान का रास्ता लिया। अनंतर सम्राट् [illegible] सिंध पर फिर से भारतीय अधिकार स्थापित किया, और इस प्रांत की आय से भी साम्राज्य की वृद्धि होने लगी।

शाहज़ादी नर्गिस यथासमय कौशांबी में पधारीं, और वासवदत्ता तथा पद्मावती से प्रेम-पूर्वक मिलकर अपने लिये नियोजित प्रासाद में रहने लगीं। समय पर वह भी पुत्रवती हुईं, और सम्राट् तीनो सम्राज्ञियों के साथ सुख-पूर्वक

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



साम्राज्य-सुख का भोग चिरकाल-पर्यंत करते रहे। तीनो सम्राज्ञियाँ एक दूसरी से बहुत प्रेम-पूर्वक मेल के साथ रहती रहीं। समय पर एक-एक करके तीनो अत्यंत सुखी जीवन विताकर स्वर्गवासिनी होती गईं, तथा नरवाहन को साम्राज्य-भार सौंपकर स्वयं सम्राट् ने वन-गमन किया, जहाँ पूर्ण प्रकारेण धार्मिक जीवन बिताकर समय पर स्वर्गारोहण किया।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

5549

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

A853